बच्चों की त्रैमासिक पत्रिका

बालप्रहरी

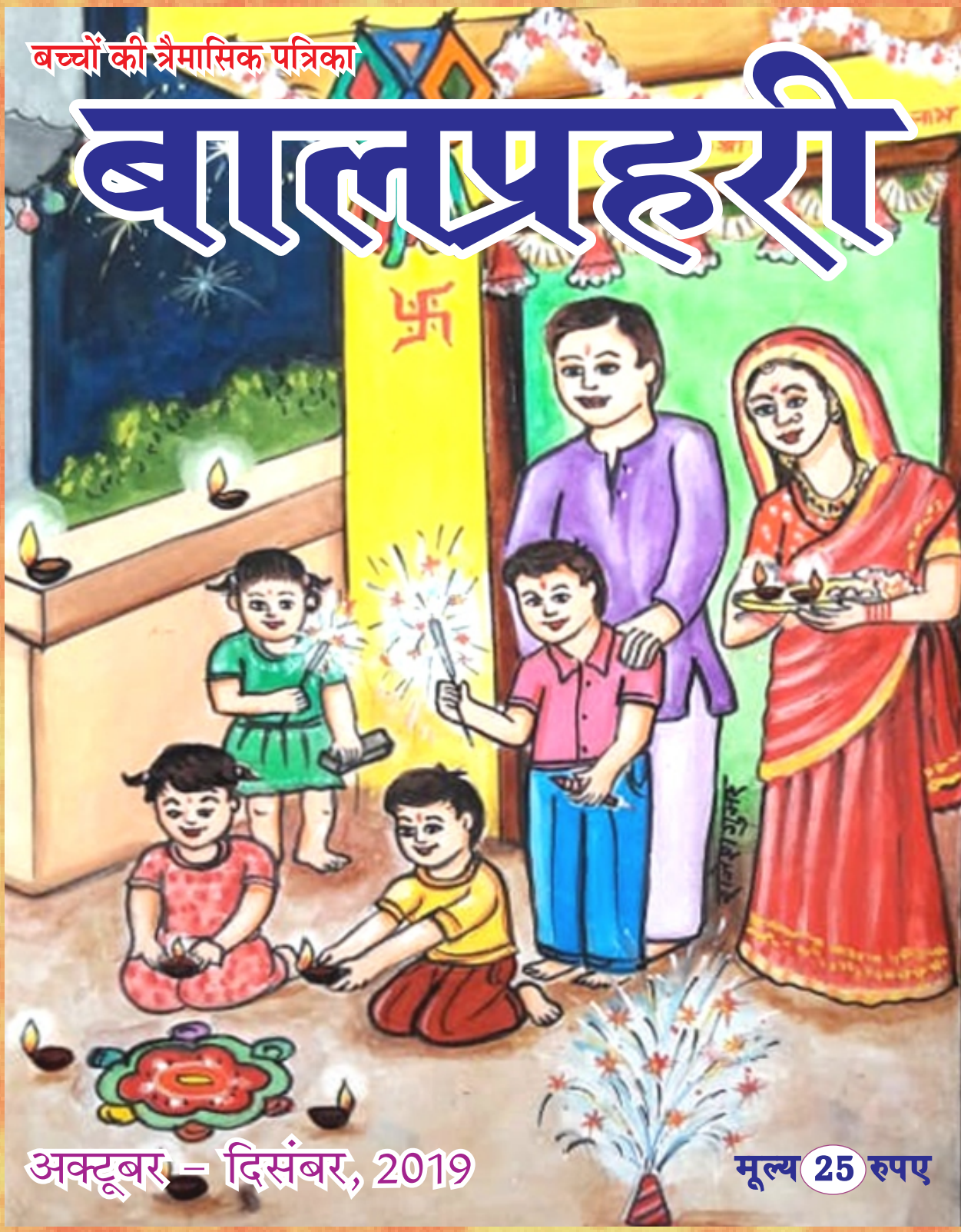

अक्टूबर – दिसंबर, 2019

मूल्य 25 रुपए

उत्कर्ष धपोला, कक्षा - 5
जिम कार्बेट इंटरनेशनल स्कूल बागेश्वर

अनुराग साह, कक्षा - 7
द्रोण पब्लिक स्कूल द्वाराहाट, अल्मोड़ा

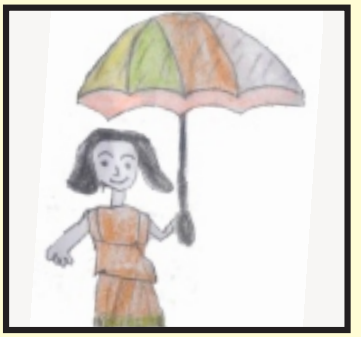

चिराग लमकोटी, कक्षा - 5
रा.प्रा.वि. जमराड़, चौखुटिया, अल्मोड़ा

आर्युष पी. योगेश, कक्षा-3
कोठारी इंटरनेशनल स्कूल, नोएडा

गीतांजलि, कक्षा - 8
रीना चिल्ड्रन एकैडमी, रानीखेत

नीमा, कक्षा - 8
कस्तूरबा गां.आ.बा.वि. तरपालीसैण, पौड़ी

आयुष्मान सिंह खनी, कक्षा-4
रा.प्रा.वि. नैनी चौगर्खा, अल्मोड़ा

रूचि, कक्षा - 6
रा.इ.का. धूमाकोट, पौड़ी

शीला चौहान, कक्षा - 8
कस्तूरबा गां.आ.बा.वि. तरपालीसैण, पौड़ी

लक्ष्मीराज, कक्षा - 3
आकांक्षा पब्लिक स्कूल टीकमगढ़ (म.प्र.)

हिमांशु गोस्वामी, कक्षा - 8
रा.उ.प्रा.वि. खर्ककार्की, चंपावत

शिवांश जोशी, कक्षा - 8
कुर्मांचल एकैडमी, अल्मोड़ा

बालप्रहरी बाल क्लब

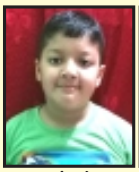
उत्कर्ष धपोला
बागेश्वर

अभिषेक धपोला
बागेश्वर

अमित भंडारी
सिलोगी

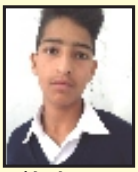
मोहित सिलस्वाल
पौड़ी

राजनारायण सिंह
मुनियाचौरा, भिकियासैण

ज्योति
दुर्ग, छत्तीसगढ़

अंजलि रावत
मुनस्यारी, पिथौरागढ़

भूमिका डाकुर
जलना, लमगड़ा

फाल्गुनी सक्टा
चंपावत

निकिता आर्या
भीमताल

देवेश कठायत
मुनस्यारी, पिथौरागढ़

चंद्रा आर्या
खिरखेत, रानीखेत

अनमोल
बाजपुर, ऊधमसिंह

रिसिक धपोला
बागेश्वर

प्रिया
बाजपुर, ऊधमसिंहनगर

भावना पंवार
नाचनी, पिथौरागढ़

दिनेश मेहरा
नाचनी, पिथौरागढ़

चंद्रशेखर
रामनगर, नैनीताल

जिया जोशी
देहरादून

रक्षित गड़कोटी
अल्मोड़ा

पूजा भट्ट
चमुवा, जागेश्वर

अंकित उप्रेती
खटीमा, ऊधमसिंहनगर

अनन्या नेगी
नागथात, देहरादून

शगुन फर्त्याल
अल्मोड़ा

कैलाश जोशी
खर्ककार्की, चंपावत

नदीम
बिझौली, हरिद्वार

मनजीत
खटीमा, ऊधमसिंहनगर

बालप्रहरी नए संरक्षक : डॉ. (मेजर) शक्तिराज

भारतीय सेना से सेवानिवृत्त डॉ. मेजर शक्तिराज जी की 'दादी ने पूछा लड्डू से' तथा 'बाल मन की किलकारी' बाल पुस्तकों सहित लगभग एक दर्जन पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। स्वास्थ्य विभाग हरियाणा से मलेरिया अधिकारी पद से सेवानिवृत्त इनकी पत्नी डॉ. शील कौशिक की भी 27 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। डॉ. शक्तिराज ने पशुपालन एवं डेयरी विभाग हरियाणा सरकार में उपनिदेशक के पद पर भी कार्य किया। आप टी-9, एनआरसीई (आई.सी.ए.आर,दिल्ली) में भी मैनेजर पद पर रहे। इनके साहित्य पर दो छात्राओं ने एम.फिल की तथा एक शोधार्थी को पीएचडी प्राप्त हो चुकी है। आकाशवाणी व दूरदर्शन से आपकी रचनाओं का प्रसारण व प्रकाशन हुआ है। राष्ट्रीय स्तर पर कई संस्थाओं से सम्मानित हो चुके हैं। बालप्रहरी एवं बालसाहित्य संस्थान अल्मोड़ा द्वारा प्रतिवर्ष जून माह में आयोजित राष्ट्रीय बालसाहित्य संगोष्ठियों में आपकी महत्वपूर्ण भूमिका रहती हैं। बालप्रहरी के संरक्षक सदस्य के रूप में बालप्रहरी को आपसे विशेष सहयोग एवं मार्गदर्शन की अपेक्षा है। आशा है संरक्षक सदस्य बतौर बालप्रहरी को आपका और अधिक सहयोग भविष्य में मिलते रहेगा।

सपंर्क : मेजर हाऊस, हुड्डा, सैक्टर 20, कोठी 17, सिरसा (हरियाणा)
मोबाइल- 9416847107

बालप्रहरी नए संरक्षक : श्री दयानन्द आर्य

सरकारी कार्य को केवल सरकारी जिम्मेदारी न समझकर एक मिशन के तौर पर करने वाले श्री दयानंद आर्य जी भारत सरकार से संबद्ध नेहरू युवा केंद्र संगठन से निदेशक पद से सेवानिवृत्त हुए हैं। अल्मोड़ा में नेहरू युवा केंद्र अल्मोड़ा के जिला समन्वयक रहते हुए उन्होंने जिन युवाओं को केंद्र से जोड़ा, उनमें से अधिकतर आज समाज को एक नई दिशा दे रहे हैं। ग्रामीण अंचल के गांवों में रात्रि प्रवास के दौरान युवाओं को गांव के विकास की मुख्य धारा से जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य आपके कार्यकाल में हुआ है। आपके कार्यकाल में अल्मोड़ा में नेहरू युवा केंद्र की अपनी अलग पहचान थी। वर्तमान में सरस्वती सांस्कृतिक एवं सामाजिक समिति घोड़ाखाल, गोविंदबल्लभ पंत इं.कालेज भवाली, कुमाउनी पत्रिका पहरू तथा बालसाहित्य संस्थान से जुड़कर आप सामाजिक एवं साहित्यिक गतिविधियों के माध्यम से समाज को एक नई दिशा दे रहे हैं। सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक गतिविधियों में आपकी सक्रिय भागीदारी को देखते हुए आपको कई संस्थाओं ने सम्मानित किया है। बालप्रहरी के संरक्षक सदस्य के रूप में आपका आशीर्वाद बालप्रहरी को मिला है। आपके संरक्षण में बालप्रहरी को एक नई दिशा मिलेगी, ऐसा हमारा मानना है।

सपंर्क: यशोदा भवन, नया बाजार, भवाली नैनीताल
मोबाइल -9997238415

साहिल बड़थ्वाल, कक्षा-6
रा.उ.प्रा.वि. खंदूखाल, पौड़ी

नैना आर्या, कक्षा-7
रा.क.जू.हा. जैनोली, रानीखेत

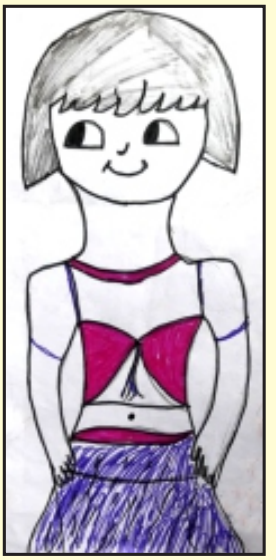

अंकिता रावत, कक्षा-8
कस्तूरबा गांधी आ. बा. वि. तरपालीसैण, पौड़ी

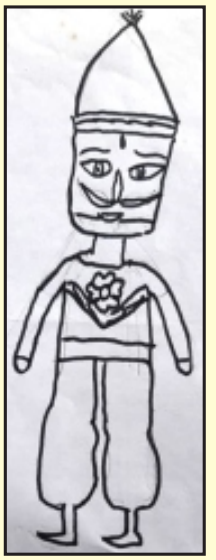

सिमरन जोशी, कक्षा-5
विवेकानंद मा. स्कूल देघाट

लता नेगी, कक्षा-5
रा.प्रा.विद्यालय जमराड़, चौखुटिया

कैलाश जोशी, कक्षा-8
रा.उ.प्रा. विद्यालय खर्ककार्की, चंपावत

मीनाक्षी बिष्ट, कक्षा-8
रीना चिल्ड्रन एकैडमी, रानीखेत

शगुन फर्त्याल, कक्षा-1, चंपानौला, अल्मोड़ा

गीता जोशी, कक्षा-5
रा.प्रा.वि. बमौरी तरुला

सेवा में,

प्रेषक : संपादक बालप्रहरी, अल्मोड़ा, उत्तराखंड। मो. 9412162950

RNI No. UTTHIN/2004/18604

मुद्रक : प्रकाश पब्लिकेशन, हल्द्वानी। मो. : 9412092336, 9761464264

RNII UTTHIN/2004/18604

वर्ष-15 अक्टूबर- दिसंबर, 2019 अंक-04

सरक्षक :
डॉ. सरस्वती बाली
डॉ. भैरूंलाल गर्ग
श्री नवीन पाठक
श्री विपिनचंद्र जोशी
डॉ. जे.एस. मेहता
श्रीमती मंजू पांडे 'उदिता'
श्री सुरेन्द्रसिंह नेगी
श्री मोहनलाल टम्टा
डॉ. सुनीता रतूड़ी
डॉ. आर.सी.रस्तोगी
डॉ. बी.पी. साह
श्री राजकुमार जैन 'राजन'
श्री के.पी.एस.अधिकारी
डॉ. सलमा जमाल
श्रीमती श्यामा माहेश्वरी
डॉ. दीपा कांडपाल
श्री रतनसिंह किरमोलिया
श्री नीरज पंत
श्री प्रकाश जोशी
सुश्री विनीता जोशी
श्रीमती विमला जोशी 'विभा'
डॉ. कामना सिंह
श्री महेन्द्र सिंह राणा
डॉ. कामना सिंह
सुश्री प्रभा किरण जैन
सुश्री कमला मेनन
डॉ. दीक्षा बिष्ट
डॉ(मेजर) शक्ति राज
श्री दयानंद आर्य
श्रीमती पुष्पा पाल
श्री रविकांत खंडेलवाल
श्री संजय प्रजापति
श्री श्याम पलट पांडेय

संपादक : उदय किरौला
संपादकीय सहयोग: प्रमोद तिवारी
संतोष किरौला
मुख पृष्ठ : राजेश गुजर
कला पक्ष : मनोज विनवा
इंटरनेट संस्करण: वेद प्रकाश

सदस्यता शुल्क

संरक्षक सदस्यता	:	5,000 रु.
अजीवन सदस्यता	:	2,000 रु.
3 वर्ष का शुल्क	:	300 रु.
एक प्रति	:	25 रु.

बालप्रहरी खाता संख्या : 0962000101357002
आई.एफ.सी कोड : पी.यू.एन.बी. 0096200
बैंक नाम : पंजाब नेशनल बैंक, अल्मोड़ा

संपर्क : संपादक बालप्रहरी : दरबारीनगर, अल्मोड़ा, उत्तराखंड-263601
मो.9412162950, 9557619107

E-mail. : balprahri@gmail.com
Web.: www.balprahri.com
Face book- udai kiroula balprahri
Whats App - 09412162950

बच्चों के नाम पाती 02
आपके पत्र 03
बच्चों की कलम से 05

कहानी :

बादलों की कलाकारी	गुडविन मसीह	23
आज का एकलव्य	रघुराजसिंह कर्मयोगी	27
रूनझुन और टिन्नू	डॉ. शील कौशिक	31
गोलगप्पे से गोलमाल	डॉ. अभिताभ शंकर राय चौधरी	34
जीवन सुधर गया	डॉ. सुधा शर्मा	37
विदेशी टीफिन बॉक्स	खुशालसिंह खनी	41
युक्ति	ओम उपाध्याय	43
टिन्नी मछली	आशा पांडेय	48

कविता :

कुमाउनी/गढ़वाली कविता	विनीता जोशी/डॉ. उमेशचंद्र चमोला	22
पेड़/भगवान/पापा	दामोदर जोशी 'देवांश', महेंद्र जैन/अनारसिंह वर्मा	26
दीपावली/दीप पर्व	जगदीश गुप्त/डॉ. शेषपालसिंह 'शेष'	33
दीवाली फिर आई/ज्योति पर्व	डॉ. देशबंधु शाहजहांपुरी! शंकरसिंह सेन 'निलय'	33
दीवाली	हेमंत कुमार चावड़ा	33
देश हमारा/धूप	जयप्रकाश सूर्यवंशी 'किरण', राजेंद्र निशेश	35
कल्पना/मेरी आशा/बरगद	डॉ. नरेंद्रनाथ लाहा/डॉ. रामदुलार सिंह 'पराया'	35
मूंगफली	डॉ. रामनिवास 'मानव'	35
धूप/बापू जी	कृष्णा कुमारी/ डॉ. वेद मित्र शुक्ल	36
गांधी जी के तीन बंदर	पदमा पंचोली	36
दादा जी/पेड़ की कथा/गांव	प्रभुदयाल श्रीवास्तव/इंद्रा तिवारी 'इंदु'/अश्वनी पाठक	39
अलबम नया/जाड़ा	डॉ. जयजय राम 'आनंद'/शिवचरण सेन 'शिवा'	45
मोबाइल/मेरी लाडली/मि.जाड़ा	डॉ. राकेश चक्र/डॉ. मंजू/ सूर्य कुमार पांडेय 'सूर्य'	45

जानकारी

बालसाहित्य की थाती	:	भालचंद्र सेठिया	04
उत्तराखंड का राज्य वृक्ष	:	प्रकाश जोशी	04
ऐसा क्यों होता है?		घमंडीलाल अग्रवाल	15
शास्त्री जी की ईमानदारी	:	विमला जोशी 'विभा'	24
झांसी की रानी लक्ष्मी बाई	:	आभा काला	26
आओ खेलें खेल	:	गरिमा राना	30
गांधी जी के तीन गुरु	:	परमेश्वरी शर्मा	36
आसमान नीला क्यों होता है?		कृपालसिंह शीला	39

प्रतियोगिताएं

निबंध प्रतियोगिता - 33	16
कविता लिखो प्रतियोगिता - 62	17
सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता - 62	19
कहानी लिखो प्रतियोगिता - 62	20

अन्य

अंक पहेली	16
सुडोकू	17
चुटकुले	18
क्या आप जानते हैं?	19
पहेलियां/अनमोल वचन	21

अन्य

वर्ग पहेली	21
ढूंढो तो जानें	32
बालप्रहरी समाचार	46
पुस्तक प्राप्ति	48

बालसाहित्य संस्थान अल्मोड़ा की ओर से प्रकाशक/मुद्रक एवं संपादक उदय किरौला द्वारा प्रकाश पब्लिकेशन, हल्द्वानी, उत्तराखंड से मुद्रित तथा दरबारी नगर, पूर्वी पोखरखाली, अल्मोड़ा (उत्तराखंड) से प्रकाशित। संपादक - उदय किरौला

बच्चों के नाम पाती

दोस्तो,

एक गांव की बात है। डॉ. सिराज के गांव के सरकारी अस्पताल में आने के बाद अस्पताल में काफी मरीज आने लगे। मरीजों के साथ उनका मिलनसार व्यवहार रहता था। देखा-देखी दूर-दूर से लोग अपने इलाज के लिए गांव के सरकारी अस्पताल में आने लगे।

डॉ. सिराज सुबह समय पर अस्पताल पहुंच जाते। दो बजे अस्पताल बंद होने के बाद भी मरीजों को देखते। उनका आवास अस्पताल परिसर में ही था। इस कारण वे अवकाश के दिन भी सुबह रोज दो घंटे अस्पताल में मरीज देखते।

वे बच्चों से बहुत प्यार करते थे। प्रत्येक शनिवार को वे नजदीक के किसी न किसी स्कूल में जाते। बच्चों से बात करते। स्कूलों के अध्यापक भी उन्हें अपने स्कूल में बुलाते।

एक दिन दो बजे अस्पताल बंद होने के बाद डॉ. सिराज 9 किलोमीटर दूर राजकीय प्राथमिक विद्यालय पनेरगांव पहुंचे। स्कूल के प्रधानाध्यापक किशोर तिवारी जी ने उनका स्वागत किया। बच्चों ने स्वागत गीत के माध्यम से डॉ. सिराज का स्वागत किया।

डॉ. सिराज ने बच्चों को साफ-सफाई के बारे में बताया। उन्होंने बच्चों से जाड़े में ठंड से बचने के लिए कहा। उन्होंने कहा, '' यदि हम ठंड से बचाव नहीं करेंगे तो जाड़े में हमारे गाल फट जाएंगे। हाथ फट जाएंगे। जाड़े में पांव की एड़िया फट जाती हैं। इसलिए ठंड से बचाव बहुत जरूरी है।''

कक्षा 4 का मॉनीटर दीपू खड़ा हुआ। उसने कहा, ''सर! विनीत के पांव की एड़िया तो हमेशा फटती हैं। हमारे स्कूल के कई बच्चों के गाल फट जाते हैं। ''

डॉ. सिराज ने दीपू को बैठने के लिए कहा। उन्होंने कहा, ''जाड़े के दिनों में शुष्क व ठंडी हवा चलती है। इस कारण हमारे गाल फटने लग जाते हैं। गाल सूख जाते हैं। इस कारण गालों में दर्द होता है। कभी-कभी तो खून भी आने लगता है। शरीर में खून की कमी के कारण भी ऐसा हो सकता है।''

'' सर! हमारे स्कूल के कई बच्चों के गालों से खून आ रहा है। सर इन्हें कोई दवा तो आप जरूर बता दीजिएगा।'' कक्षा 5 की बबली ने खड़े होकर कहा।

डॉ. सिराज ने बबली की बात का जबाब देते हुए कहा, '' यदि हम ठंड से बचाव करेंगे। तो दवा की जरूरत ही नहीं होगी।''

कक्षा 5 में पढ़ने वाले सुधीर ने कहा, '' सर जी! मेरे पांव की एड़िया हमेशा फटी रहती हैं। इसका क्या कारण है?''

''जाड़ों में एड़ियों का फटना तथा पैरों की चमड़ी का सख्त हो जाना आम बात है। शरीर में कैल्शियम के कम होने या चिकनाई की कमी के कारण एड़िया फटती हैं। हमारे शरीर में एड़ी व तलवों की त्वचा मोटी होती है। इस कारण शरीर के अंदर बनने वाला कुदरती तेल पैर के तलवों तक नहीं पहुंच पाता है। शरीर को पौष्टिक तत्व व चिकनाई न मिलने के कारण पांव व एड़िया खुरदरी हो जाती हैं। कभी-कभी तो एड़ियों में चीरे तक पड़ जाते हैं।'' सुधीर के प्रश्न को जबाब देते हुए डॉ. सिराज ने कहा।

प्रधानाध्यापक किशोर तिवारी ने कहा, ''सर! जाड़े में तो अधिकतर बच्चों के हाथ पांव फट जाते हैं। एड़ियों में चीरे पड़ जाते हैं। खून तक आने लगता है। बचाव के लिए हम क्या कर सकते हैं। इस बात की जानकारी बच्चों को देंगे तो ये अपना बचाव कर सकते हैं।''

डॉ. सिराज ने कहा, ''बच्चो! जैसा मैंने पहले बताया। जाड़े में मौसम के शुष्क होने के कारण हमारे गाल, हाथ-पैर फट जाते हैं। इसके लिए हमें ठंड से बचाव करना चाहिए। धूल के कारण भी हमारे हाथ,पांव फट जाते हैं। इसलिए जरूरी है कि हमें अपने हाथ,पांव व चेहरे को साबुन से धोना चाहिए। तौलिए से पोंछकर सरसों का तेल हाथ, पांव व एड़ियों में लगाना चाहिए। जाड़ों में जूता पहनने से भी पांव फटने की समस्या कम होगी।''

थोड़ा रूकने के बाद उन्होंने कहा, ''जाड़े में जिसके पास जो भी है, गरम कपड़े यानी बनियान आदि जरूर पहनना चाहिए। हाथ-पांव व एड़ियों के बचाव के लिए हमारे घर में कई पारंपरिक तरीके अपनाए जाते हैं। जैसे कि हाथ-पांव में मलाई लगाना आदि। तुम सब लोग अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखोगे तो मुझे बहुत अच्छा लगेगा।'' कहकर डॉ. सिराज जाने लगे तो सारे बच्चे 'थैक्यूं सर, आप दोबारा भी जरूर आइएगा।'' कहते हुए खड़े उठ गए। स्कूल की घंटी बजी तो सारे बच्चे अपने-अपने घरों को चले गए। डॉ. सिराज भी बच्चों से बात करके बहुत खुश थे।

कहानी तुम्हें कैसी लगी, जरूर लिखना। तुम्हारे पत्र की प्रतीक्षा करूंगा।

- तुम्हारा दोस्त
उदय किरौला

निवेदन

बालप्रहरी के नन्हे दोस्तों से निवेदन है कि अपने पत्र, कविता, ड्राइंग, फोटो आदि पर अपना नाम, पता, फोन अवश्य लिखें। कई बार रचना अच्छी होती है। उस पर नाम और कक्षा तो लिखी होती है। स्कूल का नाम/पता नहीं होता है। पूरे पते के साथ पोस्ट आफिस और पिन कोड भी लिखेंगे तो आपको पत्रिका आसानी से मिल जाएगी।

कई दोस्त दूसरी किताबों व पत्रिकाओं से कविता या ड्राइंग उतार कर भेजते हैं। नकल करके नहीं भेजना है। इसलिए रचना में यह भी लिख दें कि ये मेरी मौलिक रचना है। कुछ बच्चे और बड़े लोग एक पृष्ठ पर अधिक रचना देते हैं। या पता एक ही पृष्ठ पर लिखते हैं। हर रचना पर पता लिखिएगा।

बालप्रहरी का नया अंक ठीक रक्षा बंधन के एक दिन पहले मिला। इस बार रक्षा बंधन और पंद्रह अगस्त एक ही दिन था। इस मायने में बालप्रहरी का ये अंक बहुत अच्छा लगा। मुखपृष्ठ बहुत ही अच्छा है। बच्चों के नाम पाती में जो कहानी थी। वह कहानी मुझे अच्छी लगी। बिजली के करेंट के बारे में जानकारी मिली। बालप्रहरी में आप बच्चों की ड्राइंग, उनकी कहानी, यात्रा वृतांत व कविताएं छापते हैं। इससे बच्चे या तो खुश होते ही हैं। दूसरे बच्चों को भी लिखने की प्रेरणा मिलती है। इस पत्रिका में मुझे पायल की उड़ान कहानी बहुत अच्छी लगी। अन्य कहानियां भी अच्छी हैं। आपसे निवेदन है कि कृपया बालप्रहरी के अंदर के पृष्ठों को भी रंगीन कीजिएगा। जरूरी हो तो हम इसके लिए कुछ पैसा अपनी ओर से भेज सकते हैं। आप जरूर प्रयास कीजिएगा। मैं अपनी कहानी लिखकर भिजवा रही हूं। कृपया जरूर छापिएगा। मेरा पत्र भी जरूर छापना।

– नियाशा भारती, कक्षा 10
बा.भा.वि.नि.मुरादाबाद,उ.प्र.

●

बालप्रहरी का नया अंक आज ही प्राप्त हुआ। मुझे बालप्रहरी में बच्चों की ड्राइंग सबसे अच्छी लगती हैं। मेरी ड्राइंग तो अच्छी नहीं है। मैं अपनी फोटो तथा सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का हल भेज रही हूं। कृपया विचार कीजिएगा।

– मनुमा राणा, कक्षा 10
गड़ूगाड़, उत्तरकाशी

●

बालप्रहरी पत्रिका का जून, 2019 अंक मिला। बच्चों के नाम पाती में आपने पत्र लिखने को कहा है। मेरा पत्र भी जरूर छापिएगा। बालप्रहरी में मुझे कहानियां सबसे अधिक अच्छी लगती हैं। कविताएं भी अच्छी लगती हैं। सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता तथा अन्य पहेलियां आदि भी मुझे अच्छी लगती हैं।

– अभिषेक पांडेय, कक्षा 8
सु.चं. बो. एकैडमी, मदनपुर, कोलकाता

आपके पत्र

बालप्रहरी का जुलाई-सितंबर, 2019 अंक मिला। पत्रिका का यह अंक मुझे बेहद पसंद आया। मुझे एक ही शिकायत है कि बालप्रहरी में जो चित्र आप देते हैं। वे अधिक साफ नहीं छपते हैं। कोई-कोई चित्र तो बिल्कुल भी समझ में नहीं आते हैं। कृपया अच्छे चित्र दें। 'बच्चों के नाम पाती' कहानी में आपने करेंट के बारे में बहुत अच्छी जानकारी दी। इसके लिए हम आपके आभारी हैं।

– अंजली साहू, कक्षा 12
मानस एकैडमी रायगढ़, छत्तीसगढ़

●

बालप्रहरी पत्रिका आज 27 अगस्त, 2019 को मिली। इस अंक में बच्चों की बहुत सी कविताएं छपी हैं। मैंने अपने स्कूल के बच्चों को पत्रिका दिखाई है। अब हमारे स्कूल के सारे बच्चे भी अपनी कविता व ड्राइंग भेजेंगे। मुझे पत्रिका में आपका पत्र बहुत अच्छा लगता है। सबसे पहले मैं 'बच्चों के नाम पाती' पढ़ती हूं। इस अंक में सारी कहानियां अच्छी हैं। सारे बच्चों को जिनकी रचना छपी है, उन्हें बधाई।

– चंद्रकला, कक्षा 9
आदर्श विद्या निकेतन गंगटोक, सिक्किम

संस्कृति

पहले जमाने में बाल विवाह होता था। अब 18 वर्ष से नीचे की लड़कियों की शादी नहीं कराई जाती। अब की संस्कृति में काफी बदलाव आ गया है। अब बाल विवाह कराना भी दंडनीय हो गया है।

गांव की बारातों में भी अब ढोल नगाड़े के बजाय बैंड का प्रचलन हो गया है। इधर गांवों में विवाह आदि अवसरों पर डी. जे. बजने लगा है। जिसके घर में शादी होती है। वह डी. जे. भी लगवाता है। एक किस्म से डी. जे. आज जरूरी सा हो गया है। समय की मांग के अनुसार डी. जे. लगे अच्छी बात है। परंतु इसका उपयोग कम आवाज में किया जाना चाहिए। यदि जागरूक लोग अपने घर में कम आवाज में डी. जे. चलाएंगे तो आम जनता भी ध्वनि प्रदूषण कम करने की दिशा में सोचेगी। डी. जे. से सबका मनोरंजन होता है। पर कुछ लोग डी. जे. में बहुत ही भद्दे-भद्दे गाने लगाते हैं, जो कि सही नहीं हैं।

– पायल परिहार, कक्षा 10
रा.इ.का. चौमूधार, अल्मोड़ा

वन और पशु पक्षी

हम लोग गांव या शहर में रहते हैं। जानवर जंगलों में रहते हैं। कुछ जानवर पालतू होते हैं। जो कि गांव या शहरों में रहते हैं। इन्हें पालतू जानवर कहा जाता है। जैसे गाय, बैल, भेंस, कुत्ता, बिल्ली आदि। सड़क बनाने या मकान बनाने के लिए हम पेड़ों को काट दे रहे हैं। इस कारण जंगल समाप्त होते जा रहे हैं। जंगल समाप्त होने के कारण जंगल के जानवर बाघ,भालू और बंदर आदि गांव की ओर आ रहे हैं। बंदरों से सारे लोग परेशान हैं। इसके लिए आदमी ही जिम्मेदार है। जंगल कटने से उनके घर उजड़ गए हैं। उनके खाने के लिए अब फल हैं ही नहीं। इस कारण वे गांव की ओर आ रहे हैं। हम सबको पेड़ों का कटान नहीं करना चाहिए। यदि जरूरी है तो हमें पेड़ भी लगाने चाहिए। पेड़ लगाने के साथ ही पेड़ों की सुरक्षा भी की जानी चाहिए।

– मुस्कान रावत, एम. ई. मिल गर्ल्स जूनियर हाईस्कूल गडोली, पौड़ी

बालसाहित्य की थाती :

बालसाहित्यकार : भाल चंद सेठिया

भालचंद सेठिया का जन्म 18 मार्च, 1937 को कानपुर (उ.प्र.) में हुआ। झूला झूले गुड़िया रानी, बालक है श्री कृष्ण सहित उनकी लगभग एक दर्जन पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। बालप्रहरी, ज्ञान विज्ञान बुलेटिन सहित देश की प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में उनकी बालसाहित्य की रचनाएं प्रकाशित हुई हैं। बालसाहित्य संगोष्ठियों में भी आपकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। 29 दिसंबर,2018 को उनका निधन हो गया। बालसाहित्य के पुरोधा को शत-शत नमन। यहां उनकी कुछ रचनाएं दी जा रही हैं। -संपादक

नैतिक मूल्य

पापा कहते पियो न सिगरेट,
फिर वे सिगरेट पीते क्यों?
मम्मी कहती उठो सवेरे,
स्वयं देर तक सोती क्यों?
समय कभी बर्बाद न करना,
टीचर मेरी कहती है।
काम छोड़कर गप्प हांकती,
दिन भर मेरी टीचर क्यों?
खूब पढ़ो दिन भर खेलो,
भैया मेरे कहते हैं।
क्लास छोड़कर क्रिकेट खेलते,
तब फिर मेरे भैया क्यों?
फैशन करना बुरी बात है,
दीदी मेरी कहती है।
घंटों-घंटों सुबह शाम फिर,
दीदी सजती रहती क्यों?

पेड़

बच्चों से कह रहे पेड़,
देखो मेरे फल फूल।
पर उपकार पुण्य है भारी,
इसे न जाना भूल।
ऊंचे-ऊंचे उठ-उठ कर
हम छूते हैं आकाश।
तुम भी ऊंचे काम करो,
फिर हो जाओ शाबाश।
ऊंच-नीच निर्धन अमीर को,
छाया देते शीतल।
भेद भाव मत अपनाओ तुम,
मन को रखो निर्मल।
वातावरण सुहाना हमसे,
होता दूर प्रदूषण।
सत्कार्यों से बन जाओ तुम,
जनमन के आभूषण।

हमें बताओ

मम्मी पापा हमें बताओ,
कहां जाएं हम खेलने।
घर में बंद बने रहते हैं,
जैसे हों हम जेल में।
विद्यालय के क्रीड़ास्थल तो,
बने आज हैं मार्किट।
पार्क सभी मंदिर चट्टों के,
बिल्कुल निश्चित टार्गेट।
कूड़ाघर वे बने हुए हैं,
अवारा पशु घूमते।
सूंअर लोटते, गाएं चरती,
सांड वहां पर झूमते।
गलियों में खेलें यदि हम तो,
खतरे पड़ते झेलने।
मम्मी पापा हमें बताओ,
कहां जाएं हम खेलने।

संकलन : भारत भूषण तिवारी, कानपुर, उ.प्र.

उत्तराखंड का वृक्ष : भीमल

भीमल उत्तराखंड का एक प्रमुख वृक्ष है। इसका वैज्ञानिक नाम ग्रेविया अपोजीसीपोलिया है। गढ़वाल मंडल में इसे भ्यूल तथा कुमाऊं मंडल में इसे भेकू कहा जाता है। यह 500 से 1500 मीटर ऊंचाई वाले पहाड़ों में उगता है। इसकी ऊंचाई लगभग 15 मीटर तक होती है। इसका फूल हल्का पीला और सफेद होता है। एक फूल पर चार बीज आते हैं। कच्चे फल हरे होते हैं, जबकि पकने पर काले होते हैं। पके फल काफी मीठे होते हैं। गांव में बच्चे इसके फल खाते हैं तो उनके ओंठ तथा जीभ ऐसी लाल हो जाती है जैसे पान खाया हो। बंदर, भालू, चिड़िया व अन्य जीव-जंतुओं के लिए भी यह भोजन होता है। मधुमक्खियां इसके फूलों का रस पीती हैं। इसकी जड़ें भूमि कटान को रोकती हैं। जहां इसका पेड़ होता है, वहां भूमि का कटान कम होता है। इसकी लकड़ी जहां ईंधन के काम आती हैं। वहीं रेशा निकलने के बाद इसकी टहनियां चिराग का काम करती हैं। प्राचीन समय में रात को उजाला करने में इसकी टहनियों की महत्वपूर्ण भूमिका होती थी।

इसकी पत्तियों को जानवरों के चारे के लिए प्रयोग किया जाता है। माना जाता है कि इसकी पत्तियां खाने से गाय व भेंस का दूध बढ़ जाता है। इसकी टहनी साल भर में लगभग एक मीटर से भी अधिक लंबी हो जाती है। इन टहनियों को काटकर पत्तियां चारे के लिए प्रयोग में ली जाती हैं। बांकी टहनी को सूखाकर जमा कर लिया जाता है। जब बहुत सी टहनियां (लकड़ी) जमा हो जाती हैं तो इन टहनियों को नदी में छोटा सा खाल (तालाब) बनाकर बहुत दिनों तक उसमें डूबो दिया जाता है। इससे इन लकड़ियों के रेशे भीग जाते हैं । इन रेशों को निकालकर साफ से धो लिया जाता है। बाद में इन रेशों से रस्सी, चटाई व बैग आदि कई आकर्षक वस्तुएं बनाई जाती हैं। प्राचीन समय में कच्चे रेशों को कूटकर शैंपू की तरह भी इस्तेमाल किया जाता था।

● प्रकाश जोशी, तहसील परिसर, द्वाराहाट, अल्मोड़ा

बच्चों की कलम से :

स्वच्छता

स्वच्छ भारत देश हमारा,
आगे इसे बढ़ाएंगे।
मिलजुल कर सारे बच्चे,
स्वच्छता अभियान चलाएंगे।
कूड़ा कूड़ेदान में डालो,
सबको ये बतलाएंगे।
साफ सफाई सभी करें,
सबको ही बतलाएंगे।

- स्वेता, कक्षा 7
राजकीय कन्या जू.हा. कौसानी

तितली

रंग बिरंगे पंख फैलाए,
फूलों पर मंडराती तितली।
हम भी फूल लगाएंगे तो,
हमारे घर भी आए तितली।
फूलों पर जब बैठे ये,
फूल सी लगती है तितली।
पकड़ने यदि जाएं अगर,
दूर उड़ जाती है तितली।

- खुशी आर्या, कक्षा 6
रामगंगा वैली स्कूल मासी

मेरा बस्ता

मेरा बस्ता प्यारा बस्ता,
मुझको तो ये भाता है।
किताब की करता है रक्षा,
जब बारिश का पानी आता है।

- बीना खत्री, कक्षा 3
रा.प्रा.वि.नैनी, जागेश्वर

विवाह समारोह

समय के साथ हमारे रीति-रिवाज भी बदलते जा रहे हैं। नई अच्छी रीतियां चलें अच्छी बात है। परंतु अपनी पुरानी परंपराओं को भी नहीं भूलना चाहिए। हमारे यहां शादी-विवाह में मांगलिक गीत गाए जाते थे। लोग बताते हैं कि बारात में खाना खाते समय बारातियों के नाम लेकर गीत गाए जाते थे। महिला संगीत में महिलाओं को अपना गीत व नृत्य प्रस्तुत करने तथा अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिलता था।

इधर कुछ समय से गांवों में डी जे संस्कृति का चलन हो गया है। पहाड़ के गांवों में सड़क से 7-8 किलोमीटर दूर मजदूर लगाकर डी जे गांव तक पहुंच रहा है। यहां तक तो ठीक है। लेकिन डी जे में जो गाने बजाए जा रहे हैं। वे कहीं न कहीं हमारी संस्कृति व समाज पर प्रश्न चिह्न लगाते हैं। इतने जोर से डी जे बजाया जाता है जिससे गांव व मुहल्ले में बीमारों की जान में आफत आ जाती है। अधिकतर विवाह समारोह बच्चों की परीक्षा के दिनों में होते हैं। परीक्षा के दिनों में डी जे के शोर से कुछ सोचा ही नहीं जाता। बच्चे किताब जरूर खोलते हैं। पर डी जे के शोर में वे सब भूल जाते हैं।

रात को 10 बजे के बाद डी जे और ध्वनि विस्तारक यंत्रों का प्रयोग सर्वथा वर्जित है। पर गांववालों को कौन समझाए। मेरा मानना है कि कम से कम डी जे में ऐसे गाने बजने चाहिए जो कि हमारी संस्कृति को बयां करते हों। डी जे के शोर से दूसरे प्रभावित न हों। इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए। संभ्रांत लोगों को इस पर पहल करनी चाहिए।

- अक्षरा भट्ट, कक्षा 9
कुमाँचल अकादमी अल्मोड़ा

फूल

कांटों के संग खिलते फूल,
सबको खुशबू देते फूल।
अमीर गरीब का भेद न करते,
सबको खुशबू देते फूल।
हर समय मुस्कुराते रहो,
यही हमको बताते फूल।
कांटों के संग रहना सीखो,
यही हमको सिखाते फूल।

- शिवम पाल, कक्षा 6
बाल मंदिर प. स्कूल, चकराता रोड, देहरादून

मेरे पापा

पढ़ लिख कर मैं बड़ी बनूं,
मेरे पापा कहते हैं।
हमारे लिए करते काम,
धूप जाड़ा सब सहते हैं।
पापा मुझको करते प्यार,
आगे मुझे बढ़ाते हैं।
दुनिया में नाम कमाओ,
बस यही बात बताते हैं।

- बबली मेहरा, कक्षा 7
राजकीय कन्या जू.हा. जैनोली, ताड़ीखेत

आम

सबको अच्छा लगता आम,
आम फलों का राजा है।
हर मौसम में मिलता अब,
देखो शरबत माजा है।

- प्रियदर्शिनी खोलिया, कक्षा 3
दिक्षांत इंटरनेशनल स्कूल हल्द्वानी

बच्चों की कलम से :

गांधी जी

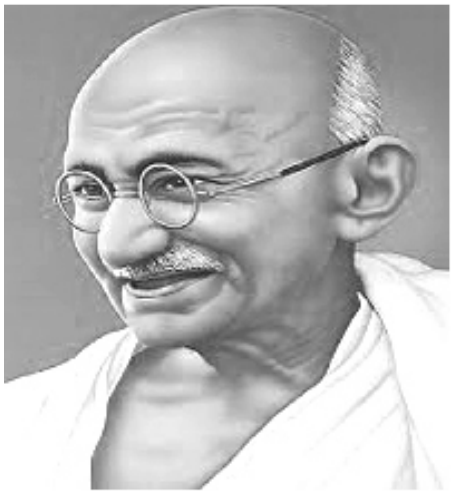

सत्य व अंहिसा के पुजारी,
गांधी जी को शत शत नमन।
चाह उनकी बस एक ही थी,
देश में हो शांति अमन।
गांधी जी के तीन बंदर,
हमको राह दिखाते हैं।
बुराइयों को सब त्याग दो,
यही बात बताते हैं।
स्वच्छता की बात करते वे,
हम भी ये अभियान चलाएं।
मिलजुल सफाई की बात करें,
देश को अपना स्वच्छ बनाएं।

-गीता पंत, कक्षा-7
रा.उ.मा.वि. पच्चीसी, अल्मोड़ा

मेरा प्रिय पेड़ : बांज

बांज का पेड़ मेरा प्रिय पेड़ है। हमें बताया गया है कि जहां बांज के पेड़ होते हैं। उस क्षेत्र में पानी अधिक होता है। इसे चौड़ी पत्ती का पेड़ भी कहा जाता है। बांज के पत्ते खाने से गाय व भैंस के दूध में बढ़ोत्तरी होती है। इसकी पत्तियों की खाद भी अच्छी बनती है। बांज के पेड़ की लकड़ी से हल, जुवा, पाटा आदि कई औजार भी बनाए जाते हैं। इसकी लकड़ी जाड़े में आग सेकने के काम आती है। इसकी लकड़ी के कोयले बहुत देर तक गरमी देते हैं। घर गांव के लोग बताते हैं कि पहले जमाने में पहाड़ के जंगलों में बांज की लकड़ी का कोयला बनाया जाता था। इस कोयले की बिक्री बाद में बाजार में स्थित लकड़ी के टॉल से होती थी। बांज के पेड़ जहां होते हैं। वहां भूमि का कटाव भी कम होता है। बांज की जमीन में गिरी पत्तियां बारिश के पानी को संरक्षित करती हैं। इसका पेड़ अधिक ऊंचाई वाले स्थानों में अधिक पाया जाता है। यह जल संरक्षण के लिए उपयोगी होता है। इसलिए मुझे बांज का पेड़ सबसे अधिक प्रिय है।

– प्राची अधिकारी, कक्षा 5
बाल विकास विद्या मंदिर भटकोट, चौखुटिया, अल्मोड़ा

गांव

पशु पक्षी, पेड़ पौधे,
गांव की ये शान हैं।
मगर क्या करें हम,
बंदरों से परेशान हैं।
आपस में सब मिलकर रहते,
गांव की पहचान है।
कुछ लोग करते हुड़दंग ,
गांव का न रखते मान हैं।

- सीता राणा, कक्षा 6
रा.इ.कालेज कौसानी

पुस्तक

ज्ञान का भंडार है ये,
दोस्त हमारी होती पुस्तक।
दोस्ती जो इससे करे,
उसको राह दिखाती पुस्तक।
पुस्तक से करो दोस्ती,
मान तुम्हारा बढ़ाएगी पुस्तक।
आगे यदि बढ़ना है तो,
आगे तुम्हें बढ़ाएगी पुस्तक।

- दीपक रावत, कक्षा 8
राजकीय इं.कालेज त.रामगढ़, नैनीताल

मां

जन्म हमको देती है मां,
बच्चों को वह करती प्यार।
बच्चे उसकी आशा हैं,
बच्चे ही उसका संसार।
मां का सब सम्मान करें,
मां की बात का मान धरें।
मां हमको करती है प्यार,
हम भी मां को प्यार करें।

- डिंपल पाठक, कक्षा-8
द एशियन एकेडमी पिथौरागढ़

सूरज

सूरज का हम पर एहसान,
जाड़े से हमें बचाता है।
सूरज की रोशनी में,
जानवर भी भाग जाता है।
जाड़े में ये सबका दोस्त,
सबको ही ये भाता है।
गुस्सा तो तब आता है,
जब बादल इसे ढक जाता है।

- रचना गुसाई, कक्षा 10
कस्तूरबा गां.आ.बा.वि.तरपालीसैंण, पौड़ी

बच्चों की कलम से :

घास

कितनी सुंदर कितनी प्यारी,
दूब घास की छटा निराली।
काम पूजा के आती है,
देती है हमको हरियाली।
जानवरों का चारा है ये,
धरती का करती श्रंगार।
सुबह ओस में इस पर चले जो,
वह खुश होता है बारंबार।

निवेदिता सिजवाली, कक्षा 9
कुमाऊं पब्लिक स्कूल द्वाराहाट, अल्मोड़ा

मां

जन्म दिया जिस मां ने,
उस मां को मैं नमन करूं।
हमें सिखाती हमें पढ़ाती,
अपनी मां को नमन करूं।
मां होती है पालनहार,
पूज्य मां को नमन करूं।
शहीद हुआ बेटा सीमा पर,
उस मां को मैं नमन करूं।

- गरिमा जोशी, कक्षा-7
सरस्वती वि. मंदिर त. रामगढ़, नैनीताल

पटाखे

दीवाली आने वाली है,
हम सब खुशी मनाएंगे।
प्रण करो कि दीवाली में,
किसी का दिल न दुखाएंगे।
पटाखे से बूढ़े व बीमार,
बहुत परेशान हो जाते हैं।
बम पटाखे के धुएं से,
लोग बीमार हो जाते हैं।
प्रण करो हम दीवाली को,
सादगी से मनाएंगे।
नहीं करेंगे फिजूलखर्च,
किसी का दिल न दुखाएंगे।

रक्षिता पांडेय, कक्षा 8
ए बी सी अल्मा मेटर स्कूल चंपावत

बादल

आसमान में दौड़ लगाते,
मुझको अच्छे लगते बादल।
डर लगता है मुझको तब,
आपस में टकराते बादल।

- सीमा कन्याल, कक्षा 5
रा.प्रा.वि. जमराड़, चौखुटिया

हमारा स्कूल

मेरा नाम आरूष जोशी है। मेरे पिताजी का नाम श्री नरेश जोशी तथा माता का नाम श्रीमती निशा जोशी है। मेरे परिवार में 24 लोग हैं।

हमारे स्कूल का नाम राजकीय इंटर कालेज नागथात है। हमारे स्कूल में प्रातः पौने नौ बजे से योग की क्लास शुरू हो जाती है। हमारे प्रधानाचार्य जी का नाम श्री आर.बी. सिंह है। वे बच्चों को बहुत प्यार करते हैं। उन्होंने हमारे लिए स्कूल में बहुत सी पुस्तकें मंगाई हैं। हमारे स्कूल में पेड़ पर रस्सी से लटकाकर पुस्तकें रखी गई हैं। खाली पीरियड में बच्चे इन पुस्तकों को पढ़ते हैं। हमारे स्कूल के सारे गुरूजी अच्छे हैं। मुझे अपना स्कूल बहुत अच्छा लगता है।

- आरूष जोशी, कक्षा 6
रा.इ.का. नागथात, कालसी, देहरादून

मेरी मां

मेरी मां सबसे अच्छी,
मुझको राह दिखाती है।
पढ़ाई में मन लगाना है,
ये बात मुझे बताती है।
पालनहार होती है मां,
मां का हम सम्मान करें।
मां बताए जो वही करें,
नहीं मां का अपमान करें।

-रंजना मीणा, कक्षा-9
रा.उ.मा.वि. सराड़ी,उदयपुर, राजस्थान

फौजी

सीमा पर बंदूक ताने,
देश की रक्षा करते हैं।
फौजी हैं देश की शान,
नमन उन्हें हम करते हैं।
तिरंगे की खातिर ये,
जान अपनी दे देते हैं।
नमन करें हम शहीदों को
जो हमारी सुरक्षा करते हैं।
तिरंगा है हमारी शान,
ये उसका मान बढ़ाते हैं।
देश की रक्षा करते ये,
देश के वीर कहलाते हैं।

-मनीषा जोशी, कक्षा 8
यूनिवर्सल कांवेंट स्कूल चंपावत

बच्चों की कलम से :

कौसानी

अनासक्ति आश्रम हमारा,
कौसानी की शान है।
गांधी जी रहे यहां पर,
हमको ये अभिमान है।
भारत का स्विटजरलेंड,
कौसानी सबको भाता है।
अनासक्ति आश्रम देखने,
हर कोई यहां आता है।

– खेमराज थापा, कक्षा 9
विवेकानंद वि. मंदिर कौसानी

मेरा स्कूल

मुनस्यारी का इंटर कालेज,
सारे जोहार की शान है।
मैं इस स्कूल में पढ़ती ,
मुझको ये अभिमान है।
सरस्वती मां विराजमान यहां,
ज्ञान हमको देती है।
ज्ञान को फैलाओ जग में,
ये बात हमें बताती है।

– मिताली, कक्षा 8
रा.इ.का.मुनस्यारी
पिथौरागढ़

मोबाइल

मोबाइल फोन का जमाना,
मोबाइल सबकी जान है।
जिसे देखो जहां देखो,
जमाता इसकी शान है।
दिखाने के लिए कोई,
बगैर सिम बात करता है।
गेम खेलते मोबाइल में,
कोई किसी से न डरता है।

– अजय आर्या, कक्षा 8
रा.उ.मा.वि. डौनी, अल्मोड़ा

तीज त्यौहार

हमारी लोक संस्कृति एवं लोक जीवन में त्यौहारों को बहुत महत्व है। हमारे उत्तराखंड में तो लगभग हर महीने की पहली तिथि को संक्रांति मनाई जाती है। चैत्र माह में नव वर्ष की प्रतिपदा को ब्राह्मण द्वारा सारे लोगों को पैट या अपैट की जानकारी यानी वर्ष का भविष्य बताए जाने की परंपरा है। चैत्र एक गते को बच्चों का त्यौहार फूलदेई होता है तो इसी महीने भाई अपनी विवाहित बहिन को उपहार देने जाते हैं। इस त्यौहार को भिटौली का त्यौहार कहा जाता है। बैशाख एक गते को बिखोती का त्यौहार मनाया जाता है। श्रावण एक गते को हरेले का त्यौहार और भादो की संक्रांति को घी त्यौहार मनाया जाता है। इस दिन घी खाने की परंपरा है। जिनके पास खाने को घी नहीं होता है। वे सिर पर प्रसाद बतौर घी रखते हैं। माना जाता है कि जो घी संक्रांति के दिन घी नहीं खाता वह गनेल यानी घोंघे की योनि में भटकता है। भादो की पंचमी को यहां बिरूड़िया मनाया जाता है। भादो में आठू तथा अश्विन मास की संक्रांति को खतड़ुवा त्यौहार मनाया जाता है। जो कि गौ रक्षा यानी जानवरों के कल्याण के लिए मनाया जाता है।

दशहरा व दीपावली तो सारे देश में मनाई जाती है। परंतु पहाड़ में पूस माह यानी जनवरी में घुघुतिया त्यौहार मनाया जाता है। माघ शुक्ल पक्ष की पंचमी को यहां बसंत पंचमी पूरे देश की तरह मनाई जाती है।

पुराने जमाने मे गरीब से गरीब भी त्यौहार के दिन पकवान बनाते और खाते। आजकल तो अधिकतर घरों में लगभग रोज पकवान बनते हैं।

– देवेंद्र मनराल, कक्षा 8
रा.इ.का.जसकोट, अल्मोड़ा

पेड़

पेड़ों ने संसार सजाया,
हमारे लिए ये अनमोल।
शुद्ध हवा हमको देते,
इनका लाखों में है मोल।
इनका हम पर है एहसान,
इन्हें हमें बचाना है।
पेड़ लगाओ पेड़ बचाओ,
सबको ये समझाना है।

– नदीम, कक्षा 10
रा.उ.मा.वि. बिझौली, हरिद्वार

पेड़

ताजा हवा हमको देते,
धूल धक्कड़ अपनाते पेड़।
फल-फूल हमको देते हैं,
उपकारी बहुत होते हैं पेड़।
जीवन में उपयोगी हैं ये,
हम सब भी पेड़ लगाएं।
रक्षा करते पर्यावरण की,
सबको ही बात बताएं।

– मंजू पासी, कक्षा 8
रा.उ.प्रा.वि. खटीमा, ऊधमसिंहनगर

लड्डू

मिठाइयां एक से बढ़कर,
पर लड्डू सब को भाएं।
पूजा में भी आता लड्डू,
पर अधिक न खाएं।
शादी पार्टी में इसकी शान,
स्वीट डिश में इसे खिलाएं।
ध्यान रखो इस बात का,
बासी मिठाई कभी न खाएं।

– अंजली, कक्षा 8
रा.उ.मा.वि.झिरकोटी, चमोली

बच्चों की कलम से :

जाड़ा

आ गया जाड़े का मौसम,
निकल गई है रजाई।
बिल्कुल न डरना ठंड से,
करते रहो पढ़ाई।
ठंड से भी बचना है,
वरना लग जाए जुकाम।
ठंड से यदि नहीं बचोगे,
बोलो कैसे होंगे काम।

- अंकिता रावत, कक्षा 10
कस्तूरबा गां. आ.बा.वि. तरपालीसैण

लक्ष्मी आश्रम

कौसानी का लक्ष्मी आश्रम,
लड़कियों को आगे बढ़ाता है।
बुनियादी शिक्षा मिलती यहां,
काम से न कोई घबराता है।
सरला बहन की देन यह,
राधा दीदी इसे चलाती हैं।
लड़कियां सब आगे बढ़ें,
ऐसा हमें समझाती हैं।

- अंजली, कक्षा 8
लक्ष्मी आश्रम कौसानी, अल्मोड़ा

दीवाली

दीवाली आई, दीवाली आई,
साथ में अपने पटाखे लाई।
पटाखों ने धूम मचाया,
दीपों ने घर जगमगाया।
मिठाई देख बच्चे ललचाए,
मुंह में इनके पानी आ जाए।
घर में लड़ी सब ने लगाई,
रंग-बिरंगे रंगों से सजाई।

- पूजा गौड़, कक्षा-7
रामगंगा वैली स्कूल मासी, अल्मोड़ा

पेड़

ताजा हवा हमको देते,
उपकारी होते हैं पेड़।
धरती हरी भरी रहती,
सुंदर लगते सबको पेड़।
फल-फूल संग छाया देते,
हरियाली भी देते पेड़।
बहुत उपयोगी होते हैं ये,
हम सब भी लगाएं पेड़।

- खिलेश पनारी, कक्षा-5
सरस्वती शिशु मंदिर गरमपानी, नैनीताल

हमारा गांव : तिलसारी

मेरे गांव का नाम तिलसारी है। यह गांव बागेश्वर जनपद के गरूड़ विकास खंड में स्थित है। मैं वर्तमान में लक्ष्मी आश्रम कौसानी में रहती हूं। राजकीय कन्या जूनियर हाईस्कूल कौसानी में कक्षा 8 में पढ़ती हूं। छुट्टियों में मैं अपने गांव जरूर जाती हूं। सभी को अपना गांव अच्छा लगता है। मुझे भी अपना गांव बहुत अच्छा लगता है। हमारे गांव में धान की खेती होती है। धान के खेत में काम करने का अनुभव तो मुझे नहीं है। परंतु मैं जब भी गांव जाती हूं। दराती से घास काटना मुझे अच्छा लगता है।

हमारे गांव के ग्राम प्रधान बहुत सुलझे हुए हैं। इस कारण गांव में सब लोग आपस में मेल जोल से रहते हैं। गांव में लगभग सभी सुविधाएं उपलब्ध हैं। कई गांवों में लोग आपस में लड़ते-झगड़ते हैं। परंतु हमारे गांव में ऐसा नहीं होता है। यहीं है मेरे गांव का अनुभव। साल में एक बार जाती हूं। इसलिए इतना ही अनुभव रहता है, जितना लिखा है।

- दिया, कक्षा 8, राजकीय कन्या जूनियर हाईस्कूल कौसानी

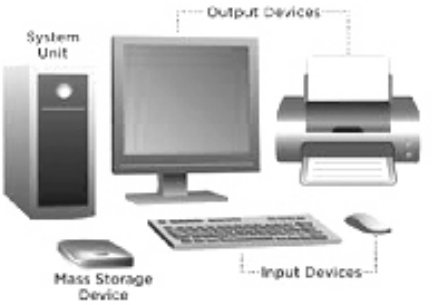

कंप्यूटर

बड़े काम का है कंप्यूटर,
ज्ञान हमें ये देता है।
नेट जुड़ा है अगर तो,
दुनिया हमें दिखाता है।
मेल इससे भेजी जाती,
वीडियो भी दिखाता है।
चित्र बनाओ इसमें सुंदर,
रंग भी उपलब्ध कराता है।

- चंद्रा आर्या, कक्षा-8
कस्तूरबा गां.आ.बा.वि.खनस्यू, नैनीताल

चंद्रसिंह गढ़वाली

चंदसिंह गढ़वाली जी,
उत्तराखंड के पूत थे।
देश के खातिर मर मिटे,
देश के सच्चे सपूत थे।
अंगरेजों की सेना में,
वे भारत के सिपाही थे।
नहीं चलाई गोली उन्होंने,
भारतीय उनके भाई थे।
दूधातोली की माटी ने,
देश में डंका बजा दिया।
चंदसिंह गढ़वाली अमर रहे,
सबके मुख से कहला दिया।
चंदसिंह गढ़वाली जी
तुम्हें मेरा शत-शत नमन।
देश हमारा आगे बढ़े,
चाह यही सब रहे चमन।

पूरन , कक्षा 6
रा. गांधी नवोदय विद्यालय गैरसैण, चमोली

बच्चों की कलम से :

फौजी

नमन करते अभिनंदन करते,
सलाम फौजी को करते हैं।
अपनी जान पर खेलकर,
ये देश की रक्षा करते हैं।
वीरों की ये धरती है,
भारत भूमि को नमन करूं।
नमन करूं शहीदों को मैं,
तिरंगे को नमन करूं।

- आरती, कक्षा 8
रा.इ.इंटर कालेज त. रामगढ़, नैनीताल

फौजी

तिरंगे की खातिर,
जान की बाजी लगाते हैं।
देश की रक्षा करते ये,
नहीं कभी घबराते हैं।
फौजी हैं देश की शान,
देश हित शहीद होते हैं।
जाड़ा और ठंड सहते ये,
जब हम घर में सोते हैं।

- दीपिका शर्मा कक्षा 8
रा.इ.इंटर कालेज स्याल्दे,अल्मोड़ा

बेटियां

बहुत चंचल खुशनुमा,
होती हैं बेटियां।
नादान सी नहीं,
जिम्मेदार होती हैं बेटियां।
घर आंगन खिल उठता,
घर की शान हैं बेटियां।
होती है अजीब सी पीड़ा,
जब घर छोड जाती हैं बेटियां।

-गीतांशी पांडेय, कक्षा-11
रा.इ.का.अंडोली, अल्मोड़ा

सैनिक

सैनिक देश के प्रहरी,
देश की रक्षा करते हैं।
रात को जब हम सोते हैं,
ये सीमा पर रहते हैं।
देश हित शहीद हो जाते,
सैनिक देश की शान हैं।
सैनिक हमारी जान हैं,
सचमुच ये महान हैं।

- तनु, कक्षा 8
राम प्यारी आर्य कन्या इं.का. देहरादून

फौजी

फौजी देश की शान हैं,
देश की रक्षा करते हैं।
लड़ते हैं देश की खातिर,
ये मौत से न डरते हैं।
फौजी का हम सम्मान करें,
रखते देश का मान हैं।
दुश्मन से बचाते देश को,
देश का रखते मान हैं।

- हिमानी मनराल, कक्षा - 9
गोविंद ब. पंत रा.इ.का.खूंट, अल्मोड़ा

तिरंगा

तीन रंगों से बना तिरंगा,
भारत की ये शान है।
राष्ट्रीय एकता अंखडता की,
हमारी ये पहचान है।
हम भारतीय भारत के,
तिरंगा है हम सबकी शान।
इसकी आन न जाने पाए,
हमें रखना है इसका मान।

टाकेंदकुमार कांगे, कक्षा 10
शासकीय इ.मा.वि. घोटिया,
बालोद, छत्तीसगढ़

मेरा भारत

मेरा भारत देश महान,
मिलकर यहां सब रहते हैं।
देश की रक्षा में फौजी,
दिन रात डटे रहते हैं।
अनुशासन में रहकर हम,
देश को आगे बढ़ाएंगे।
आंख दिखाए दुश्मन तो,
उसको मजा चखाएंगे।

- कामाक्षी जोशी, कक्षा-7
राणा प्रताप इं.का. खटीमा, ऊधमसिंहनगर

फौजी

फौजी ड्रेस पहनकर,
मैं भी फौज में जाऊंगा।
दुश्मन सामने से आए,
उस पर गोली चलाऊंगा।

- चैतन्य बिष्ट, कक्षा 5
नरसिंहबाड़ी, अल्मोड़ा

बच्चों की कलम से :

दीपों का त्यौहार : दीपावली

दीपावली हिंदुओं का प्रमुख त्यौहार है। इसे पूरे देश में लोग धूम-धाम से मनाते हैं। कार्तिक मास की अमावस्या को दीपावली मनाई जाती है। पौराणिक कथा के अनुसार लंका विजय के बाद जब भगवान राम अयोध्या लौटे। उस दिन सारे लोगों ने खुशियां मनाई। माना जाता है कि तब से दीपों का पर्व दीपावली मनाए जाने की परंपरा चली। इस त्यौहार को मनाए जाने के पीछे वैज्ञानिक तथ्य यह है कि वर्षा ऋतु में कीड़े-मकौड़े तथा सीलन के बाद घर-गांव की सफाई की जाती है। दीपावली त्यौहार से पहले लगभग सभी लोग अपने घरों की साफ-सफाई तथा रंग रोगन करते हैं। अमावस्या यानी महालक्ष्मी पूजन के दिन शाम अपने-अपने घरों पर दीपक जलाते हैं। मोमबत्ती जलाते हैं। आजकल तो बिजली की माला प्रचलन बढ़ गया है। रात को कुछ लोग खूब बम पटाखे छोड़ते हैं। पकवान बनाकर लक्ष्मी की पूजा करते हैं।

महालक्ष्मी पूजन यानी दीपावली के दूसरे दिन गोवर्धन पूजा होती है। इस दिन भी पकवान बनते हैं। तीसरे दिन भी यहां त्यौहार मनाया जाता है। इस त्यौहार को यहां बग्वाई कहा जाता है। इस दिन नए अनाज का भोग गांव के मंदिरों में लगाया जाता है। यह त्यौहार भैया दूज के तौर पर भी मनाया जाता है। उस दिन चावल से बने च्यूड़े देवताओं को चढ़ाए जाते हैं। ये च्यूड़े देश परदेश गए लोगों के लिए या तो डाक से भेजे जाते हैं। या इन्हें उनके लिए घर पर ही सुरक्षित रख लिया जाता है। इस दिन बग्वालीपोखर आदि कई स्थानों पर मेला भी लगता है। इस दिन अल्मोड़ा के पास पाटिया गांव में पत्थर खेलकर बग्वाल मनाई जाती है।

दीपावली आपसी मेल-मिलाप का त्यौहार है। परंतु कुछ लोग दीपावली में जुआ खेलते हैं। इस बुरी परंपरा पर रोक लगाई जानी चाहिए। दूसरी बात जो मुझे लगती है। दीपावली में रात को लोग खूब बम पटाखे जलाते हैं। इससे जहां पर्यावरण प्रदूषित होता है। वहीं लोग बम पटाखों पर फिजूल खर्च करते हैं। इस फिजूलखर्च को रोका जाना चाहिए।

– प्रियंका भट्ट, कक्षा–7
राजकीय इंटर कालेज बसर, हवालबाग, अल्मोड़ा

दीपावली

जगमग हो जाता उजियारा,
दीपावली जब भी आती है।
बम पटाखे और मिठाई,
सबके मन को भाती है।
गरीब के घर जले दीवाली,
ऐसा कुछ उपाय करो।
प्रदूषण यदि बचाना है,
बिल्कुल न फिजूल खर्च करो।
प्रदूषण का रखना ध्यान,
बात सबको बतानी है।
दूसरे को उपदेश न दो,
बात स्वयं अपनानी है।

-उमेश राणा , कक्षा-8
आर्मी पब्लिक स्कूल अल्मोड़ा

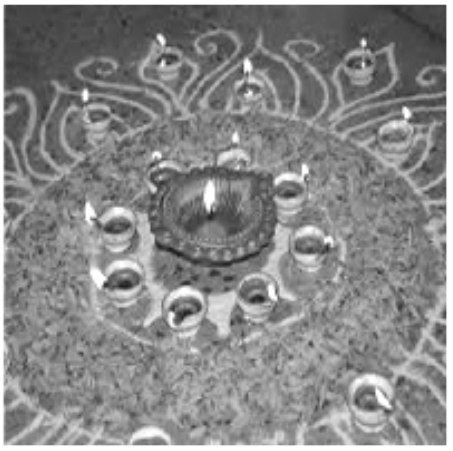

मच्छर

कान में कुछ कहता मच्छर,
हमको खूब सताता मच्छर।
कभी हाथ और कभी पांव का,
खून चूस जाता है मच्छर।
डेंगू से यदि बचना है,
मच्छर को भगाना होगा।
सभी रहें स्वस्थ हम,
ऐसा अभियान चलाना होगा।

- वंदना पंत, कक्षा 7
रा.उ.मा.वि., पच्चीसी, अल्मोड़ा

जूठन

कुछ लोग हमारे यहां,
थाली में जूठन छोड़ देते।
जाने व अनजाने में,
भोजन बरबाद कर देते।
जितना खाना है तुमको,
थाली में उतना लिया करो।
भोजन की बरबादी न हो,
हरदम ये ही सोचा करो।

-दिव्या, कक्षा-9
रा.बा.इ.कालेज गैरसेण, चमोली

दीवाली

दीपों का त्यौहार,
दीवाली आई, दीवाली आई।
भइया दूज के दिन तो,
खुश रहते बहना भाई।
बच्चे पटाखे जलाते,
पर्यावरण दूषित होता है।
बीमार हो जाते परेशान,
धुआं खतरनाक होता है।

-निखिलसिंह डोबाल, कक्षा-8
रेनसा नर्सरी एंड स्कूल गंगोलीहाट

बच्चों की कलम से :

चाचा नेहरू का जन्म दिन,
बाल दिवस हम मनाते हैं।
चौदह नवंबर के दिन,
बच्चे खुश हो जाते हैं।
बाल दिवस के दिन,
बच्चे ईनाम पाते हैं।
बाल दिवस के नाम पर
बच्चे स्कूल जाते हैं।

– पायल लटवाल, कक्षा-8
गो. पं. रा.इ.का.खूंट, अल्मोड़ा

दीवाली

दीपों का त्यौहार है आया,
सबके लिए खुशिया लाया।
घर में खील बतासे आए,
सबने अपने घर महकाए।
घर बाहर की हुई सफाई,
कहीं रंगाई कहीं पुताई।
फूलझड़िया बच्चों ने जलाई,
पटाखे की अब हुई विदाई।

– दिव्यांशु आर्या, कक्षा 8
द्रोण पब्लिक स्कूल पूजाखेत, द्वाराहाट

मेरा स्कूल

सरस्वती शिशु मंदिर स्कूल,
चिलबिला का प्यारा है।
बच्चे सब अनुशासित रहते,
सब स्कूलों से न्यारा है।
मेहनत हम खूब करेंगे,
आगे बढ़ते जाएंगे।
गुरूजी का प्यार मिला है,
हमें आगे बढ़ते जाएंगे।

–सुधांशु यादव, कक्षा-8
स.शिशु मंदिर चिलबिला, प्रतापगढ़, उ.प्र.

सूरज

रोशनी हमको देता सूरज,
अंधकार हर लेता है।
पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण,
दिशा का ज्ञान कराता है।
शरीर के लिए धूप जरूरी,
ये दवा का काम करता है।
जाड़ा हमें जब हो जाता,
ये जाड़ा हमारा हरता है।

–आंचल चौहान, कक्षा-7
कंडियालगांव, पुरोला, उत्तरकाशी

सूरज

सूरज जी ओ सूरज जी,
सुबह जल्दी न आया करो।
नींद हो जाती खराब मेरी,
ऐसे न तुम सताया करो।
दिन में तुम्हारा तेज देख,
बाहर नहीं निकल पाते हैं।
तुम्हारे ही चक्कर में हम,
खेलने शाम को जाते हैं।

– अक्षिता बिष्ट, कक्षा-9
– रा.इ.का.चौरा हवालबाग, अल्मोड़ा

तारे

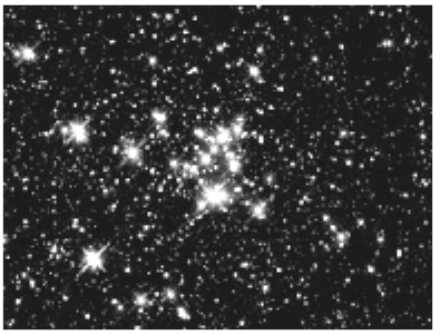

टिम-टिम, टिम-टिम रोज ही,
चमकें आसमान में तारे।
गिन न पाए कोई इन्हें,
ये बहुत हैं सारे।

– दीपक पांडे, कक्षा-4
रा.प्रा.वि. धसपड़, धौलादेवी

पिछली दीपावली

पिछली दीपावली की बात है। मैंने खूब बम पटाखे खरीदे। सुबह पांच बजे उठकर सबसे पहले मैंने बम फोड़े। मैंने दिन में एक रॉकेट जलाया। रॉकेट एक अंकल के सिर पर लग गया। मैंने उन अंकल से कहा,"अंकल बुरा न मानो दीपावली है।" मैं जल्दी वहां से भाग गया। अपने भाई के साथ मैं मैदान में बम पटाखे छोड़ने गया। मैदान में घास थी। उस घास पर आग लग गई। मैं वहां से तुरंत भाग गया। मैंने रात को फिर बम पटाखे की लड़ी जलाई। हमारे घर का दरवाजा खुला था। एक रॉकेट घर के अंदर की ओर चले गया। मम्मी ने मुझे बहुत डांटा। बहरहाल जब तक पूरे बम पटाखे खत्म नहीं हुए। तब तक मैंने उन्हें नहीं छोड़ा। पिछले साल मैंने खूब मस्ती की। अब मेरी सोच बदल रही है। मैं सोचता हूं कि बम पटाखे से किसी की जान भी जा सकती है। प्रदूषण के लिए ये खतरा तो है ही फिजूलखर्च भी है। इस बार मैं खूब सोच समझकर दीपावली मनाने वाला हूं।

– कृष कपिल , कक्षा 7
विवेकानंद इंटर कालेज अल्मोड़ा

आम

गरमी में मिलता है आम,
चटनी इसकी सबको भाए।
अचार जिसने न खाया हो,
वह तो खूब पछताए।
अलग अलग हैं नाम इसके,
मनपसंद सब ही खाएं।
इतना ध्यान रखना है,
सारे फल धोकर खाएं।

- गीता जोशी, कक्षा-5
रा. प्रा. विद्यालय बमौरी तरूला

बच्चों की कलम से :

पटाखे

कुछ लोग दीवाली में,
पटाखे खूब जलाते हैं।
पटाखे के शोर से,
बीमार लोग घबराते हैं।
पटाखे का धुआं नहीं,
धुआं पैसे की बरबादी है।
पर्यावरण का रखो ध्यान,
बचानी हमें आबादी है।

- माया सक्सेना, कक्षा 7
रा.उ.प्रा.वि.खटीमा,ऊधमसिंहनगर

बादल

भूरे बादल बारिश लाएं,
काला हमें डराता है।
आसमान में रूप बदलता,
बादल दौड़ लगाता है।
बादल देखकर गरमी में,
हम सब खुश हो जाते हैं।
झम झमाझम बारिश आए,
बच्चे मस्त हो जाते हैं।

- सोनिया उप्रेती, कक्षा-8
रा.बा.इं.कालेज स्याल्दे, अल्मोड़ा

सबसे अच्छा दिन

मेरा सबसे अच्छा दिन 22 जून, 2019 को था। उस दिन मेरा जन्म दिन था। मेरा जन्म दिन परिवार वालों ने धूमधाम से मनाया। मेरी मम्मी बाजार से केक लाई। केक काटा गया। मैंने अपने दोस्तों के साथ डांस भी किया। बच्चों को खाना खिलाने के बाद हमने भी खाना खाया। उसके बाद मैंने अपने दोस्तों के साथ खेल खेला। सच में यह मेरे लिए बहुत यादगार दिन था।

-लवली तिवारी, कक्षा-8
आर्य कन्या इं. कालेज अल्मोड़ा

पेड़

हरे भरे होते हैं पेड़,
शुद्ध हवा ये देते।
परोपकारी होते हैं ये,
नहीं हमसे कुछ लेते।
भगवान के रूप हैं ये,
देते हैं हमें फल व फूल।
उपकार करते हैं हम पर,
इनके उपकार न जाना भूल।

-अमितसिंह फर्स्वाण, कक्षा-8
रा.स.शि.वि. मंदिर डिम्मर, चमोली

चंदामामा

आसमान में चंदामामा,
रुप बदलते रहता है।
रात दिन चलते रहता,
ठंड गरमी सहता है।
पूर्णिमा के दिन तो,
सबको लगता ये अच्छा।
खुश हो जाते सारे,
बूढ़ा हो या बच्चा।

-पंकज कुमार, कक्षा-7
रा.इं.कालेज तरपालीसैण, पौड़ी

पुस्तक

विद्या का भंडार है पुस्तक,
ज्ञान हमें ये देती है।
पांव इस पर कभी न रखना,
मान हमें ये देती है।

-अमित कुमार, कक्षा-5
रा. प्रा.वि. कोकली,चाकीसैण, पौड़ी

मेरा जन्म दिन

मेरा जन्म दिन 14 सितंबर को मनाया जाता है। अपने जन्म दिन पर मैं अपने स्कूल को टॉफी तथा मिठाई ले जाता हूं। इस दिन सब लोग मुझे बहुत प्यार करते हैं। घर में कई पकवान भी बनते हैं।

- हर्षित तिवारी, कक्षा-5
एन बी यू इंटरनेशनल स्कूल अल्मोड़ा

बेटी

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ,
जीने का दो उसे अधिकार।
दुनिया में नाम कमाएगी,
यहीं है मेरी बात का सार।
दो परिवारों का होगा नाम,
इसलिए उसे पढ़ाना है।
बेटियां बनें आत्मनिर्भर,
आगे उन्हें बढ़ाना है।

- वर्षा असवाल, कक्षा-9
राजकीय क.उ.मा.वि. बांगीधार, सल्ट

काफल

लाल लाल काफल के दाने,
तोड़कर मम्मी लाती।
मुझको तो लगते हैं अच्छे,
गप-गप इन्हें खा जाती।
जब भी देखूं काफल मैं,
मेरा दिल ललचाता।
लाल रंग खट्टा मीठा,
मुंह में पानी आ जाता।

- काजल टम्टा, कक्षा-7
रा.इ. कालेज नैनी, जागेश्वर

बच्चों की कलम से :

एक दिन की बात

पिछले अक्टूबर की बात है। अल्मोड़ा में अल्मोड़ा महोत्सव चल रहा था। अल्मोड़ा महोत्सव में मुझे लगा कि मुझे भी गाना चाहिए। इसके लिए मैंने तैयारी की। कार्यक्रम के संयोजक से जब मैंने अपने मन की बात कही तो मुझे गाने की अनुमति मिल गई। मुझे पहाड़ी गायक गोविंद दिगारी जी के साथ गाने का अवसर मिला। उन्होंने मुझे बहुत प्रोत्साहित किया। इतने बड़े कलाकार के साथ मैंने अपनी प्रस्तुति दी। उससे भी बड़ी उपलब्धि ये रही कि अगले दिन फोन पर मुझे अपनी प्रस्तुति देने के लिए दोबारा बुलाया गया। मुझे अपने पापा की वह बात याद आ गई। जब उन्होंने कहा कि कभी भी हिम्मत नहीं हारना। परिश्रम करो, अवसर तुम्हारे सामने होंगे।

- आयुषी परिहार, कक्षा-10
स्प्रिंग डेल्स सी. से. स्कूल, अल्मोड़ा

मोबाइल

मोबाइल आज हम सबके लिए जरूरी हो गया है। मोबाइल फोन से बात करना , कोई भी सूचना, फोटो या वीडियो एक स्थान से दूसरे स्थान तक भेजने के लिए मोबाइल वास्तव में बहुत उपयोगी है। लेकिन कुछ लोग बहुत समय तक इस पर आंख गड़ाए रहते हैं। इससे आंख खराब होने का खतरा बना रहता है। कुछ लोगों को तो मोबाइल की लत लग जाती है। यह लत बहुत कोशिश करने के बाद भी नहीं छूटती है। कुछ लोग तो मोबाइल को छोड़ ही नहीं पाते हैं। मानो मोबाइल फोन के बिना उनकी जिंदगी ही न चले। विज्ञान व क्रांति के आज के दौर में मोबाइल बहुत जरूरी है। परंतु इसका आदी होना खतरनाक हो सकता हैं ।

- प्रेरणा तिवारी, कक्षा-11
आर्य क. इंटर कालेज अल्मोड़ा

फिजूलखर्च

कुछ लोग दीपावली में बम पटाखे पर अनाप-शनाप खर्च करते हैं। अपनी हैसियत दिखाने के लिए हजारों रुपए के बम पटाखे थोड़ी ही देर में स्वाहा कर देते हैं। इस फिजूलखर्च से जहां पैसे की बरबादी होती है। वहीं प्रदूषण फैलता है। पिछले साल दिल्ली सरकार ने पटाखों पर प्रतिबंध लगा दिया। पर लोग हैं कि मानते ही नहीं। उनकी इस लापरवाही से दूसरे लोगों को नुकसान उठाना पड़ता है। बीमार लोग परेशान होते हैं । हम सबको प्रदूषण मुक्त दीपावली के लिए बम पटाखे नहीं जलाने चाहिए। हम गरीब बच्चों को दीपावली के दिन मिठाई या दूसरे उपहार देकर अपनी दीपावली को और भी यादगार बना सकते हैं।

- रिया गस्याल, , कक्षा-8
केंद्रीय विद्यालय अल्मोड़ा

नीम

नीम हमारे बहुत काम का,
दवा इससे बनाई जाती।
कितना सुंदर लगता है,
पेड़ पर नई कलियां आती।
दातून बनता है इससे,
देता हमको शीतल छाया।
ऑक्सीजन पाते हैं प्राणी,
जिससे बनती सुंदर काया।

- साधना सिंह, कक्षा-8
दुखड़ईरामसिंह इं.का. उदितनगर, मिर्जापुर, उ.प्र.

मेरी नानी

सबसे प्यारी मेरी नानी,
सब बच्चों को करती प्यार।
नानी जब खुश हो जाती,
हमें देती कोई उपहार।

- अनन्या नेगी, कक्षा-6
रा.आ.इं.कालेज नागथात, देहरादून

पेड़

पेड़ हमें देते हैं जीवन,
हमको पेड़ लगाने हैं।
धरती के आभूषण ये,
हमको पेड़ बचाने हैं।
फल-फूल संग छाया भी,
देते हमें ये हरियाली।
धरती को सजाएं हम भी,
बन जाएं हम भी माली।

- नवीनचंद्र भट्ट, कक्षा 8
रा.इं.का.आरा सल्पड:, धौलादेवी, अल्मोड़ा

नागथात

नागथात हमारा सुंदर,
खुश हैं यहां के बच्चे।
अनुशासन में रहते सब,
सब के सब हैं सच्चे।
गांव के सारे बच्चे,
मेहनत बहुत करते हैं।
माता-पिता का हाथ बंटाते,
काम से न डरते हैं।

- जिज्ञासा तोमर, कक्षा-6
रा. आदर्श इंटर कालेज नागथात, देहरादून

तितली

तितली रानी तुम्हें देखकर,
बच्चे खुश हो जाते हैं।
हमें बताओ तितली रानी,
ये रंग कहां से आते हैं।

- सपना टम्टा, कक्षा-4
रा. प्रा.वि. नैनी, जागेश्वर

जानकारी :

ऐसा क्यों होता हैं ?

● घमंडीलाल अग्रवाल

विज्ञान की तीन शाखाएं हैं - भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान एवं जीव विज्ञान। विज्ञान की इन्ही शाखाओं से संबंधित कुछ रोचक प्रश्नोत्तर नीचे दिए जा रहे हैं जो तुम्हारा ज्ञानवर्धन करेंगे।

● बादल क्यों फटते हैं?

बादल फटना बरसात का सबसे उग्र रूप होता है। ऐसी बरसात तूफान व ओलों के साथ ऊपर से होती है। ऐसे समय में तापमान बहुत घट जाता है। बादलों में बिजली की कड़क व सक्रियता भी बढ़ जाती है। फलस्वरूप, पानी के कण पास-पास होकर बादलों के अंदर घने हो जाते हैं तथा ये बाहर नहीं निकल पाते हैं। धीरे-धीरे जलकण इतने घने हो जाते हैं कि छोटे से क्षेत्र पर भयानक वेग से बरस जाते हैं जिसे बादलों का फटना कहते हैं।

● एक से अधिक बीमारियों की दवाएं मिलाकर खाना हानिकारक क्यों होता है?

यदि कोई एक से ज्यादा बीमारियों की दवाएं मिलाकर खाए तो यह उसके लिए हानिकारक हो सकता है। चिकित्सक की सलाह के बिना इसमें किसी अन्य दवा का मिश्रण करना नुकसानदेह ही होता है। ऐसा करने से रोगी ठीक होने के बजाय दूसरी कई बीमारियों की चपेट में भी आ जाता हैं।

● ठंड बढ़ने से त्वचा को हानि क्यों पहुंचती है?

ठंड के बढ़ने से त्वचा के रोगग्रस्त होने की संभावनाएं भी बढ़ जाती हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि सूखी सर्द हवाएं चलने से त्वचा में खुश्की पैदा हो जाती है। जिससे खाज खुजली की बीमारियां होना स्वाभाविक है। चूंकि यह संक्रामक बीमारी है। अत: संपर्क में रहने वालों को भी सावधान रहना चाहिए। ठंड में पराबैगनी किरणों से भी कई लोगों को एलर्जी हो सकती है।

● दिल का दर्द सीने के दोनों ओर क्यों होता है?

यद्यपि हमारा दिल शरीर के बाईं ओर स्थित होता है, फिर भी दिल का दर्द(हार्ट अटैक)सीने के दोनों तरफ होता है। यह सीने के बीच से शुरू होकर दोनों दिशाओं में फैल जाता है। जानते हो ऐसा क्यों होता है? ऐसा इसलिए होता है कि दर्द के फैलने की सीमा दिल के दोनों ओर रहती है। दर्द यदि एक से दो सेमी. में ही हो तो महसूस नहीं होता, लेकिन 8-10 सेमी. होने पर अनुभव होता है।

● कसरत लाभकारी क्यों मानी जाती है?

इस भागदौड़ भरी जिंदगी में शरीर तेजी से अपनी ऊर्जा खोता है। अत: शारीरिक व मानसिक फिटनेस के लिए कसरत शरीर को सक्रियता प्रदान करती है। वैज्ञानिक शोध बताते हैं कि सप्ताह में कम से कम एक घंटे की कसरत से शरीर चुस्त-दुरूस्त रहता है।

● प्रार्थना लाभदायक क्यों होती है?

तन के साथ मन की सेहत भी आवश्यक है। स्वस्थ मन तन के तेज को बढाता है। वैज्ञानिकों का मानना है कि प्रार्थना से तुम स्वयं को खूबसूरत बना सकते हो। इससे तुम्हें ऊर्जा, विश्वास एवं मानसिक शांति की प्राप्ति तो होती ही है, शरीर में रक्त संचार भी बढ़ता है। अनिद्रा की बीमारी व तनाव को दूर करने में भी यह सहायक है। यह शरीर को स्फूर्ति प्रदान करती है।

● वृक्षारोपण दस पुत्रों से भी बढ़कर क्यों माना जाता है?

हमारे शास्त्रों में वृक्ष लगाना पुत्रोत्पादन से भी अधिक खुशी होना बताया है। पौधों को लगाने, पालने, सींचने आदि में जो श्रम तथा समय लगता है, उसमें वात्सल्य भी जुड़ा होता है। वृक्षों के अनेकानेक लाभ हैं। वे जीवनदायिनी प्राणवायु(ऑक्सीजन), ईंधन, पानी, फूल, फल, रेशे, लकड़ी, औषधि, चारा एवं छाया प्रदान करते हैं। इसी वजह से कहा गया है कि वृक्षारोपण दस पुत्रों से भी बढ़कर है।

● एक छोटी सी छींक अत्यंत हानिकारक क्यों मानी जाती है?

एक छोटी सी छींक अत्यंत हानिकारक सिद्ध हो सकती है। दरअसल किसी व्यक्ति की एक छोटी सी छींक उसके इर्द-गिर्द बैठे हुए लगभग 150 व्यक्तियों को पांच मिनट के भीतर सर्दी-जुकाम से ग्रसित कर सकती है। शोधकर्ताओं के अनुसार छींक द्वारा निकले हुए रोगाणु कुछ ही सेकिंड में फैल जाते हैं। सार्वजनिक जगहों पर हवा के झोंके से भीड में सरलता से ये रोगाणु संक्रमित कर सकते हैं।

● सुबह-सुबह धूप में बैठना या घूमना लाभकारी क्यों होता है?

कई लोग सन-स्क्रीन का इस्तेमाल सिर्फ इसलिए करते हैं क्योंकि उन्हें डर लगता है कि इससे धूप से पर्याप्त मात्रा में विटामिन 'डी' नहीं मिल सकेगी। जो स्किन कैंसर का कारण बन सकती है। वैज्ञानिकों का मानना है कि शरीर को जरूरी विटामिन 'डी' की मात्रा सुबह-सुबह सिर्फ पांच मिनट में धूप में बैठने या घूमने से ही मिल जाती है।

- 785/8 अशोक विहार, गुरूग्राम, हरियाणा
मोबाइल- 9210456666

निबंध प्रतियोगिता – 33

निबंध प्रतियोगिता में 14 वर्ष तक के बच्चे नि:शुल्क भाग ले सकते हैं। प्रतियोगिता के तहत 'घर की सफाई में बच्चों की भूमिका' विषय पर लगभग 250 शब्दों का निबंध लिखकर भेजना है। चयनित निबंध को बालसाहित्य संस्थान अल्मोड़ा के सौजन्य से 200 रुपए की पुस्तकें/पत्रिकाएं उपहार में भेजी जाएंगी। निबंध के साथ नाम/पता/कक्षा/स्कूल व घर का पूरा पता तथा टेलीफोन न. अवश्य लिखें। निबंध संपादक बालप्रहरी अल्मोड़ा, उत्तराखंड-263601 के पते पर दिनांक 15 जनवरी, 2020 तक भेजें। निबंध प्रतियोगिता-32 में निम्न निबंध चयनित हुआ है। इन्हें उपहार में पुस्तकें/पत्रिकाएं भेजी जा रही हैं। – संपादक

फास्ट फूड और मैं

आजकल सारे बच्चे चाउमीन, पिज्जा, कोल्ड ड्रिंक, चॉकलेट, स्नैक्स, बर्गर आदि चीजें पसंद करते हैं। रोटी-चावल-दाल की तरह इनके लिए इंतजार नहीं करना होता है। एक किस्म से ये रेडीमेड हैं। इन्हें बहुत दिन बाद तक खाने के लिए संरक्षित किया जाता है। इसलिए इन्हें प्रोसेस्ड फूड कहा जाता है। खाने के लिए जल्दी उपलब्ध हो जाते हैं। इसलिए इसे फास्ट फूड भी कहा जाता है। काफी दिनों से रखे होने के कारण इन्हें जंक फूड भी कहा जाता है। इनमें फ्लेवर्स व रंगों का इस्तेमाल किया जाता है। जिससे स्वास्थ्य पर इनका बुरा प्रभाव पड़ता है।

आपने सुना होगा कि कई बच्चे घर में मम्मी का बनाया खाना पसंद नहीं करते हैं। फास्ट फूड उनकी जिंदगी का अभिन्न अंग बन चुका होता है। उन्हें अन्य कोई चीजें खाने में पसंद नहीं होती हैं। उन्हें भूख ही नहीं लगती। उनका पाचन तंत्र खराब हो जाता है। दरअसल फास्ट फूड का पाचन तंत्र पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। इनमें रंग तथा फ्लेवर्स का इस्तेमाल होने के कारण एलर्जी व त्वचा के रोग हो सकते हैं। जंग फूड में फास्फेट नामक रसायन होता है। जिससे हड्डियां भी कमजोर हो जाती हैं। फास्ट फूड में फैट और कैलोरीज की मात्रा बहुत ज्यादा होती है। इससे केलोस्ट्रॉल तथा हार्ट की बीमारियां होने की आशंका बनी रहती है।

फास्ट फूड में शुगर का इस्तेमाल किया जाता है । इस कारण यह जहां सुगर जैसी बीमारियों को बढ़ावा देता है, वहीं मोटापा भी बढ़ाता है। एक शोध में कहा गया है कि जो बच्चे फास्ट फूड अधिक लेते हैं उन्हें अस्थमा यानी श्वास की बीमारी का सामना करना पड़ता है। चाउमीन, मोमो आदि में मैदे का प्रयोग किया जाता है, जो कि देर में पचता है। दूसरा इसमें इतने तीखे मसाले होते हैं कि यह पाचन तंत्र को ही खराब कर देता है। सिर दर्द, घबराहट, मुंहासे, दांतों के सड़ने, कम भूख लगना ये भी फास्ट फूड खाने के लक्षण हो सकते हैं।

हमारे घर में कोई भी फास्ड फूड नहीं खाता है। जब मैं छोटी थी तो दूसरे बच्चों को देखकर मेरा मन भी इन्हें खाने को करता। मेरी मां ने जब इनके नुकसान बताए तब से मैं इन्हें बिल्कुल भी नहीं खाती हू।

– शिखा गुप्ता, कक्षा 10
गुरू एकैडमी, घोटही, अहमदाबाद

(इसके अतिरिक्त रवि कुमार(अल्मोड़ा), अर्पित जोशी (अल्मोड़ा) , कंचन सिरस्वाल (गोपेश्वर), मोहम्मद नवाब (अल्मोड़ा) ऊषा जीना (नैनीताल), तनिष कुमार (अल्मोड़ा) चंदु बहादुर (अल्मोड़ा) नीमा कर्म्याल (कपकोट), भूमिका गुरूरानी (अल्मोड़ा) का निबंध भी प्रशंसनीय था। – संपादक

अंक पहेली

नीचे की संख्याएं एक निश्चित क्रम में दी गई हैं। अगली संख्या लिखनी है।

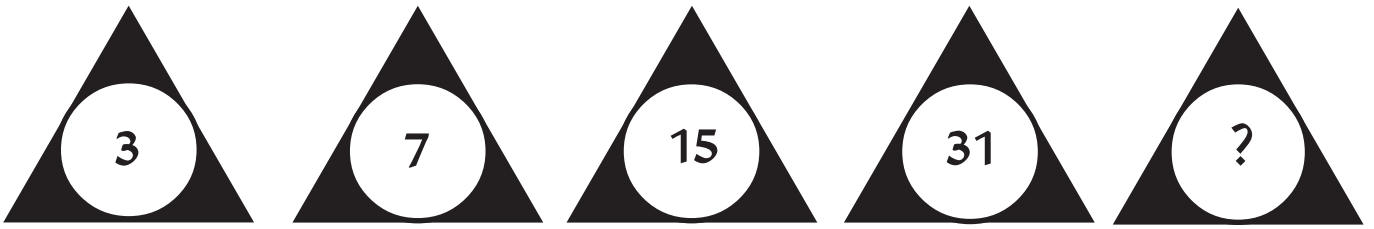

कविता लिखो प्रतियोगिता–62

दाएं बने चित्र को ध्यान से देखो। चित्र को देखकर–विचारकर तुम्हें 8 पंक्ति की स्वरचित कविता 15 जनवरी, 2020 तक संपादक बालप्रहरी, अल्मोड़ा उत्तराखंड-263601 के पते पर भेजनी है। प्रतियोगिता में 14 वर्ष तक के बच्चे नि:शुल्क प्रतिभाग कर सकते हैं। कविता के नीचे अपना नाम, पता तथा उम्र तथा फोन नंबर लिखकर हस्ताक्षर करने हैं। सबसे अच्छी कविता को बालप्रहरी में प्रकाशित किया जाएगा। ग्रामीण समाज कल्याण समिति (ग्रास) तल्ला चीनाखान, अल्मोड़ा के सौजन्य से 200 रुपए की पुस्तकें/पत्रिकाएं उपहार में भेजी जाएंगी। कविता लिखो प्रतियोगिता – 61 में निम्नलिखित कविता चयन की गई है। इन्हें पुस्तकें/पत्रिकाएं उपहार में भेजी जा रही हैं।

मेरा भैया

मेरा भैया प्यारा भैया,
रक्षा उसे मैं बाधूंगी।
मुझे कभी न छोड़ेगा,
ऐसा वचन मैं मांगूंगी।
नहीं लड़ूंगी उससे मैं,
ऐसा उसे बताऊंगी,
तिलक लगाकर भैया को,
मिठाई मैं खिलाऊंगी।

— नैनसी परगाई, कक्षा 7
रा.इ.का.खनस्यू, नैनीताल

इसके अतिरिक्त विष्णुकांत बलूनी (उत्तरकाशी) कंचन सिरस्वाल (गैरसैंण) वंदना तिवारी (अल्मोड़ा) की कविताएं भी प्रशंसनीय थी। – संपादक

अल्मोड़ा से प्रकाशित कुमाउंनी मासिक पत्रिका

पहरू

के लिए कुमाउंनी भाषा में कहानियां, कविताएं आदि रचनाएं सादर आमंत्रित हैं। आजीवन सदस्यता 1500 रुपए अथवा वार्षिक सदस्यता 200 रुपए भिजवाकर सहयोग करें।

– डॉ हयात सिंह रावत,
संपादक– पहरू
'इन्द्र सदन' सुनारीगौला, अल्मोड़ा, मोबा. 9412924897

सुडोकू

सुडोकू 9×9 यानी 81 खानों का वर्ग है। यह 3×3 खानों के 9 छोटे खानों में बंटा होता है। पहेली सुलझाने के लिए खाली स्थान पर 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। ध्यान रखें आड़ी या खड़ी लाईन में एक संख्या केवल एक ही बार आए।

6					3			2
2	9			6				
	3					5		
		5	7			4		3
9	2						1	5
4		6			5	9		
		2					8	
				8			3	4
1			3					7

शुभचिंतकों से

- बालप्रहरी केवल एक पत्रिका ही नहीं बच्चों के मन में वैज्ञानिक सोच जाग्रत करने, उन्हें साहित्यिक मंच प्रदान करने तथा रचनात्मक कार्यों व पठन-पाठन की संस्कृति से जोड़ने का एक सामूहिक प्रयास भी है।
- बालप्रहरी के लिए रचनाएं भिजवाकर सहयोग करें। पारिवारिक व परिचित बच्चों को बालप्रहरी के लिए रचनाएं लिखने के लिए प्रेरित कीजिएगा। एक कागज पर एक ही रचना लिखी हो।
- बार-बार शुल्क भेजने की परेशानी से बचने के लिए आजीवन सदस्यता भिजवाएं। धनराशि पंजाब नेशनल बैंक अल्मोड़ा स्थित बालप्रहरी के खाता सं. 0962000101357002 (IFSC Code : PUNB 0096200)में सीधे भी जमा की जा सकती है। धनराशि बैंक में जमा करने पर कृपया सूचना एस.एम.एस./पोस्टकार्ड या पत्र से देकर सहयोग करें।
- बालप्रहरी के लिए शुल्क/ मनीआर्डर व रचना भेजते समय अपना नाम, पूरा पता एवं फोन न. अवश्य भेजें। पता बदलने तथा पत्रिका नियमित नहीं मिलने पर पोस्ट कार्ड /पत्र/एस.एम.एस. से सूचित करें।

बालप्रहरी को बालोपयोगी बनाने के लिए आप सबसे सहयोग एवं मार्गदर्शन की अपेक्षा है। – संपादक

बालप्रहरी

(बच्चों की त्रैमासिक पत्रिका)

संपादकीय कार्यालय

दरबारीनगर, अल्मोड़ा, उत्तराखंड – 263601

मो.: 9412762950

सदस्यता फार्म

मैं 'बालप्रहरी' की सरंक्षक सदस्यता 5000/-, आजीवन सदस्यता 2,000/-, 3 वर्ष का शुल्क 300/-रु. मनीआर्डर / ड्राफ्ट/चैक सं0 .....दिनांक .....द्वारा भेज रहा/रही हूं। कृपया मुझे पत्रिका की प्रति नियमित रूप से डाक से भिजवाएं।

नाम .....

पता .....

.....

.....

.....पिन.....

मोबाइल/ फोन .....

चुटकुले

गोपू – चल बता! दूध में उफान क्यों आता है? पानी क्यों बह जाता है? सब्जी क्यों जल जाती है?
मोनू – ये तो सरल है। तीनों का एक ही जबाब है।
गोपू – सही उत्तर क्या है?
मोनू – ये सब वाट्सअप चलाने के कारण होता है।

अध्यापक – रामू बरसात के क्या-क्या लाभ हैं?
रामू – जी! हमारी दुकान से छाता अधिक बिकती हैं।

मकान मालिक- तुमने अभी तक भाड़े का रुपया नहीं दिया।
किराएदार – मैंने अभी तक कागज का रुपया देखा है। भाड़े का रुपया मिल जाएगा तो दे दूंगा। चिंता न करें।

प्रधानाचार्य – कल्पना करो कि तुम घर में अकेले हो, और घर में आग लग जाए। तुम क्या करोगे?
छात्र – सर! बहुत सरल उपाय है। मैं कल्पना करना बंद कर दूंगा।

पत्नी – आपकी तबियत ठीक है। आजकल आप रोज दवाओं का ढेर ला रहे हैं। क्या बात है?
पति – मेरी तबियत तो ठीक है। अपना किरायेदार है न। डॉक्टर की दुकान वाला। कई महीने से किराया नहीं दिया है। सोचा दवा ही ले चलूं, बहुत महंगी दवाएं हैं।

गोलू- कोई समस्या आए तो किसके पास जाना चाहिए?
भोलू- किसान के पास जाना चाहिए।
गोलू – किसान के पास क्यों?
भोलू – क्योंकि किसान के पास हल होता है।

विमल – यार ! तू हर एसएमएस को दो बार क्यों भेजता है?
नवल – तू नासमझ है यार। जब एक तू फारवर्ड करेगा तो तेरे पास क्या बचेगा। इसलिए दो भेजता हूं।

प्रकाश –सुना है आप जानवरों के चित्र अच्छे बनाते हैं।
चित्रकार- हां! तो क्या मैं आपका चित्र बनाऊं?

- आशीष बुंगला, कक्षा 5, रेनेसा नर्सरी एंड स्कूल पंगोलीहाट
- गीता, कक्षा 5, रा.प्रा.वि. बाजपुर द्वितीय,ऊधमसिंहनगर
- भीमसिंह बर्गली, कक्षा 5 रा.प्रा.वि.खनस्यू, नैनीताल
- करिश्मा पंवार, कक्षा 8, रा.इ.का.मुनस्यारी,पिथौरागढ़
- कृतिका कक्षा 7,कस्तूरबा गां.आ.बा.वि. तिरपालीसैण, पौड़ी

सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता-62

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर नीचे कूपन में गोला भरकर **15 जनवरी,2020** तक संपादक बालप्रहरी, अल्मोड़ा-263601 उत्तराखंड के पते पर (कूपन काटकर) भेजना है। प्रतियोगिता में 14 साल तक के बच्चे भाग ले सकते हैं। अधिक बच्चों के सही उत्तर होने पर ड्रा से नाम निकाला जाएगा। सर्वोत्तम आने वाले बच्चे का नाम पत्रिका में छापा जाएगा। उपहार में 200 रुपए की पुस्तकें/पत्रिकाएं भेजी जाएंगी। सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता-61 में **आदित्यसिंह बोरा कक्षा 4 मानस पब्लिक स्कूल अल्मोड़ा** का चयन किया गया है। इन्हें पुरस्कार में पुस्तक/पत्रिकाएं भेजी जा रही हैं।

1. **'स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है। इसे मैं लेकर रहूंगा'। किसने कहा था**
   (a) महॉत्मा गांधी (b) बाल गंगाधर तिलक
   (c) लाल बहादुर शास्त्री (d) मोतीलाल नेहरू
2. **तिरंगे को भारत का राष्ट्रध्वज घोषित किया गया।**
   (a) 15 अगस्त,1947 (b) 26 जनवरी,1950
   (c) 22 जुलाई, 1947 (d) 22 जुलाई,1931
3. **चंद्रयान-2 का हरिकोटा से प्रक्षेपण किया गया।**
   (a) 22 जुलाई,2019 (b) 7 सितंबर,2019
   (c) 22 जुलाई,2008 (d) 22 जुलाई,2013
4. **भारत में केंद्रीय वन आयोग बनाया गया।**
   (a) 1947 (b) 1965
   (c) 1975 (d) 1978
5. **राजस्थान की राजधानी कहां है?**
   (a) जयपुर (b) बीकानेर
   (c) उदयपुर (d) जोधपुर

बालप्रहरी सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता-61 सही उत्तर

1. (b), **2.** (b), **3.** (b), **4.** (c) **5.** (c)

बालप्रहरी सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता-62

नाम : ..... **कक्षा** .....

पता : .....

.....

फोन (कोड सहित)..... **मो.** .....

	(a)	(b)	(c)	(d)
प्रश्न सं. 1	○	○	○	○
2	○	○	○	○
3	○	○	○	○
4	○	○	○	○
5	○	○	○	○

नोट : सही उत्तर वाले गोले को पेंसिल या काले पैन से (इस प्रकार (●) काला करना है।

क्या आप जानते हैं?

● मोहनलाल मगो

कीट वैज्ञानिकों का मानना है कि पृथ्वी पर एक करोड़ से लेकर तीन करोड़ तक कीड़े-मकोंड़ों की प्रजातियां हैं। जिसमें से अभी तक लगभग 10 लाख कीड़े-मकोंड़ों की पहचान की गई है। वैज्ञानिकों की मानें तो धरती पर जानवरों के पूरे भार का लगभग 10 प्रतिशत तो चीटियां ही हैं। लगभग 10 प्रतिशत भार दीमकों का है। जो लोग कीट पतंगों यानी कीड़े मकौडों का अध्ययन करते हैं, उन्हें एंटोमोलोजिस्ट कहा जाता है।

हम मानें या न मानें ये बात सत्य है कि कीड़े-मकोड़े हमारे दोस्त होते हैं। ये हमारी धरती को साफ-सुथरा बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। रेशम के कीड़े जो शिल्क तैयार करते हैं। उस शिल्क के हम कपड़े पहनते हैं। मधुमक्खी के कारण ही हमें शहद मिल पाता है। कीड़े जो महत्वपूर्ण कार्य करते हैं वह है-परागण। विभिन्न फलों और फूलों के पौधों के बीजों का प्रसार कर वे मानव के लिए सुखद वातावरण बनाते हैं। फूलदार पौधे कीड़ों के भोजन और नमी के लिए जरूरी होते हैं। पौधे और कीड़े एक दूसरे के पूरक हैं। विभिन्न फूल अपनी खूबसूरती से कीड़ों को आकर्षित करते हैं।

पौधों से गिरी पत्तियां, बेकार लकड़ी , गोबर और अन्य गंदगी को कीट पतंगे अपना भोजन बनाकर खाद तैयार करते हैं। आपने कैचुए को देखा होगा। कैसे मिट्टी से खाद तैयार करते हैं।

कीड़े दिखने में बहुत छोटे होते हैं। पर इनका अपना रचना संसार बहुत बड़ा है। दीमक को तो इंजीनियर के नाम से तक जाना जाता है। चीटियां भी यों ही जमीन में लाइन से नहीं चलती। उनका अपना अनुशासन है। राजा-महाराजा केवल मानवों में ही होते हैं, ऐसा नहीं है। शहद बनाने वाली मक्खियों में तो रानी मक्खी की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। कितना श्रम करती है शहद की मक्खियां। एक अनुमान के अनुसार शहद की मक्खी एक पाउंड शहद बनाने के लिए जितने चक्कर छत्ते से फूलों के बीच लगाती है। यदि उसे नापा जाए तो पूरी धरती की परिक्रमा दो बार हो सकती है। गुबरैले और इसकी प्रजाति के बीटल्स तो अपने वजन से लगभग एक हजार गुना अधिक वजन उठाते हैं। कीड़े-मकोड़े वातावरण व परिस्थिति के साथ ताल मेल बिठाकर रहते हैं । मानव को इनसे कुछ सीखना चाहिए।

- पांडवनगर, दिल्ली

कहानी लिखो प्रतियोगिता – 62

दाएं बने चित्र को देखकर 14 वर्ष तक के बच्चे एक कहानी बनाकर संपादक बालप्रहरी, अल्मोड़ा उत्तराखंड-263601 के पते पर 15 जनवरी,2020 तक भेज कर प्रतियोगिता में निःशुल्क भाग ले सकते हैं। कहानी के नीचे अपना नाम व पता तथा उम्र लिखकर हस्ताक्षर करने हैं। सबसे अच्छी कहानी को बालप्रहरी में प्रकाशित किया जाएगा तथा उपहार में 200 रुपए की पुस्तकें भारत ज्ञान विज्ञान समिति अल्मोड़ा के सौजन्य से भेजी जाएंगी। कहानी लिखो प्रतियोगिता-61 के लिए निम्न कहानी का चयन किया गया। इन्हें पुरस्कार में पुस्तकें / पत्रिकाएं भेजी जा रही हैं।

काम का बंटवारा

सोनी, रवि और मोहित तीनों भाई-बहन स्कूल से आकर साथ खेलते। पिताजी और माताजी दोनों दिन में नौकरी पर जाते। दादी ही तीनों का ख्याल रखती। सुबह स्कूल का टिफन भी दादी ही तैयार करती।

दादी रवि और मोहित को अधिक प्यार करती। कहती सोनी तो पराए घर की बेटी है। इसे ज्यादा क्या पढ़ाना। वह घर के काम सोनी से ही कराती। रवि और मोहित बरतन मलते तो दादी को ये अच्छा नहीं लगता। कहती कि लड़कों को चूल्हे चौके का काम करना शोभा नहीं देता। चूल्हे चौके का काम तो लड़कियों को ही करना चाहिए। दादी हर समय रवि और मोहित का ही पक्ष लेती।

एक दिन की बात है। स्कूल में प्रधानाचार्य ने कहा कि सारे बच्चों को घर के कामों में माता-पिता का हाथ बंटाना चाहिए। भाई-बहन घर के कामों का आपस में बंटवारा कर लेंगे तो माता-पिता का काम कम हो जाएगा। ऐसा करने पर घर पड़ोस में शाबासी तो मिलेगी ही। बड़े होने पर जब नौकरी के लिए बाहर निकलेंगे तो उस समय किसी को ये नहीं लगेगा कि ये काम तो मुझे आता ही नहीं है। मोहित ने प्रधानाचार्य की बात गंभीरता से सुनी। उसे लगा कि घर पर हम भाई-बहन भी काम के कामों का बंटवारा कर सकते हैं।

स्कूल से आते समय रास्ते में मोहित ने सोनी और रवि से कहा," चलो! आज से हम भी अपने घर पर काम बांट लेते हैं।"

रवि ने कहा, "हम लोग काम करेंगे तो दादी का काम भी कम हो जाएगा।"

"चूल्हे चौके का सारा काम मैं करूंगी।" सोनी ने कहा।

रवि ने कहा, "हमारी एक बहन है। उससे हम ये सारा काम नहीं कराएंगे।"

सोनी ने कहा, "चलो कामों की लिस्ट बना लेते हैं। सारे काम बारी-बारी से हम सब करेंगे।"

तीनों ने एक साथ कहा,"ठीक है।" कहते हुए एक सूची बन गई। अब बारी-बारी से तीनों बच्चे अपने-अपने निर्धारित काम करते। भोजन कराते समय दादी पहले रवि और मोहित को भोजन कराती, बाद में सोनी को।

तीनों ने तय किया कि अब हम तीनों एक साथ भोजन करेंगे। बच्चों की बात दादी को भी माननी पड़ी। बच्चे तो खुश थे ही। दादी का काम भी कम हो गया था। दादी सब लोगों से अपने पोती और पोतों की तारीफ करती।

— अभय श्रीवास्तव, कक्षा 9
केंद्रीय विद्यालय पटना (बिहार)

(इसके अतिरिक्त आरती भोज (अल्मोड़ा), कंचन सिरस्वाल (चमोली), चांदनी मीणा (उदयपुर), हिमांशी रावत (पौड़ी), अंजली कश्यप (पटियाला), सीता (देहरादून) की कहानी भी प्रशंसनीय रही।)

संपादक

अनमोल वचन

- इच्छा से दुख आता है, इच्छा से भय आता है। जो इच्छाओं से मुक्त है, वह न दुख जानता है न भय। *- गौतम बुद्ध*
- जो दूसरों को जानता है, वह शिक्षित है किंतु जो स्वयं को पहचानता है, वह बुद्धिमान है। *- ताओजे*
- वस्तुतः यह संसार मिथ्या नहीं है, जोर देकर इसे मिथ्या कहने से क्या लाभ? *- रवींद्रनाथ टैगोर*
- आप कभी भयभीत, लज्जित या अपमानित महसूस नहीं किया करते हैं तो इसका अर्थ यह हुआ कि आप कभी जोखिम नहीं उठाते। *- जूलिया सौरेल*

संकलन - जी. आर.एस.यादव भाई, 28 प्रधानमंत्री सचिवालय अपार्टमेंट
विकासपुरी, नई दिल्ली- 11 00 28

पहेलियां

● आयुष मणी त्रिपाठी
दून पब्लिक स्कूल तरपालीसैण, पौड़ी

1. तीन अक्षर का मेरा नाम, कभी नहीं करती विश्राम, प्रथम कटे तो 'दिया' बन जाती, मध्य कटे तो 'नया' बन जाती। उल्टा सीधा एक समान अंत
2. दो अक्षर का मेरा नाम, बहुत अधिक है मेरा दाम, कट जाए यदि अंतिम अक्षर तो मैं नदी बन जाऊं।
3. दो दुबले कोल्हू के बैल, दोनों पड़े कांच के जेल, चक्कर बारह मील लगाएं, कभी-कभी होता है मेल।
4. बहुत बड़ा है मेरा पेट, लेता सारा जग समेट, रोज सवेरे आ जाता हूं, सब को ही मैं भाता हूं।

उत्तर: 1. नदिया 2. नीलम 3. घड़ी 4. आसमान

बालप्रहरी - वर्ग पहेली - 20 (उत्तर इसी अंक में)

1		2	3	■	4	5	6
	■	7		8	■	9	
10	11	■	12				
13		14	■		■		■
■	15		■	16	17	■	18
19		20	21	■	22		
23	24			25	■	■	
26		■	27		■	28	

बाएं से दाएं :

1. चांद पर नासा द्वारा भेजा गया अंतरिक्ष यान। (4)
4. मुसलमानों का पवित्र तीर्थ मक्का ... जहां हज के लिए जाते हैं। (3)
7. कक्ष (3)
9. पुरुष, मादा का विलोम। (2)
10. पद्य की रचना करने वाला। (2)
12. घर में ही घेराबंदी करके कैद करना। (5)
13. मल्लाह, नाव खेने वाला (3)
15. बिना सिर का शरीर (2)
16. क्रिकेट में दौड़ कर बनाते हैं। (2)
20. थोड़ा, अल्प। (2)
22. सरस्वती, विद्या की देवी। (3)
23. कविता, साहित्य, चित्र, मूर्ति आदि बनाने वाला। (5)
26. वृक्ष के नीचे वाला खंभा सा भाग। (2)
27. जड़ाऊं पत्थर, वस्तुओं की संख्या । (2)
28. वजनदार। (2)

ऊपर से नीचे :

1. पत्तियों की भांति प्रसन्न होकर चहचहाना या बोलना।(4)
2. तिब्बत, भूटान, नेपाल में पाया जाने वाला बैल के समान पशु। (2)
3. झुक कर प्रणाम करना। (3)
5. गरीबों का दुख दर्द बांटने वाला, सी.एफ.एंड्रयूज कहलाते थे। (4)
6. नारायण जपने वाला देवर्षि। (3)
8. अपना रहस्य जानने वाला। (4)
11. अनेक, कई प्रकार के। (3)
14. मेघों में बिजली की तेज कर्कश आवाज (4)
17. मादक वस्तुओं के सेवन से होता है। (2)
18. दक्षिण भारत की गंगा समान पवित्र नदी। (4)
19. शक्ल, आकृति, गुजरात का औद्योगिक नगर। (3)
21. घर, आवास, गृह। (3)
24. अनाज जिससे बेसन बनता है। (2)
25. नस, रूधिरवाहिनी। (2)

- प्रस्तुतिः सुधा जौहरी
ए-2 विजय पथ, तिलकनगर
जयपुर (राजस्थान)

कुमाउनी कविता :

एक द्वि तीन

● विनीता जोशी

एक, द्वि, तीन चार,
बुब जै रई बजार।
पांच, छै, सात, आठ,
नान नान बकारक पाठ।
नौ, दस, ग्यार, बार,
ऐ गो रे घुघुती त्यार।
तेर, चौद, पनर, सोल,
भिकानो ब्या छ भोल।
सतर , अठार, उनीस, बीस,
बादउ कू लाग गे तीस।

- तिवारीखोला
पूर्वी पोखरखाली, अल्मोड़ा
मोबाइल - 9411096830

गढ़वाली कविता :

बग्वाल

● डॉ. उमेश चमोला

झिलमिल-झिलमिल आइ बग्वाल,
भ्वीं अर सर्ग मा छाइ बग्वाल।
बम पटाखा की सूणी चोट,
गाजी लूकिन अपणा गोट।
उडीक राकेट न्यार मां जै,
न्यार मां तेन आग लगै।
पधनो कौं कू न्यार फुकी,
गाली खौला भोल छकी।

- एस. सी.ई.आर.टी.
ननूरखेड़ा, देहरादून,
मोबाइल- 7983569321

पहाड़ा ननां हाल-चाल

मितुरो,

पहाड़ा ननां हाल-चाल ठीकै छन। य बीच पहाड़ में पंचैती चुनाव छी। चुनाव में ननांल लै खूब नार् लगाई। पहाड़ पन य बीच रामलील है रछी। येति रामलील में राम,लक्ष्मण जसै एक्टर नानै बननी। क्वे जाग राम लक्ष्मण और सीता जसै एक्टर च्येली बननी। येती रामलील में राम, लक्ष्मण, रावण और दुसार एक्टर आपुण गीत और डॉयलॉक याद करनी। सबै पात्र एक्टिग लै खुदै करनी और गीत या डॉयलॉग लै खुदै कूनी। सबै एक्टर यानी पात्र एक महैण है जादे हारमोनियम और तबलै ताल में आपुण गीतै प्रैक्टिस करनी।

पहाड़ा गौनू नान तो खेति-पाती काम में लै मदद करनी। क्वे-क्वे नान तो घा लै काटनी। खेत बटी धान लै ख्वार में धरि बे घर तक ल्यूनी। खेति पाती काम में नान भौत मदद करनी। क्वे-क्वे नान तो पढ़ण-लिखण दगड़ै खेति पाती काम करते हुए आपुण दर्ज और स्कूल में लै फर्स्ट ऊनी। उनेरि सबै लोग तारीफ करनी।

दीवाई में बहुतै नान तिनौल अलबेर बम पटाखा नि जलाय। येति नान लै आब बहुत समझदार है गयी। गौं पना क्वे-क्वे नान तो शहरा ननां है लै जादे होशियार छन। बांकि फिर लेखूल।

तुमर मितुर,
प. गुसाईराम आचार्य

पहाड़ के बच्चों के हाल-चाल

दोस्तो,

पहाड़ के बच्चों के हाल-चाल ठीक हैं। इस बीच पहाड़ में पंचायतों के चुनाव थे। चुनाव में बच्चों ने भी खूब नारे लगाए। पहाड़ में इस बीच रामलीला भी हो रही थी। यहा। राम, लक्ष्मण जैसे पात्र बच्चे ही बनते हैं। किसी जगह तो राम, लक्ष्मण और सीता जैसे पात्र लड़कियां ही बनती हैं। यहां राम, लक्ष्मण, रावण और दूसरे पात्र अपना गीत और संवाद याद करते हैं। सभी पात्र एक्टिंग भी खुद करते है और गीत या डॉयलॉग भी खुद ही कहते हैं। सभी एक्टर यानी पात्र एक महीने से अधिक हारमोनियम और तबले की ताल में अपने गीत की प्रैक्टिस करते हैं।

पहाड़ के गांव के बच्चे तो खेती के काम में भी मदद करते हैं। कोई-कोई बच्चे तो घास भी काटते हैं। खेत से धान अपने सिर में रखकर घर तक लाते हैं। खेती के काम में बच्चे भी खूब मदद करते हैं। कोई-कोई बच्चे तो पढ़ने-लिखने के साथ खेती के काम करते हुए अपनी कक्षा और स्कूल में भी फर्स्ट आते हैं। उनकी सभी लोग तारीफ करते हैं।

दीपावली में बहुत से बच्चों ने इस वर्ष बम पटाखे नहीं जलाए। यहां के बच्चे भी अब बहुत समझदार हो गए हैं। गांव के कोई-कोई बच्चे तो शहर के बच्चों से अधिक होशियार हैं। बांकी फिर लिखूंगा।

तुम्हारा दोस्त,
प. गुसाईराम आचार्य

कहानी :

बादलों की कलाकारी

● गुडविन मसीह

चौथी कक्षा में पढ़ने वाली मुनिया जब भी आसमान में धुएं की तरह उड़ते हुए बादलों को देखती है, तो कौतुहल से भर जाती है। वह टकटकी लगाकर उन्हें तब तक देखती रहती है, जब तक ऊपर देखते-देखते उसकी गर्दन नहीं थक जाती है।

पल पल रंग बदलते इन बादलों को देखकर मुनिया मन-ही-मन मुस्कुराती है। उसे ऐसा लगता है, जैसे बादल भी उसकी ही तरह नटखट, चंचल, हंसमुख और शरारती होते हैं। बच्चों की तरह खेलते-कूदते, दौड़ते-भागते भी हैं। जब बादल बहुत तेजी से एक दिशा से दूसरी दिशा की तरफ जा रहे होते हैं, तो मुनिया को बहुत मजा आता है। उसे ऐसा लगता है जैसे बादल रेस लगा रहे हों, पकड़म-पकड़ाई खेल रहे हों। कभी काले बादल सफेद बादलों में जाकर मिल जाते और सफेद बादल काले बादलों में जाकर मिल जाते, तो मुनिया को लगता, जैसे वह लुका-छिपी का खेल, खेल रहे हों।

एक दिन तो मुनिया बादलों की चित्रकारी और कलाकारी को देखकर हतप्रभ रह गई। उसने देखा बादल का एक छोटा टुकड़ा बंदर बन गया। दूसरा टुकड़ा भालू बनकर खड़ा है। एक टुकड़ा मोर बना हुआ है, तो दूसरा टुकड़ा घोड़ा बना हुआ है। जिन्हें देखकर मुनिया जोर-जोर से ताली बजाकर हंसती है। वह अपने पापा को आवाज लगाकर कहती है, "पापा ... पापा ..., आप हो कहां, जल्दी बाहर आओ ...।"

"हां बोलो! क्या हुआ, क्यों इतनी जोर-जोर से चीख रही हो?" मुनिया के पापा ने बाहर आकर कहा।

"अरे हुआ कुछ नहीं, वह ऊपर देखिए।" मुनिया ने आसमान की तरफ इशारा करते हुए कहा।

"ऊपर ...?"

"हां! ऊपर आसमान में बादलों को ध्यान से देखिए। ऐसा लग रहा है, जैसे ये बादल तरह-तरह के जानवर बन गए हों?" मुनिया ने अचरज भरी आवाज में कहा।

"अरे हां! यह तो सचमुच भालू, बंदर, मोर और घोड़ा बने हुए हैं। ऐसा लग रहा है मुनिया! जैसे तुम्हें खुश देखकर आज बादल भी बहुत खुश हो रहे हों। तभी तो यह कलाकारी करके तुम्हें चिढ़ा रहे हैं।" मुनिया के पापा ने उसकी हां-में-हां मिलाते हुए कहा।

"अच्छा पापा! जब बादल खुश होते हैं तो यह हंसते हैं। बोलते हैं और दौड़ते-भागते हैं। लेकिन कभी-कभी इन्हें गुस्सा भी तो आता होगा। जब इन्हें गुस्सा आता होगा, तो ये क्या करते होंगे?"

मुनिया की बात पर उसके पापा पहले तो जोर से खिलखिला कर हंसे, फिर बोले, "जब बादल गुस्से में होते हैं तो क्या करते हैं, यह तुम्हें नहीं मालूम?"

"नहीं।" मुनिया ने एकदम कहा।

"याद करो मुनिया! अभी तीन दिन पहले, जब बादल जोर जोर से गरज रहे थे। आसमान में बिजली कड़क रही थी। जिसकी डरावनी आवाज को सुनकर तुम बुरी तरह घबरा गई थीं। तुम डर के मारे अपनी मम्मी से लिपट गई थी। उसके बाद क्या हुआ, तुम्हें कुछ याद है?"

"हां क्यों नहीं ! याद है, अच्छी तरह से याद है। बादलों के जोर-जोर से गरजने के बाद तेज बारिश होने लगी थी।" मुनिया ने बताया।

"अरे वाह, तुम्हें तो वाकई सब याद है। मुनिया! अब तो तुम्हें समझ में आ जाना चाहिए कि जब बादलों को गुस्सा आता है, तब वे खूब जोर-जोर से गरजने और बरसने लगते हैं।" उसके पापा ने उसे बताया।

"अच्छा पापा! आपसे एक बात पूछूं?"

"हां, पूछो क्या पूछना चाहती हो?"

"यही कि ये बादल बार-बार अपना रंग और आकृति क्यों बदलते रहते हैं?"

मुनिया के इस अप्रत्याशित प्रश्न पर उसके पापा एकदम मुस्कुरा पड़े और बोले, "बेटा! रंग बदलना, विभिन्न मुद्राएं और आकृतियों में परिवर्तित होना बादलों की प्रवृत्ति होती है। हमारी पृथ्वी पर बहने वाली नदियों, झीलों, तालाबों, सागरों और जलाशयों का पानी सूर्य की तपन से भाप में परिवर्तित हो जाता है। तब यही भाप वाष्प का रूप धारण करके हवा में घुल-मिल जाती है। फिर वाष्प मिली गर्म हवा हल्की होकर ऊपर आसमान में चली जाती है। यही वाष्प से भरी हवा, ऊपर जाकर एक स्थान पर इकट्ठी हो जाती है तो वह धुएं जैसे दिखाई देने लगती है। अलग-अलग आकृतियों और आकारों में नजर आने लगती है, जिसे हम बादल कहते हैं।"

"बेटा! जिन बादलों के ढेर में तुम्हें भालू, बंदर, मोर और घोड़ा नजर आ रहा है, उन बादलों को विज्ञान ने चार भागों में बांटा है। जो बादल एकदम सफेद होते हैं और देखने पर पक्षियों के पंख की तरह दिखाई देते हैं उन्हें सायरस बादल कहते हैं। यह बादल बर्फ के सूक्ष्म कणों से बनते हैं। इनकी ऊंचाई लगभग आठ हजार से ग्यारह हजार मीटर के बीच होती है।

धूल या धुंध की तरह दिखाई देने वाले बादलों की ऊंचाई ज्यादा नहीं होती है। इनकी ऊंचाई मात्र चौबीस सौ मीटर से पच्चीस सौ मीटर होती है। जिन्हें हम स्ट्रैटस बादल कहते हैं। यह बादल खराब मौसम और बूंदाबांदी होने का भी संकेत देते हैं। जिन बादलों को देखकर तुम्हें ऐसा लगे, जैसे आसमान में बर्फ से ढके सफेद पहाड़ या रूई के बड़े ढेर हैं। उन बादलों को करमुलस बादल कहते हैं। यह बादल बहुत ज्यादा ऊंचाई पर नहीं बनते हैं। यह मुश्किल से चौदह-पंद्रह सौ मीटर की ऊंचाई पर ही बनते हैं। और जो बादल भूरे काले रंग के भालू और बंदर की तरह दिखाई देते हैं। उन बादलों को विज्ञान निंबोस्ट्रैटस कहता है। ये वे बादल होते हैं, जो पृथ्वी पर बारिश करते हैं।"

बादलों का निर्माण कैसे होता है। यह जान कर मुनिया खुशी से एकदम उछल पड़ी और अपने पापा से बोली "अरे वाह पापा! आपको तो बादलों के बारे में सब कुछ मालूम है।"

"क्यों, मजा आया न बादलों की कहानी सुनकर?"

"सचमुच पापा, बहुत मजा आया। अब मैं अपने दोस्तों को भी सुनाऊंगी बादलों की कहानी।" कहकर मुनिया अपने पापा से लिपट गई।

- बरेली, उ.प्र.
मोबाइल- 8899793319

प्रेरक प्रसंग:

शास्त्री जी की ईमानदारी

● विमला जोशी 'विभा'

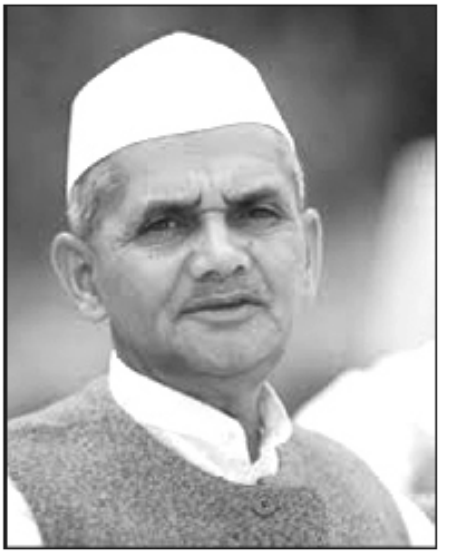

लाल बहादुर शास्त्री उन दिनों 6 वर्ष के थे। वे अपने दोस्तों के साथ पैदल ही स्कूल जाते थे। एक दिन स्कूल से वे लौट रहे थे। उनके सारे दोस्त रास्ते में आम के बगीचे में चले गए। वे भी उनके साथ चले गए। उन्होंने पेड़ पर पत्थर मारकर आम झाड़े। आम झाड़ ही रहे थे। इतने में बाग का माली आ गया। सारे दोस्त भाग गए। लाल बहादुर शास्त्री सबसे छोटे थे। वे माली की पकड़ में आ गए।

माली ने इन्हें पकड़कर मारना चाहा। लाल बहादुर शास्त्री ने कहा, ''मैं सबसे छोटा हूं। आप मुझे मत मारिए।''

उनकी बात सुनकर माली को दया आ गई। माली ने कहा, ''तुम्हें अच्छा आचरण सीखना चाहिए। कभी चोरी नहीं करनी चाहिए।''

माली की कहीं बात का उन पर इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि वे जीवनभर ईमानदारी की राह पर चले। आज भी भारत के पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री को उनकी ईमानदारी के लिए जाना जाता है।

- नवाबी रोड, हल्द्वानी, नैनीताल
मोबाइल- 9458355474

वर्ग पहेली 20 का उत्तर

1 च	न्द्र	2 या	न		4 म	5 दी	6 ना
ह		7 क	म	8 रा		9 न	र
10 क	11 वि		12 न	ज	र	बं	द
13 ना	वि	14 क		दा		धु	
	15 श्र	द्ध		16 र	17 न		18 गो
19 सू		20 क	21 म		22 शा	र	दा
23 र	24 च	ना	का	25 र			व
26 त	ना		27 न	ग		28 भा	री

उत्तराखण्ड शासन
20वें
उत्तराखंड
राज्य स्थापना दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं
9 नवम्बर
उत्तराखण्ड के सम्मानित भाइयों और बहनों,
उत्तराखण्ड राज्य स्थापना दिवस की आप सभी को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं। मैं, उत्तराखण्ड राज्य निर्माण के सभी अमर शहीदों और आंदोलनकारियों को श्रद्धापूर्वक नमन करता हूँ। उत्तराखण्ड देवभूमि ही नहीं, वीरभूमि भी है। मैं, भारत माता की रक्षा के लिए सर्वोच्च बलिदान देने वाले वीर जवानों को भी श्रद्धापूर्वक नमन करता हूं।
आइये! राज्य स्थापना दिवस के इस पावन अवसर पर संकल्प लें कि हम सब मिलकर एक आदर्श उत्तराखण्ड का निर्माण करेंगे।
एक बार पुनः आप सभी को राज्य स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।
जय हिन्द , जय उत्तराखण्ड।
त्रिवेन्द्र सिंह रावत
मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड
त्रिवेन्द्र सिंह रावत मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड
सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग, उत्तराखण्ड द्वारा जनहित में जारी | www.uttarainformation.gov.in UttarakhandDIPR DIPR_UK
महिला हेल्पलाइन नं. 1090 | किसान कॉल सेंटर नं. 1551 | सी.एम.हेल्पलाइन नं. 1905 | चाइल्ड हेल्पलाइन नं. 1098 | आयुष्मान उत्तराखण्ड हेल्पलाइन नं. 104 | आपदा कॉल सेन्टर नं. 1070

पेड़

● दामोदर जोशी 'देवांशु'

आओ मिलकर पेड़ लगाएं,
धरती का श्रृंगार बढ़ाएं।
शोभा वाले पेड़ लगाएं,
छाया वाले पेड़ लगाएं।
फल फूलों के पेड़ उगाएं,
गृह-वाटिका सदा सजाएं।
पेड़ होंगे तो होंगे हम,
पेड़ बिना निकलेगा दम।
पेड़ होंगे बरसेगा जल,
धरती का न तपेगा तल।
पेड़ होंगे तो नदियां होंगी,
रोशन पूरी सदियां होंगी।
पेड़ लगाना धर्म हमारा,
पेड़ लगाना कर्म हमारा।
वायु के सुंदर झौंके ले लो,
फिर बहारों से तुम खेलो।
पेड़ लगाना बड़ा काम है,
पेड़ बचाना बड़ा नाम है।
कहीं जले न कोई जंगल,
तभी होगा जंगल में मंगल।

- संपादक कुमगढ़, पश्चिमीखेड़ा, काठगोदाम, नैनीताल
मो. - 9719247882

भगवान

● महेंद्र जैन

दादी से गुल्लू ने पूछा,
कहां बसे भगवान?
क्यों ना वो दिखलाई देता,
क्या उसकी पहचान?
दादी ने उसको समझाया,
कण-कण में भगवान।
सब के दिल में वो रहता है,
यह उसकी पहचान।
उपवन में वो फूल खिलाता,
खेतों में वो धान।
जीव जंतु, नर नारी सब हैं,
उसकी ही संतान।
सागर, पर्वत, नदियां, झीलें,
सब उसका वरदान।
सूरज, चांद, सितारों से है,
उसकी ऊंची शान।
हर संकट में साथ सभी के
रहता है भगवान।
पर्यावरण को रखो साफ,
यदि चाहो कल्याण।

- 871, सेक्टर-13, हिसार (हरियाणा)
मो. - 9416674411

पापा

● अनारसिंह वर्मा

प्यार लुटाते हैं पापा,
जोश बढ़ाते हैं पापा।
प्रतिदिन साथ हमें लेकर,
सुबह घुमाते हैं पापा।
जून की छुट्टी में हमको,
देश दिखाते हैं पापा।
नई किताबें पढ़ने को,
घर में लाते हैं पापा।
कठिन चीज को सरल बना,
हमें सिखाते हैं पापा।
सच्ची-अच्छी बातें भी,
खूब सिखाते हैं पापा।
तरह-तरह की कविताएं,
रोज सुनाते हैं पापा।
आजादी की घटनाएं,
हमें सुनाते हैं पापा।
कल का भारत हैं बच्चे,
हमें बताते हैं पापा।

गली लक्ष्मी टॉकीज, दीनदयाल कॉलोनी,
कासगंज-207123
मोबा. - 9720625646

व्यक्तित्व:

झांसी की रानी लक्ष्मी बाई

'खूब लड़ी मर्दानी, वह तो झांसी वाली रानी थी।' कविता अधिकतर बच्चों ने सुनी होगी। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई का जन्म 19 नवंबर,1828 को वाराणसी के भदैनी में हुआ था। उनके बचपन का नाम मणिकर्णिका था। सब लोग उन्हें प्यार से 'मनु' कहते थे। कुछ लोग 'छबीली' नाम से भी उन्हें पुकारते।

उनकी माता का नाम भागीरथी व पिता का नाम मोरोपंत तांबे था। जब वे चार साल की थी। उनकी मां की मृत्यु हो गई। मनु की देखभाल के लिए घर में कोई नहीं था। इस कारण उनके पिता मोरोपंत उन्हें अपने साथ बाजीराव के दरबार में ले जाते।

सन् 1842 में मनु का विवाह झांसी के राजा गंगाधर राव नेवलकर के साथ हुआ। तब से वे झांसी की रानी हो गईं। विवाह के बाद उनका नाम लक्ष्मी बाई रखा गया।जन्म के चार माह बाद उनके इकलौते पुत्र की मृत्यु हो गई। उन्होंने एक पुत्र गोद लिया। उस दत्तक पुत्र का नाम दामोदर राव रखा गया। पुत्र गोद लेने के कुछ समय बाद गंगाधार राव की मृत्यु

हो गई। गंगाधर राव की मृत्यु के बाद ब्रिटिश सरकार ने दत्तक पुत्र को राज्य का उत्तराधिकारी मानने से इंकार कर दिया। झांसी को अंगरेजों ने अपने राज्य में मिलाने की बात कही। लक्ष्मीबाई को अंगरेजों की शर्त मंजूर नहीं थी। उन्होंने अंगरेजों के खिलाफ लड़ाई लड़ी। 18 जून,1858 को ग्वालियर के पास ब्रिटिश सेना से लड़ते हुए वे वीरगति को प्राप्त हुईं। लक्ष्मीबाई भारतीय वतंत्रता संग्राम सेनानी की वीरांगना बनी। उन्होंने 23 साल की उम्र में अंगरेजों के खिलाफ मोर्चा संभाला। 19 नवंबर को लक्ष्मीबाई की जयंती पर उन्हें शत-शत नमन।

● आभा काला, तरपालीसैण, पौड़ी

कहानी:

आज का एकलव्य

● रघुराज सिंह कर्मयोगी

"कहां चली जाती है ये लड़की? बाट जोहते-जोहते सूरज मत्थे पर चढ़ आया। ये है कि घर आने का नाम ही नहीं लेती। रोटियां भी सूख कर पापड़ हो गई हैं।'' फातिमा ने कहा। जो घर में कभी अंदर जाती तो कभी चौखट तक आकर रुक जाती।

"यहीं कहीं गई होगी शायद किसी पड़ोसी के घर। क्यों व्यर्थ में चिंता करती हो। आ जाएगी थोड़ी देर में। बच्ची ही तो है, कहीं खेल में लग गई होगी।'' मुनव्वर खान ने कहा।

वह तबस्सुम का पिता था। सड़क किनारे मोटर-साइकिलों की मरम्मत तथा पंचर जोड़ने की उसने छोटी-सी दुकान लगा रखी थी। तबस्सुम और उसका भाई अनवर, दो बच्चे थे उसके। तबस्सुम जरा-सी कहीं चली जाती, तो फातिमा का दिल धक-धक करने लगता। मुनव्वर को पता चलता तो उसका भी मन पंचर जोड़ने में नहीं लगता।

"अब चुप हो जा और शांति से जा घर। मैं अभी ढूंढ़ कर लाता हूं। इस छोटी-सी लड़की ने तो मेरा लहू पी रखा है।" मुनव्वर गुस्से से बोला। उसने ग्राहक को विनम्रता से कह दिया कि शाम को आकर मोटर साइकिल ले जाए, तैयार मिलेगी।

मुनव्वर छोटे से गांव का निवासी था। जो जयपुर जाने वाले राजमार्ग के किनारे बसा था। पास में ही निशानेबाजी सीखने वालों के लिए शूटिंग रेंज थी। ज्यादातर गांव के बच्चे गुल्ली डंडा और कंचा खेलने में मस्त रहते। तबस्सुम को यह सब स्वीकार नहीं था। वह निशानेबाजी देखे बिना नहीं रह पाती और सुबह-सुबह शूटिंग रेंज चली जाती।

"अच्छा, यहां चुपचाप बैठी है। तेरी मां घर पर प्रतीक्षा कर रही है। एक तू है कि शूटिंग रेंज पर निशानेबाजी देखने में मगन है।'' पिता मुनव्वर ने कहा तो तबस्सुम चौंक पड़ी। पीछे मुड़कर देखा तो पिता खड़े थे, सो सहम गई। उसने साहस बटोरा और बोली, "पापा! मुझे भी बंदूक दिला दो न। मैं भी इनकी तरह निशानेबाज बनूंगी।''

बाल रचनाकारों की राष्ट्रीय त्रैमासिक पत्रिका
अभिनव बालमन
एक प्रति - 30 रुपए,
तीन वर्ष की सदस्यता- 400 रुपए
आजीवन सदस्यता - 1200 रुपए
संपादक : निश्चल
संपर्क सूत्र:
'शारदायतन', 17/238 जेड 13/59 पंचनगरी, सासनीगेट,
अलीगढ़, उ.प्र. - 202001
मो. 90840232217, 9719007153

"चल उठ यहां से। बड़ी आई निशांची बनने। चड्डी तक तो धो नहीं पाती। निशानेबाज बनेगी। एक ल्हापा दूंगा। सब अकल ठिकाने आ जाएगी।" पिता ने कहा। जिसके हाथ काले-पीले हो रहे थे और पेंट बुशर्ट भी मोटर साइकिलों की मरम्मत करने से काले-काले हो गए थे। वह पुनः बोला, "खाना नहीं खाएगी क्या? दोपहर का एक बजने को आ गया।" पांच साल की बच्ची थी तबस्सुम। वह उठी और पापा की उंगली पकड़ कर लटक गई। खिलखिला कर हंस पड़ी तो मुनव्वर का सारा गुस्सा काफूर हो गया।

"महारानी कहां गई थी? राह देखते-देखते मेरी आंखें पथरा गई। प्रतीक्षा में खाना तक नहीं खाया है।'' घर की तरफ आते देख फातिमा उसकी तरफ लपकी और पिल पड़ी, लगी व्यंग्य बाण छोड़ने। छोटी-सी बच्ची क्या कहती। सो पापा के पैरों में लिपट गई। मुनव्वर का दिल पसीज गया और बोला, "अब बस भी कर फातिमा! ऊपर से तो गुस्सा दिखाती है। मैं जानता हूं कि दोनों बच्चों के लिए तेरे मन में कितना प्यार हैं।''

"मैं कहे देती हूं कि मुझे बताए बिना तू कहीं नहीं जाएगी।'' फातिमा ने तबस्सुम को पकड़ कर झिझोड़ दिया और पलट कर पुनः कहने लगी, ''देखो जी! इसको सरकारी स्कूल में पढ़ने के लिए भर्ती करा दो। कुछ जमात पढ़ लेगी तो अच्छी रहेगी।'' उसका गुस्सा अब शांत हो चुका था।

"बेटी तबस्सुम! हाथ-मुंह धोकर आ। बाप-बेटी और मम्मी तीनों मिलकर एक साथ खाना खाएंगे।'' मुनव्वर ने कहा तो फातिमा ने 'हां' में सिर हिलाया और रोटियां, दाल-सब्जी फिर से गर्म करके कमरे में ले आई। तीनों ने मिल कर खाना खाया।

अगले दिन मुनव्वर पहली कक्षा की किताबें बाजार से खरीद कर लाया। तबस्सुम का दाखिला कराने के लिए स्कूल पहुंचा। सामने हैड मास्टर का कक्ष था। उसने स्कूल में प्रवेश के लिए प्रार्थना की तो हैड मास्टर ने फार्म भर कर देने और फीस जमा करने के लिए कहा। मुनव्वर प्रक्रिया पूरी करके उसे स्कूल में छोड़ आया।

तबस्सुम धीरे-धीरे बड़ी हो रही थी। उसका मन अब पढ़ाई में नहीं लग रहा था। वह चुपचाप शूटिंग रेंज की तरफ निकल जाती। मास्टर जी उसे ढूंढ़ने के लिए बच्चों को इधर-उधर दौड़ाते। आखिरकार तंग आकर क्लास टीचर ने मुनव्वर को बुला भेजा कि वह शीघ्र हैड मास्टर से मिले।

"मुनव्वर जी! हम तबस्सुम को नहीं पढ़ा सकते। अच्छा होगा तुम इसे घर ले जाओ। किसी दिन गुम हो गई तो आरोप स्कूल पर आएगा।" हैड मास्टर ने कहा। उनका निर्णय सुनकर थूक हलक में अटक गया। गिड़गिड़ाता हुआ बोला, "मैं जानता हूं मास्साब! तबस्सुम बहुत शैतान लड़की है। उसका मन पढ़ाई में नहीं लगता है। मगर एक अवसर दीजिए उसे सुधरने का। शायद वह मन लगा कर पढ़ सकेगी।''

"नहीं! ऐसा नहीं हो सकता। यह चुपके से शूटिंग रेंज की तरफ निकल जाती है। वहां बैठ कर घंटों तक निशानेबाजी देखती रहती है।" हैड मास्टर ने कहा।

"मैं जानता हूं कि इसका मन निशानेबाजी में लगता है। यह एकलव्य बनने का सपना संजोए हुए है। कच्ची उमर की है। इसके लिए पढ़ना-लिखना उचित है, न कि भारी भरकम बंदूक उठाना।'' कहते हुए मुनव्वर ने विनम्रतापूर्वक स्कूल में पढ़ने के लिए हैड मास्टर को राजी कर लिया। घर लौटा तो फातिमा ने पूछ ही लिया, "क्यों री! कहां चली जाती है? स्कूल में पढ़ने भेजा जाता है या मटरगस्ती करने। अरे पढ़ लेगी तो कुछ बन जाएगी। नहीं तो मेरी तरह चूल्हा-चक्की की भट्टी में पिसती रहेगी।''

"मैं पढ़ना नहीं चाहती। बंदूक चलाना सीखूंगी। बड़े होकर निशानेबाजी की बड़ी प्रतियोगिताओं में भाग लेकर ढेर सारे मैडल जीतूंगी। मां देखना खूब पैसा कमाऊंगी। तुम्हारा नाम रोशन कर दूंगी।" तबस्सुम ने कहा।

जो छोटे मुंह बड़ी बात लग रही थी। उसकी डिब्बी में पैन, पेंसिल, रबर की जगह छर्रे भरे होते थे। जिन्हें वह शूटिंग रेंज से बटोर कर ले आती। एक दिन मुनव्वर के साथ मेला देखने गई तो खिलौना बदूंक के लिए मचल गई। पिता को विवश होकर दिलानी पड़ी। अब वह चुपचाप घर के एक कोने में निशाना लगाया करती।

एक दिन तबस्सुम अकेले निशानेबाजी का खिलौना बदूंक से अभ्यास कर रही थी। वह जब भी छर्रा छोड़ती सीधा निशाने पर लगता। मुनव्वर और फातिमा सांस साधे चुपचाप उसे देख रहे थे। वह इस तरह लक्ष्य बेधती जैसे अर्जुन चिड़िया की आंख पर निशाना लगाता था। " शाबाश, बेटी तबस्सुम! क्या निशाना लगाती हो एकलव्य की तरह। बिना किसी गुरू के। बिना किसी विधिवत शिक्षा के।" मुनव्वर और फातिमा बोले। जो उसके पीछे चुपचाप खड़े होकर दृश्य देख रहे थे।

खिलौना बंदूक से तबस्सुम सफलतापूर्वक निशानेबाजी सीखती रही और अचूक निशाना लगाने में पारंगत होती रही। इसका पता उसके स्कूल अध्यापकों को भी चल गया। वे भी तबस्सुम को निशानेबाजी के लिए प्रोत्साहित करते रहे। वे समझ चुके थे कि तबस्सुम को निशानेबाजी से रोकना उचित नहीं। एक दिन वह स्कूल का नाम अवश्य रोशन करेगी। कुछ दिन बाद समाचार-पत्रों के माध्यम से जिला स्तरीय निशानेबाजी प्रतियोगिताओं के बारे में अध्यापकों को पता चला। मन में उमंगों का गुबार लिए अध्यापक संजय शर्मा मुनव्वर के घर पर जा पहुंचे। "क्या बात है मास्टर जी! आज मुझ गरीब के घर कैसे पधारे?" मुनव्वर बोला। जो दुकान से थका हारा शाम को घर लौटा था। नहा-धोकर ताजा होने के बाद चाय पीने बैठा ही था। "स्कूल के अध्यापकों ने आपकी बेटी की प्रतिभा को पहिचाना है। इसीलिए सबने मिलकर चंदा एकत्रित किया है। मैं वह राशि तुम्हें देने आया हूं। आप तबस्सुम को निशानेबाजी सीखने के लिए बंदूक खरीद कर दिला देना।'' संजय शर्मा बोले।

"मगर मास्टर जी आप खड़े क्यों हैं। अंदर आइए और बैठकर मेरा आतिथ्य ग्रहण कीजिए।" मुनव्वर ने कहा। वह अंदर गया। एक छोटा-सा लकड़ी का बना हुआ मुड्डा ले आया।

"हमारे हैड मास्टर जी अच्छी तरह जान चुके हैं कि तबस्सुम उनके स्कूल का नाम अवश्य रोशन करेगी। इसीलिए मुझे आपके पास चंदे की धन राशि देकर भेजा है।"। संजय शर्मा ने मुड्डे पर बैठते हुए कहा।

"आपकी विशेष कृपा हुई मुझ गरीब पर। मगर मुझे नहीं पता, बंदूक कहां मिलेगी? आप स्वयं खरीद कर ले आते तो उपकार होता।" मुनव्वर ने कहा। मुनव्वर अब अध्यापकों के बदले हुए व्यवहार से अत्यंत प्रभावित हुआ।

"मैं कल तबस्सुम को बंदूक लाकर दे दूंगा। मगर ध्यान रखना, अगले सप्ताह 20 तारीख को जिला स्तरीय प्रतियोगिता उदयपुर में हो रही है। वहां तबस्सुम को ले जाना मत भूलना।" अध्यापक संजय शर्मा ने समझाते हुए कहा।

अगले दिन संजय शर्मा उदयपुर जाकर बंदूक ले आए और तबस्सुम को बंदूक दी तो उसने बंदूक को चूम लिया। उपकार भाव से मन ही मन अध्यापक को धन्यवाद किया। दौड़ी-दौड़ी मां के पास पहुंची और मां को दिखाती हुई बोली, ''देखो न मां! मास्टर जी मेरे लिए बंदूक लाए हैं।" फातिमा ने तबस्सुम के हाथों में बंदूक देखी तो मन ही मन प्रसन्न हुई।

अब तबस्सुम बंदूक पाकर सघन अभ्यास में जुट गई। उसे खाना खाने तक की चिंता न रहती। लकड़ी के फट्टे पर काले रंग से गोले खींच लिए। उसे खड़ा कर निशाना लगाती रहती। अब उसे पूरा विश्वास हो चला था कि वह लक्ष्य को शत प्रतिशत बेध सकती है। "पापा मुझे शूटिंग रेंज ले चलिए न। मैं शूटर बनना चाहती हूं।'' तबस्सुम ने फिर कहा।

"छोटी-सी उमर में इतना बड़ा सपना।" मुनव्वर बोला। "इसकी दिमागी फिटनैस तो देखिए कितनी गजब की है। इतनी तो बड़ों की भी नहीं होती है। मेरी मानो तो बच्ची की इच्छा को

पूरा करना ही अच्छा विकल्प है। इसे शूटिंग रेंज के अफसरों से मिलकर वहां भर्ती करवा दो।" फातिमा बोली।

"मगर फातिमा! इतना आसान नहीं है यह सब। एक तो इसकी उमर कम है। दूसरे हमारे पास इतने पैसे भी नहीं हैं कि निशानेबाजी सीखने के लिए वहां फीस भर सकें। ले-दे कर महीने में दो तीन हजार कमाता हूं।'' मुनव्वर बोला।

"कुछ भी सही बच्ची का दिल मत तोड़ो मुनव्वर! उसकी इच्छा है तो चाहे कर्जा करना पड़े। इसे किसी भी कीमत पर शूटिंग रेंज में भर्ती करवा दो'' फातिमा ने कहा।

"तुम ठीक कह रही हो फातिमा! पूत के पांव पालने में दिखते हैं। यह शूटर बन कर ही रहेगी। मगर क्या करूं? घर की माली हालत तो तुम देख रही हो। मैं मोटर साइकिल के पंचर जोड़ कर ही तो धन कमाता हूं। छोटी-सी आमद से घर का पालन-पोषण कर रहा हूं। मैं मन मसोस कर रह जाता हूं। जब देखता हूं कि पड़ोस में मुखिया जी के यहां दूध वाला रोजाना समय से दूध दे जाता है। अखबार वाला सुबह-सुबह अखबार पटक जाता है। उनके माथे पर शिकन तक नहीं आती है। सबका बिल बिना किसी हील हुज्जत के दे देते हैं।" मुनव्वर ने कहा।

"मैं तो कहती हूं तबस्सुम के पापा! आप मुखिया जी से बात करो। उन्हें लेकर रेंज के अफसरों से मिलो। शायद बात बन जाए।'' फातिमा ने तबस्सुम के सिर पर हाथ फेर कर कहा। फातिमा की सलाह मुनव्वर की समझ में आ रही थी। वह उससे सहमत भी था। काम का दबाव आ जाने से वह उस दिन मुखिया जी के पास न जा सका। अगले माह के प्रथम सप्ताह में मुखिया के यहां पहुंचा। वहां देखा तो उनके पास मस्जिद के इमाम हाफिज जी बैठे थे। मुनव्वर सहम गया और भयग्रस्त भाव लिए साहस बटोर कर धीरे से बोला, "मुखिया जी! मेरी बेटी तबस्सुम निशानेबाज बनना चाहती है। इसकी अभिरूचि देखकर मैं भी इसकी होंसला अफजाई करते हुए शूटिंग रेंज में इसे भर्ती कराना चाहता हूं। इस पवित्र कार्य में आप मेरी सहायता करेंगे तो मुझे अच्छा लगेगा। इसके लिए मेरे ऊपर आपकी विशेष कृपा होगी।"

इससे पहले कि मुखिया जी कुछ कहते। हाफिज जी ने तबस्सुम के ऊपर एक कटु दृष्टिपात किया और कहने लगे, "भाई मुनव्वर! यह ठीक है कि आप अपनी बेटी को शूटर बनाना चाहते हैं। मेरी मानो अभी इसकी उमर शूटिंग सीखने की नहीं है। अच्छा होगा आप इसे कुरान याद कराओ। कम से कम इस्लाम के बारे में इसके ज्ञान का विस्तार होगा। नहीं तो इसकी शादी कर दो। बुजुर्गों ने कहा है बेटी की शादी करना मां-बाप के लिए स्वर्ग जाने हेतु सीढ़ी बनाने जैसा है।''

"नहीं नहीं ऐसी बात नहीं है। प्राचीन काल में केवल राजपुत्र ही धनुर्धर बन सकते थे। एकलव्य जो कि आदिवासी युवक था। उसे श्रेष्ठ धनुर्धर की विशेष अभिलाषा थी। उसने आचार्य द्रोण की मिट्टी की मूर्ति बनाकर उसे अपना आदर्श बनाया और धनुर्विद्या का अभ्यास करने लगा। एकलव्य अपने अभ्यास से धर्नुविद्या में पारंगत हो गया। किंतु राजपुत्रों की बराबरी करना उसे भारी पड़ गया और षड़यंत्र का शिकार हो गया। फलस्वरूप उसे अपना अगूंठा देना पड़ा था। मगर आज विज्ञान का युग है। प्रत्येक व्यक्ति किसी भी तरह की शस्त्र विद्या सीखने के लिए स्वतंत्र है। उसे अपना अगूंठा देने की आवश्यकता नहीं हैं।" मुखिया जी ने कहा तो हाफिज जी फीकी हंसी हंस कर रह गए। आगे कुछ न बोल सके।

"मुखिया जी आप मेरे ऊपर यह उपकार करेंगे न। मेरी बेटी को किसी तरह शूटिंग रेंज में प्रवेश दिला दीजिए।" मुनव्वर विनम्रता से बोला। उसके चेहरे पर आत्मविश्वास झलक रहा था।

"ठीक है। मैं बच्ची के सपनों के बीच नहीं आना चाहता। इस महान कार्य के लिए मैं तेरे साथ हू। मैं साथ चलने को तैयार हूं। मुखिया ने कहा तो हाफिज जी का हृदय परिवर्तन हो गया और वह बोले, ''मुखिया जी मैं भी आपके साथ चलने के लिए तैयार हूं।''

"अच्छा तो फिर चलें।" मुखिया जी ने कहा और थोड़ी देर में शूटिंग रेंज के अधिकारी के पास पहुंच गए। अधिकारी अपने कक्ष में बैठे थे। सामने अतिथियों के बैठने के लिए सोफा पड़ा था। उनके शूटरों ने प्रतियोगिताओं में जो ट्राफियां जीती थीं। वे सब कांच की अलमारी में रखी थीं। मेज पर एक ग्लोब भी रखा था। बांकी ट्राफियां कांच की अन्य केबिन में रखी थीं। अधिकारी स्वयं मजबूत कद काठी के स्वामी प्रतीत हो रहे थे। तीनों के साथ तबस्सुम भी गई थी। अधिकारी का अभिवादन किया तो उन्होने संकेत से बैठने को कहा। चारों सोफे पर बैठ गए। अधिकारी ने सरसरी दृष्टि आगंतुकों पर डाली और बोले, ''कहिए मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं। आदेश कीजिए।"

"आदेश नहीं सर! हम आपके पास एक निवेदन करने आए हैं। अगर मान लेंगे तो हम अपने को धन्य समझेंगे।'' मुनव्वर ने कहा।

"हां, हां कहो क्या बात है?"

"ये मेरी बेटी तबस्सुम है सर जी। यह बहुत अच्छी निशानेबाज है। इसे शूटिंग रेंज में अभ्यास के लिए अनुमति देने का कष्ट करेंगे तो हमें अच्छा लगेगा।'' मुनव्वर बोला। अधिकारी ने तबस्सुम को एक नजर नीचे से ऊपर तक देखा। परखने के बाद बोले, ''इसकी उम्र क्या है?''

"मात्र आठ साल।"

"आप जानते हैं आप क्या निवेदन लेकर मेरे पास आए हैं?"

"यही कि शूटिंग रेंज में तबस्सुम को अभ्यास के लिए प्रवेश दिलाना है।"

"देखो मुखिया जी, हाफिज जी और मुनव्वर! बुरा मत मानना। इस लड़की की आयु अभी खेलने-कूदने की है न कि बंदूक उठाने की।" मुनव्वर का तो चेहरा ही उतर गया। साहस बटोर कर बोला, "मैं जानता हूं सर, तबस्सुम कम उम्र की है। उसके कंधे बंदूक उठाने में समर्थ नहीं हैं। मगर फिर भी आप उसकी निशानेबाजी देख लें। तत्पश्चात किसी निर्णय पर पहुंचें।"

"तो क्या आप चाहते हैं कि इस लड़की को अभ्यास कराने और बंदूक साधने के लिए एक अतिरिक्त आदमी लगा दूं।"

"नहीं, नहीं मैंने ऐसा तो नहीं कहा।"

"फिर क्या आशय है आपका?"

"तबस्सुम निशानेबाजी में काफी निपुण हो चुकी है। इसे अभ्यास की आवश्यकता है। इसे नई-नई तकनीकों की जानकारी चाहिए। जिससे प्रतियोगिताओं में भाग ले सके।"

"मुनव्वर मियां इसे स्कूल में पढ़ने दो। इसके कंधों में इतनी ताकत नहीं है कि वे बंदूक का झटका झेल सकें।"

"मान्यवर! एक बार पुन: अपने निर्णय पर विचार करें। और इसे अभ्यास के लिए अनुमति देकर हमें कृतार्थ करें।" हाफिज और मुखिया ने कहा तो खेल अधिकारी ने सिर पकड़ लिया। बोले, "तुम्हारी यही जिद है तो कल से इसे प्रैक्टिस के लिए भेज दो।" तबस्सुम अधिकारी का निर्णय सुन कर उछल पड़ी। मुखिया, मुनव्वर और हाफिज के चेहरों पर मुस्कान की रेखा खिंच गई। वह खुशी-खुशी घर लौट आए। अगले दिन से मन लगा कर तबस्सुम निशानेबाजी का अभ्यास करने लगी। उसे जिला स्तरीय प्रतियोगिता में भाग जो लेना था। निश्चित समय पर मुनव्वर, तबस्सुम को लेकर उदयपुर पहुंचा। समस्याओं ने यहां भी उसका पीछा न छोड़ा। दिल्ली से आए कोच ने प्रतियोगिता में उतरने से पहले मना कर दिया। उसने कहा, ''तबस्सुम छोटी है और उससे बंदूक नहीं उठती है। उसे सहयोगी नहीं दिया जा सकता। इसलिए वह प्रतियोगिता में भाग नहीं ले सकती।"

"देखिए मेरी बेटी को एक बार प्रतियोगिता में उतरने तो दीजिए। फिर देखना उसकी प्रतिभा।" मुनव्वर बोला।

"खेलों के भी कुछ नियम होते हैं। तुम्हारे लिए नियम बदले तो नहीं जा सकते। फिर नियमों में फेर बदल करना उसको दी गई शक्तियों से परे है। इसलिए खेद प्रकट करता हूं।" कोच ने कहा जो टस से मस होने को तैयार नहीं था।

"मैं आपको सिर्फ इतना कहूंगा कि आप एक बार उसकी निशानेबाजी देख लें। आपको शिकायत का अवसर नहीं मिलेगा।'' मुनव्वर ने कहा। काफी मान मनौबल के बाद कोच राजी हो गया। अगले दिन मुनव्वर समय से प्रतियोगिता स्थल पर पहुंच गया। तबस्सुम को टीम मे शामिल कर लिया। तबस्सुम क्या निशाने पर निशाना साधे जा रही थी। जो देखते ही बनता था। कोच ने दांतों तले उंगली दबा ली। तबस्सुम का प्रदर्शन देखकर कोच के क्रोध की बर्फ पिघल गई। प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए जो स्टेंडर्ड निशानेबाजी की होती है। उसने 25 नंबर की गन नि:शुल्क देने की घोषणा कर दी। प्रतियोगिता में भाग लेने की स्वीकृती दे दी। तबस्सुम ने प्रथम स्थान प्राप्त किया प्रतियोगिता में। दिल्ली से आए कोच और खेल अधिकारी दोनों खुश थे। खेल अधिकारी ने राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में भी उसका नाम आगे कर दिया। तबस्सुम, मुनव्वर और फातिमा के पैर धरा पर नहीं टिक रहे थे। गुलाब की पंखुड़ियों से भी अधिक प्रसन्न थे तीनों।

- IIIrd एवेन्यु, आदर्श कोलोनी, डडवाड़ा, कोटा जं., राजस्थान
मोबाइल - 8118830886

आओ खेलें खेल : नेताजी की खोज

इस खेल में सारे बच्चे गोल घेरे में बैठेंगे। बच्चों में से एक बच्चा घेरे से दूर या कमरे से बाहर जाएगा। अंदर गोल घेरे में बैठे बच्चे अपना एक नेता चुनेंगे। प्रारंभ में खेल कराने वाले बड़े लोग भी नेता चुन सकते हैं। नेता बना वह बच्चा ताली बजाने, चुटकी बजाने, एक हाथ हिलाने जैसी अलग-अलग गतिविधियां करेगा। यानी नेता अपना एक्शन/गतिविधि बदलते रहेगा। नेता के साथ ही दूसरे बच्चे भी उसी अनुसार एक्शन करेंगे। जैसे ही नेता का चयन हो जाएगा। बाहर गया बच्चा अंदर आएगा। उसे पता लगाना है कि कौन नेता है। किसके इशारे पर अन्य बच्चे एक्शन कर रहे हैं। सारे बच्चे 'नेता-नेता चाल बदल' गीत को कभी ऊंचे स्वर में तो कभी हल्के स्वर में गाते रहेंगे। बाहर गए बच्चे को जिस पर शक होगा वह उसके सिर पर हाथ रखेगा। उसे दो चांस मिलेंगे। तीसरे चांस में यदि वह नहीं बता पाता है तो नेता बना बच्चा उसे गीत/कविता कहने, नृत्य करने या अन्य गतिविधि के लिए कहेगा। उसके बाद जो अभी तक नेता बना था। वह बाहर जाएगा। जो बच्चा बाहर गया था वह उसके स्थान पर बैठेगा। अगला नेता कौन होगा ये उसका अधिकार होगा। वह जिसे नेता बनाना चाहता है। उसके सिर पर हाथ रखेगा। नेता के चुनाव के बाद बाहर गया बच्चा अंदर आकर नेता का पता लगाएगा। ये क्रम चलते रहेगा। इस खेल को 'नेताजी की खोज' कहा जाता है।

● गरिमा राना, राजकीय इंटर कालेज जसकोट, अल्मोड़ा

कहानी :

रूनझुन और टिन्नू

● डॉ. शील कौशिक

जून का अंत आते-आते बेहाल कर देने वाली गर्मी में अचानक सीली हवा का झोंका आया। मौसम सुहावना हो गया। मादा मच्छर पप्पी और नर मच्छर छबीला रोमांचित हो उठे। "आओ मिलकर डांस करें," छबीला ने आनंद में डूब कर कहा।

कुछ देर बाद पप्पी बोली, "बस अब हमें ऐसे स्थान की तलाश करनी होगी जहां मैं अंडे दे सकूं।"

दोनों ने एक साथ उड़ान भरी। उनकी दृष्टि घर के पिछवाड़े रखे कूलर पर पड़ी। पप्पी ने झांक कर देखा तो प्रसन्नता से चिल्लाई, "इसमें तो साफ-सुथरा पानी है ... हां, यही स्थान उपयुक्त रहेगा।"

रूनझुन तनिक देर पानी में बैठी और एक-एक करके बहुत सारे अंडे उसमें छोड़ दिए। ऐसा करते हुए वह भावुक होकर सोचने लगी, "हमारा जीवन सामान्यतया एक महीने का होता है। अब इसमें से कुछ ही दिन शेष हैं ... हो सकता है हम अपने बच्चों के सुंदर मुखड़े भी न देख पाएं।"

"कोई बात नहीं। हमने अपना जीवन मौज-मस्ती से जिया है और अगली संतति की नींव भी रख दी है।" पप्पी का हाथ पकड़ कर छबीला ने सुख की सांस ली।

उधर तीन-चार दिनों के सुरक्षित समय के बाद अंडों से लार्वे निकल आए । हल्का पीला-सफेद रंग, नाजुक बदन लिए वे पानी की सतह पर तिरछा कोण बनाए हुए मानो टंगे हुए थे। पानी में उपस्थित वनस्पति व नन्हें जीवों को अपना भोजन बनाकर साइफन से सांस लेकर वे मजे से पनप रहे थे। तभी बंगले की मालकिन ने कूलर में पानी का स्तर देखने के लिए झांका तो लार्वों को पनपते देख समझ गई, ''इसमें तो हमारे जानी दुश्मन मच्छर पनप रहे हैं।'' उसने कूलर के पानी को खाली कर दिया। लार्वे घबरा गए। उनमें से कुछ तेज पानी की धार की चोट से मर गए... कुछ नाली में बह गए.. . कुछ कूलर की दीवारों से चिपक गए और स्वयं को सुरक्षित पा चैन की सांस लेने लगे। पर कब तक ऐसे रहते? पानी के बिना उन्हें जीना असंभव लगा। भाग्यशाली रहे वे क्योंकि कुछ देर बाद मालकिन ने कूलर को फिर से पानी से भर दिया। वरना वे वहीं दीवार से चिपके-चिपके ही सूख कर मर जाते। अगले तीन-चार दिनों में उनकी शक्ल बदलने लगी और वे एक कठोर कवच में सिमट कर प्यूपा में तबदील हो गए। बड़ा-सा सिर लिए ये कोमा के आकार में ढल गए। प्यूपा के सिर पर दो एंटीना जैसी श्वास नलियां थी। जिससे वह पानी में सांस ले सकते थे। प्यूपा के अंदर मच्छर के अंग तेजी से विकसित हो रहे थे।

मच्छरों के जीवन का वह स्वर्णिम दिन आ ही गया। जब वे अपने खोल को तोड़ कर बाहर निकल आए। उनमें से दो नजवात शिशु मच्छरों का नाम रूनझुन और टिन्नू रखा गया। वे बहुत भूखे थे। एक दो बार गिरकर इन नाजुक मच्छर शिशुओं ने उड़ान भरी तथा भोजन की तलाश में बंगले में घुस गए। परदों के पीछे छुपा टिन्नू बोला, "आहा! यहां तो बड़ों के अतिरिक्त हमारे जैसे छोटे बच्चे शशांक व कविता भी हैं। बहुत मजा आएगा। चलो-चलो अंधेरा घिर आया है। जरा इनके कान के आस-पास मंडराएं। पहले इन्हें मीठा गीत सुनाते हैं। शशांक ने निक्कर पहनी है। जरा इसकी टांगों से रक्त लेकर स्वाद चखा जाए।" टिन्नू ने अपनी लंबी सूंड से त्वचा पर छेद किया और रक्त नलियों से रक्त पी लिया।

"आ ... आ ... हा! आनंद आ गया। चलो रूनझुन! तुम्हारा भी पेट भर गया हो तो छुप कर आराम करते हैं।"

"यहां तो हमारे जैसे बहुत सारे मच्छर छिपे हैं।" रूनझुन ने कहा।

"हां! ये मच्छर परिवार के ही सदस्य हैं। हम एनाफिलिज जाति के हैं। ये जो काले कलूटे देख रही हो, ये क्युलेक्स और वो काली सफेद धारियों वाले चमकीले, फुर्तीले एडीस जाति के हैं।"

"फिर तो हमारे बीच भोजन के लिए घमासान हो सकता है।"

"अरे! नहीं रे मेरी रानी! ये कालू तो पेड़-पौधों यानी हर्बल

जूस से काम चला लेता है और ये एडीस अधिकतर दिन में ही नाचते-कूदते व भोजन करते हैं।"

"पहले तो मानव हमें ही खतरनाक समझता था। पर जब से एडीस मच्छरों ने डेंगू फैला कर आतंक मचाया है। तब से हम तो शरीफ ही कहलाने लगे।" टिन्नू ने कहा।

"हूं इनकी सहनशक्ति तो बहुत है। इनके अंडे अगर कूलर में वर्ष भर पड़े रहें तो उसके बाद भी पानी मिलते ही जिंदा हो जाते हैं।"

"एक बात है, हम भी कहां मानव को मलेरिया, डेंगू से पीड़ित करना चाहते हैं। हम तो केवल अपना भोजन लेते हैं। हमारे पेट में छुपे बैठे मलेरिया, डेंगू के परजीवी/विषाणु उस समय स्वत: मनुष्य के रक्त में प्रवेश कर जाते हैं।"

तभी कोठी की मालकिन को घूं ... घूं की आवाज सुनाई दी और उसने दरवाजे से झांक कर देखा तो नगरपालिका की डेंगू-नियंत्रण टीम घर के बाहर फोगिंग के लिए मौजूद थी। उसने घर के सारे दरवाजे-खिड़कियां खोल दिए। अचानक हुए धूंए के हमले से रूनझुन, टिन्नू व उनके साथियों का दम घुटने लगा। वे चिल्लाए, "भागो ... भागो।" पर बच न सके। बच्चे-बड़े अब निश्चिंत थे।

- मेजर हाऊस,17 हुडडा, सैक्टर 20, पार्ट-1, सिरसा, हरियाणा मोबाइल - 9416847107

ढूंढो तो जानें

● राजेश गुजर

बच्चो यहां 8 बिल्लियां एक जैसी दिख रही हैं, लेकिन इनमें 2 बिल्लियां जुड़वा एक जैसी हैं। आप ही ढूंढो कौन सी हैं।

'भारत रत्न'

पंडित गोविन्द बल्लभ पन्त

(10 सितम्बर 1887–7 मार्च 1961)

महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी एवं कुशल प्रशासक की जयंती (गौरव दिवस) पर

उत्तराखण्ड का हार्दिक नमन

सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग, उत्तराखण्ड द्वारा जनहित में जारी।

www.uttarainformation.gov.in UttarakhandDIPR DIPR_UK

महिला हैल्पलाइन नं. 1090 | किसान कॉल सेंटर नं. 1551 | सी.एम.हैल्पलाइन नं. 1905
चाइल्ड हैल्पलाइन नं. 1098 | आपदा उत्तराखण्ड हैल्पलाइन नं. 104 | आपदा कॉल सेन्टर नं. 1070

दीपावली

● जगदीश गुप्त

दीपों का त्यौहार दीवाली,
जगमग करे अमावस काली।
व्यापारी पर चढ़ती लाली,
लगे मजदूरों को यह गाली।
ठंडी-ठंडी ऋतु मतवाली,
खुश दिखते बागों के माली।
आतिशबाजी क्या पटाखे वाली,
बच्चे खूब बजाते ताली,

- दुबे कालोनी, कटनी (म.प्र.)
मोबा. - 9584415174

दीवाली फिर आई

● डॉ. देशबंधु शाहजहांपुरी

प्रीत प्यार का दीप जलाने,
दीवाली फिर आई है।
खील खिलौने खूब खिलाने,
दीवाली फिर आई है।
नफरत विष से भरे हुए जो,
हृदयंतर के प्याले हैं।
प्रेम सुधा उसमें छलकाने,
दीवाली फिर आई है।
गांव, शहर और बस्ती नगरी,
भेदभाव की आग लगी।
नेह नीर से उसे बुझाने,
दीवाली फिर आई है।
फुलझड़ियों महताबों से और,
जलते दीप कतारों से।
मन में उजियारा फैलाने,
दीवाली फिर आई है।

- आनंदपुरम कॉलोनी (शीशीजई चौराहा)
कनौजिया अस्पताल के पीछे, शाहजहांपुर, उ. प्र.
मो. - 9936604767

ज्योति पर्व

● शंकर सिंह सेन 'निलय'

आओ जलाएं दीप एक ऐसा,
जिसका शौर्य हो सूर्य के जैसा।
घर-घर में फैले खुशहाली,
खिली हो जैसे धान की बाली।
आओ जलाएं दीप एक ऐसा,
ताल में खिला कमल हो जैसा।
गजब गुलाबी रंग में दमके,
मादक गंध पराग के गमके।
आओ जलाएं दीप एक ऐसा,
दिव्य ललाट ज्ञानियों जैसा।
दुर्गुण अवगुण दूर भगाएं,
जन-जन को नई राह दिखाएं।
आओ जलाएं दीप एक ऐसा,
गहन तिमिर में चांद हो जैसा।
बरसाए शीतलता न्यारी,
किरण पुंज फैली हो प्यारी।
आओ जलाएं दीप एक ऐसा,
परम ज्ञान के दर्पण जैसा।
भले-बूरे का भेद बताएं,
ज्योति किरण से स्वर्ण लुटाएं।

- रस्यारा गांव, सोमेश्वर, अल्मोड़ा
मोबा. - 9450968684

दीप पर्व

● डॉ. शेषपाल सिंह 'शेष'

बोले दीपक संघ बनाकर,
आसमान तू क्या?
ध्वस्त करें तेरा इतराना,
युद्ध करेंगे आ।
दीप-पर्व है आज हमारा,
तू धरती पर आना।
अपनी सारी सेना,
चंदा तारे सूरज लाना।
शाम हुई सेना का नायक,
सूरज भाग गया।
तारे आए टिम-टिम करते,
रोते - धोते से।
धूम धड़ाका देख धरा का,
जागे सोते से।
चंदा महारथी भी डरकर,
जाकर कहीं छिपा।
सहमे तारे सुन धूं-धां,
सूं-सां की आवाजें।
चकाचौंध बहुरंग दिवाली,
धरती पर साजे।
लगा कि सूरज चंदा दोनों,
की कर दी हत्या।

धाम 11 डी/ई 36, डी, बालाजी नगर
कालोनी, टूंडला रोड, आगरा-282006
मो.- 9411839862

दीवाली

● हेमंतकुमार चावड़ा

दीप जले, दीवाली आई,
घर से निकलो प्यारे भाई।
एक साथ आओ मिल जाएं,
ऊंच नीच की पाटें खाई।
अंधकार को दूर भगाओ,
किरणों की होगी पहुनाई।
कहीं फुलझड़ी कहीं पटाखे,
खाओ, मिल-जुल खूब मिठाई।
नाच रही रघ्घू की दीदी,
लो खुश है सलमा का भाई।

- सीतागुड़ी चौक, रायगढ़, छत्तीसगढ़
मोबा.-9300772458

कहानी:

गोलगप्पे से गोलमाल

● डॉ. अमिताभ शंकर राय चौधरी

मां से पैसे लेकर अंगा लंगूर अकेले ही आया है मेले में घूमने। घूम फिर कर वह खड़ा है गोलगप्पे और चाट के खोमचे के पास।

''अरे लोमरा!'' जोगिया चोला पहने एक भेड़िये ने चाटवाले से कहा, ''इस नन्हे बालक को मेरी ओर से गोलगप्पे खिला देना।''

''अरे नहीं।'' अंगा संकोच में पड़ गया। ''यह आप क्या कह रहे हैं ?''

''ले ले बाबा का दान। होगा तेरा कल्याण।'' कहते हुए भेड़िये ने हाथों से इशारा किया। लोमरा ने जबरदस्ती और दो गोलगप्पे उसके दोने में डाल दिए।

मजबूरन अंगा बाबा का दिया गोलगप्पा खाने लगा। ''कितना हुआ?'' उसने पूछा।

''जा बच्चा! तुझे पैसे नहीं देने हैं।''

''पर क्यों?''आखिर अंगा को लौटना पड़ा। मगर मेले से बाहर निकलते ही उसे मानो चक्कर आने लगा। वह एक पीपल के नीचे लेट गया। जब उसने आंखें खोलीं तो देखा वह एक कमरे में है। कमरे का दरवाजा बंद है। और उसी की उम्र के और कई बच्चे भी वहां बंद हैं। हिरन का बच्चा कुरंग और नन्हा भालू भूरे रोते हुए कह रहे थे, ''मुझे मेरी मां के पास ले चलो। ओ मां-!''

तभी दरवाजा खुल गया। वही भगवा बाबा वृकराज भेड़िया अंदर आया। उसने कहा, ''बच्चो! शांत हो जाओ। अब रोने से कोई फायदा नहीं। तुम सब मेरे आश्रम में हो। यहां तुम्हें कोई सुनने वाला नहीं। न तुम्हारी मां आएगी, न तुम्हारा बाप। लो, यह रोटी सब्जी खा लो। और मैं जो कहता हूं। ध्यान से सुनो। जैसा हम कहते हैं, वैसा करो तो तुम्हारी जिंदगी बन जाएगी। चलो, फट से काम पर जाने के लिए तैयार हो जाओ।''

यह सब सुनते ही अंगा के होश उड़ गए। तो माजरा यह है ? उसके मुहल्ले से जो और दो तीन बच्चे गायब हुए थे। वे भी सब इसी के हाथ पड़े होंगे। और यह वृकराज उनको बंधुआ मजदूर बना कर भेजता है। अरे बाप रे !

घर्र घर्र थोड़ी देर बाद एक आवाज सुनाई पड़ी। एक ट्रक आ गया। हाथ में बंदूक थामे दो सियार अंदर आए, ''चल बे, ट्रक के अंदर जाकर बैठ।'' इन्हें हांक कर बाहर खदेड़ दिया और ट्रक में बैठा दिया। ट्रक चल पड़ा। अंगा सोच रहा था। जो कुछ करना है, अभी कर लो। वरना एक बार किसी वीराने में फंस गया तो जंजीर से छुटकारा पाना नामुमकिन हो जाएगा। मगर करे तो क्या करे ? और कैसे करे? उसकी आंखों के सामने पापा और दादी के चेहरे घूमने लगे। अम्मां की याद आते ही आंखों में आंसू आ गए।

कुरंग और भूरे गुमशुम होकर उदास बैठे थे। कोई किसी से बातचीत नहीं कर रहा था। ट्रक के झटके से जरा सा हिलने पर भी फेरू सियार ने डांठते हुए कहा,''ऐ चुप मार के बैठ, वरना चलती ट्रक से नीचे फेंक देंगे।''

तभी आगे एक पुलिस चौकी दिखाई दी। बैरिकेड के पास सिपाही श्वानलाल डागी खड़ा था। उसने हाथ दिखाया, ''ऐ ट्रक के अंदर क्या है?''

''बस, खाली ट्रक जा रहा है, साहब! गेंडामल के ईंट भट्ठे से ईंट लोड करके कल वापस आएंगे।'' कहते हुए ड्राइवर की बगल में बैठा क्लिनर जंबुआ सियार ने श्वानलाल के हाथ में एक बड़ा सा नोट थमा दिया। यह रोज का मामला है। उधर अंगा ने देखा यही मौका है। ट्रक जरा स्लो हो गई है। या तो अभी, वरना फिर कभी नहीं। उसने एक छलांग लगाई। पीछे से ट्रक के किनारे को पकड़ कर लटक गया। दोनों सियार ''अरे रे रे'' करते रह गए। इधर ट्रक ने स्पीड ली। उधर अंगा कूद गया सड़क पर। 'धम्म्'

इंस्पेक्टर बाघर बाघ बाइक पर बैठे चाय पी रहा था। वहीं से उसने चिल्लाया,''क्या हुआ बे?''

श्वानलाल अंगा का हाथ थामे इधर आ रहा था। हांफते हुए कहा,''सा'ब, यह कह रहा है ट्रक में और बच्चे हैं। सबको जबर्दस्ती ले जा रहे हैं। कहीं पर काम करवाने के लिए।''

''इतनी मजाल !'' मारे गुस्से के बाघर की मूंछें फड़कने लगीं, ''बच्चों को बंधुआ मजदूर बनाएगा? चल बैठ बाइक के पीछे। अभी उन लोगों को धर दबोचता हूं। और आगे की वन चहा की चौकी को मोबाइल से खबर कर। बोल, ट्रक को रोकें। उसका नंबर बता दे।''

बात उड़ कर अगली चौकी तक पहुंच गई। उधर से पुलिस, इधर से पुलिस। बदमाश भाग कर जाते कहां? सभी पकड़ लिए गए। सारे बच्चों को भी छुड़वा लिया गया।

बाघर के डंडे ने फेरू और जंबुआ से सारी बातें उगलवा ली। हुंआ-हुंआ -पुलिस की जीप दौड़ती रही। रातों रात छापा

देश हमारा

● जय प्रकाश सूर्यवंशी 'किरण'

सुंदर प्यारा, देश हमारा,
लगता है, हम सब को प्यारा।
सत्य, अहिंसा, अमन, चैन का,
घर-घर गूंजे खुशी का नारा।
आजादी के महायज्ञ में बलिदान किया,
वीर सपूतों ने अपना तन मन सारा।
गांधी, नेहरू, वीर भगत सिंह,
इनके सपनों का देश हमारा।
हिंदू, मुस्लिम, सिख, इसाई,
सबके हैं अभिमान का तारा।
धर्म, जाति, भाषा के फूलों से,
महक रहा है, देश ये सारा।

- 107 साकेत नगर, नागपुर-440027
मोबा.-9423126211

कल्पना

● डॉ. नरेंद्रनाथ लाहा

बच्चों की एक दुनिया,
खुशी की स्वर लहरी।
आशा की फुलझड़ी,
मित्रों की किलकारी।
काश ऐसा विश्व होता,
सब हंसते कोई न रोता।
बैर की बात न होती,
बाल विश्व झंडा लहराता।

- 27, ललितपुर कालोनी, ग्वालियर, (म.प्र.)
मोबा.- 8931015684

धूप

● राजेंद्र निशेश

मां के आंचल सी लगती है,
सरदी की यह पिटारी धूप।
ठिठुरी काया को सहलाती,
दूर गगन ने उतारी धूप।
ठीक नहीं बस सोते रहना,
बड़े काम की दुलारी धूप।
खिड़की के कोने आ बैठे,
कैसी अजब उजियारी धूप।
गुलाब से आ बतियाती है,
तितली सी रंग-कारी धूप।
चिड़ियों को भी भा जाती है,
छत पर उतरी प्यारी धूप।
कुहरा जितना घना रहा हो,
विजय पा जाती न्यारी धूप।

- 2698, सैक्टर, 40-सी, चंडीगढ़-36
मोबा. - 9870757043

मेरी आशा

● विजय कुमारी 'मुक्ता'

मेरी आशा बड़ी चटपटी,
करती दिन भर बात।
यदि उससे कुछ पूछो तो,
कहती क्या लाई सौगात।
घर पर करती शैतानी,
स्कूल में करती मनमानी।
यदि उससे कुछ पूछो तो,
मर जाती है उसकी नानी।

- कोहली कॉलोनी,हरिपुर नायक,
बिठोरिया -1, हल्द्वानी
मो. 7017882006

मूंगफली

● डॉ. राम निवास 'मानव'

मन ललचाती मूंगफली,
सबको भाती मूंगफली।
है बादाम गरीबों का,
बिकती है यह गांव गली।
स्वाद अनूंठा है इसका,
सबको लगती तभी भली।
मिलती है सब रूपों में,
कच्ची पक्की और तली।
सर्दी में उपयोगी है,
गर्मी में भी लगे भली।
क्या बच्चे हैं क्या बूढ़े,
सबको इसकी कमी खली।

- 571, सैक्टर 1, पार्ट 2, नारनौल,
हरियाणा- 123001
मोबा. - 8053545632

बरगद

● डॉ. रामदुलारसिंह 'पराया'

थके पथिक को बरगद देता,
ठंडी-ठंडी शीतल छांव।
पशु-पक्षी का रैन बसेरा,
सबका यही सुखद है छांव।
बड़-पीपल से प्राणवायु,
मिलता सबको आठों याम।
शीतल, मंद, सुगंध हवा,
बहती वसुधा पर अविराम।

-उदित नगर, कुसुम्ही,चुनार, मिर्जापुर (उ.प्र.)
मोबा.- 8009243375

मारा गया। आखिर जोगिया चोला पहने वृकराज भी गिरफ्तार हो गया। पता चला उसका यही धंधा है। बंधुआ मजदूरी के लिए बच्चों की सप्लाई करना। थाने में आकर भूरे की मां ने अंगा को सीने से लगा लिया, ''बेटा, तुम्हारी हिम्मत के कारण मेरा खोया हुआ लाल वापस मिल गया। तुम न होते तो जाने क्या होता ?''

हर एक की बात सुन सुन कर अंगा की मां की आंखों में खुशी के आंसू उमड़ आए।

- सी, 26/35-40,ए, रामकटोरा, वाराणसी, उ.प्र.
मो.9455168359

सस्ता भी सुविधाजनक भी
अशोक होटल
निकट बस स्टेशन, तल्लीताल,
नैनीताल, उत्तराखंड
Phone : 05942-235721
Mobile : 9058602284, 9837407638
E.mail : ashoknainital@yahoo.com.in

धूप

● कृष्णा कुमारी

कितनी अच्छी लगती धूप,
सुबह-सुबह की कच्ची धूप।
सात रंग ज्यों सातों सुर,
इन संपूर्ण रागिनी धूप।
सुबह उतर कर सीढ़ी से,
शाम पड़े चढ़ जाती धूप।
खूब शरारत करती है,
दिन भर नटखट बच्ची धूप।
कौन पकड़ पाया इस को,
कैसी चंचल तितली धूप।
दबती है न किसी शै से,
हरदम ऊपर रहती धूप।
कल फिर आऊंगी कह कर,
किसने जाती देखी धूप।
जीवन इक, महबूबा तीन,
बरखा वायु सुहानी धूप।
किसी परी-सी लगती थी,
'कृष्णा' छत पर बैठी धूप।

- सी-368, तलवंडी, कोटा, राजस्थान
मोबा. -7442405500

खादी और बापू जी

● डॉ. वेद मित्र शुक्ल

हंसते-गाते मौज मनाते,
हम सब बच्चे खादी पहनें।
माता-पिता भी धारें इसको,
दादा पहनें, दादी पहनें।
है स्वदेश से प्यार दोस्तो!
वस्त्र स्वदेशी ही है फबता।
प्यारे भारत में जो बनता,
देखो सारे जग को जंचता।
आजादी के गीत सुनाएं,
खादी का झंडा फहराएं।
उत्तर-दक्षिण, पूरब-पश्चिम,
खादी में ही सब रंग जाएं।
खादी मतलब देशभक्ति है,
बरसों पहले से यह तय है।
खादी को अपनाना यानी,
करना भारत मां की जय है।

-राजधानी कॉलिज, दिल्ली विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली-110015 मोबा.-9599799727

गांधी जी के तीन बंदर

● पदमा पंचोली

गांधी जी के तीन बंदर,
सुख का सार इन्हीं के अंदर।
पहला बंदर बोले बात,
दिखे बुरा तो मूंदो आंख।
हर उलझन से हमें बचाए,
बुरा न देखें नहीं बताएं।
दूसरा बंदर बोले बात,
बुरी कोई मत बोलो बात।
मुंह को बंद करो ओ साब,
बुरा न बोलो, बढ़े न बात।
तीसरा बंदर बोले बात,
गलत कोई नहीं सुननी बात।
नहीं सुनोगे, नहीं करोगे,
हर उलझन से बचे रहोगे।

-35, लक्ष्मण नगर, बड़ी कोर्ट के सामने, देवास
(म.प्र.) मोबाइल-9424858798

प्रेरक प्रसंग:

गांधी जी के तीन गुरू

गांधी जी बहुत समय तक अफ्रीका रहे। वहां उन्होंने प्रवासी भारतीयों को कई अधिकार दिलाए। इस कारण अफ्रीका में उनका नाम चारों ओर फैल गया। उनसे कई लोग मिलने आते। कई लोग भेंट में उनके लिए कुछ न कुछ लाते। एक बार एक व्यक्ति ने उन्हें चीनी मिट्टी का एक खिलौना दिया। उस खिलौने में तीन बंदर बैठे थे। एक बंदर ने अपने दोनों हाथों से अपने कान बंद किए थे। दूसरे ने अपने दोनों हाथ आंखों पर और तीसरे ने अपने दोनों हाथ मुंह पर रखे थे।

गांधीजी से जो भी मिलने आते। वे उस खिलौने को देखकर मुस्कुराते। गांधी जी कहते, ''ये बंदर नहीं हैं। ये मेरे तीन गुरू हैं। पहला मुझे सिखाता है कि बुरी बातें मत सुनो। दूसरा सिखाता है कि बुरे दृश्य मत देखो। तीसरा मुझे सीख देता है कि कभी भी बुरा मत बोलो।'' एक जानकारी के अनुसार गांधी जी की मृत्यु के बाद तीन बंदरों वाले खिलौने को दिल्ली के राजघाट स्थित राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय में रखा गया है। बुरा मत कहो, बुरा मत सुनो और बुरा मत देखो गांधी जी की इन तीनों बातों का हम कितना पालन कर रहे हैं। इस पर विचार किया जाना जरूरी है। इसे मात्र कहानी न समझकर इस पर मनन भी किया जाना चाहिए।

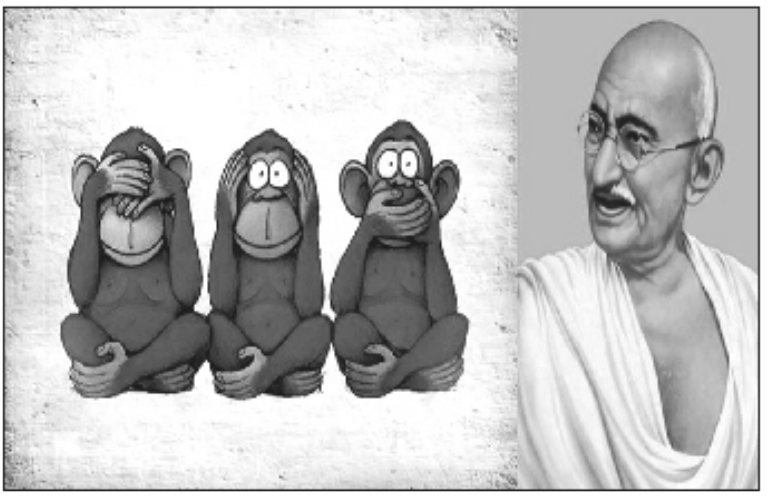

● परमेश्वरी शर्मा, लिंठ्यूड़ा, पिथौरागढ़

कहानी :

जीवन सुधर गया

● डॉ. सुधा शर्मा

सौम्या नवीं कक्षा में पढ़ती थी। उसे जो भी देखता, वही उसकी प्रशंसा करता। वह पढ़ाई में भी अच्छी थी। सभी परीक्षाओं में अच्छे अंक लाती। अध्यापिकाओं की बात मानती। समय पर सभी कार्य करती। विद्यालय के सभी नियमों का पालन करती। सभी उसे अच्छी बच्ची कहते थे।

ना जाने क्या हुआ। आठवीं कक्षा के बाद नौंवी कक्षा में आने पर कुछ ही दिनों में वह खूब गोलमटोल हो गई। पढ़ाई में भी धीरे-धीरे कमजोर होने लगी। अब हर परीक्षा में उसे पहले से कम अंक आते। परीक्षा में अंक घटते-घटते इतने कम हो गए कि फेल होने की नौबत आ गई।

विभा मैडम ने उसे आठवीं कक्षा में भी देखा था। अब नौंवी कक्षा में भी वही उसे पढ़ा रही थीं। उन्हें सौम्या में हुए परिवर्तन से बड़ी हैरानी थी। वे उसके व्यवहार पर ध्यान देने लगी। उन्होंने देखा कि आज कल उसका ध्यान पढ़ाई में कम और खाने में अधिक रहता है। वह अपने थैले में पुस्तकें कम और खाने की चीजें ज्यादा लाती है। इसके अलावा वह विद्यालय की कैंटीन से चीजें खरीदकर खाती थी। अक्सर पढ़ाई के समय अध्यापिका जी की नजर बचाकर वह छिप-छिपकर कभी चिप्स, कभी बर्गर, तो कभी चॉकलेट खाती रहती। आधी छुट्टी में भी वह पिज्जा, बर्गर, आइसक्रीम, कोल्ड ड्रिंक आदि खाती नजर आती। वह कभी घर का बना हुआ खाना नहीं खाती। उसके पानी की बोतल में कोल्ड ड्रिंक भरा होता। पूरी छुट्टी होने पर भी वह जाते-जाते विद्यालय की कैंटीन से चार पांच पैकेट चिप्स के खरीद लेती।

विभा मैडम को बात समझ में आ गई। उन्होंने सौम्या की मां को बुलवाया। मैडम ने सौम्या की पढ़ाई की बिगड़ती हालत के बारे में जब उन्हें बताया तो सौम्या की मां कहने लगी, ''हां मैडम! जाने इसे क्या हो गया है? हम भी इसकी पढ़ाई को लेकर बड़े चिंतित हैं।

विभा मैडम ने कहा, "आप इसे पिज्जा, बर्गर, चिप्स, चॉकलेट खाने के लिए और पीने के लिए कोल्ड ड्रिंक क्यों देती हैं? उसे घर में बना खाना और सादा पानी क्यों नहीं देती?"

सौम्या की मां ने कहा, "क्या करें मैडम! बहुत मन्नतों के बाद पैदा हुई है। इकलौती बेटी है। घर में सबकी लाडली है। हम उसे उदास नहीं देख सकते। इसे जो चीज पसंद होती है। हम वही इसे देते हैं। हम तो चाहते हैं यह हमेशा खुश रहे।"

"लेकिन उसकी खुशी के नाम पर आप उसकी जिंदगी बर्बाद कर रही हैं। यह सब खा-पीकर तो इसका शरीर फूलता जा रहा है और बुद्धि मंद होती जा रही है। क्या आप चाहती हैं कि आपकी प्यारी इकलौती, लाडली बेटी अनेक बीमारियों का घर बन जाए और पढ़ाई में बिल्कुल पिछड़ जाए?" विभा मैडम ने कहा। सौम्या की मां तो पहले ही परेशान थी। विभा मैडम की बात सुनकर और परेशान हो गई। उन्होंने पूछा, "हम क्या करें मैडम? आप ही बताइए।"

विभा मैडम ने कहा , "मैंने विद्यालय के डॉक्टर को सारी बात बता दी है। आप उनके पास सौम्या को लेकर जाइए। वे उसे समझा देंगे, तो शायद कुछ असर पड़े।"

सौम्या की मां उसे लेकर डॉक्टर के पास गई। डॉक्टर ने उन्हें देखते ही अंदर बुलाकर अपने पास बिठाया और पूछा, "यह बताओ कि तुम्हें खाने-पीने में क्या-क्या चीज अच्छी लगती है?''

सौम्या खुशी-खुशी बताने लगी, ''पिज्जा, बर्गर, तरह-तरह के स्वाद वाले चिप्स, चाऊमीन, मैगी, चॉकलेट, कोल्डिंक और ...।" डॉक्टर साहब हंस पड़े। उन्होंने कहा, "ये चीजें तुम कब खाती-पीती हो?''

सौम्या ने कहा, "रोज! मुझे यही चीजें अच्छी लगती हैं।" डॉक्टर साहब ने हंसते हुए कहा, "क्या तुम्हें मालूम है। मुझे गुलाब जामुन बहुत पसंद है। लेकिन यदि मैं रोज और हर समय यही खाता रहूंगा, तो मालूम है मुझे मधुमेह यानी डायबिटीज की बीमारी हो जाएगी। इसीलिए मैं महीने में एक बार और केवल एक गुलाब जामुन खाता हूं।"

सौम्या हैरान होकर बोली , "बस एक?"

डॉक्टर साहब आगे कहने लगे, "रोज खाओगी, तो मोटी और बहुत मोटी हो जाओगी। मोटी तो अभी भी हो। इससे भी दुगुनी हो जाओगी और मोटापे के कारण कई बीमारियां हो जाएंगी। बुद्धि भी बिल्कुल कमजोर हो जाएगी और फिर ऑपरेशन करना पड़ेगा। फिर भी तुम पूरी तरह ठीक नहीं हो पाओगी। इससे बेहतर है कि तुम अभी से ही अपने मन को काबू में रखो। अपनी पसंद की चीजें साल में केवल 4 बार खाओ। हर रोज घर का बना खाना खाया करो। तभी स्वस्थ रहोगी और पढ़ाई में भी अच्छी हो जाओगी।"

डॉक्टर साहब ने सौम्या की मां से कहा, "बहन जी! सौम्या को अच्छी-अच्छी स्वादिष्ट खाने की चीजें बनाकर प्यार से खिलाया कीजिए।" सौम्या को सारी बात समझ में आ गई। उसने मन ही मन ठान लिया कि वह फिर से अच्छी बच्ची बनेगी। वही हुआ। सौम्या ने अपने खान-पान को सुधारा। धीरे-धीरे उसका मोटापा कम हो गया। पढ़ाई में उसका मन लगने लगा।

- डब्ल्यू जैड-1987, रानीबाग, दिल्ली-110034

मोबाइल- 9811036140

ज्ञान विज्ञान बुलेटिन

भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा जन सहयोग से प्रकाशित ज्ञान विज्ञान बुलेटिन मासिक पत्रिका के लिए विज्ञान, जन विज्ञान, महिला मुद्दों एवं सम-सामयिक विषयों पर आलेख/ रचनाएं/सुझाव सादर आमंत्रित हैं। मेल से भेजने पर केवल **Kurtidev 10 font** से रचनाएं भिजवाएं।

बुलेटिन नियमित मंगवाने के लिए तीन वर्ष का सदस्यता शुल्क 160/- मनीआर्डर, चैक या बैंक ड्राफ्ट से संपादक, ज्ञान विज्ञान बुलेटिन,भारत ज्ञान विज्ञान समिति मुहल्ला-खोल्टा, अल्मोड़ा उत्तराखंड 263601 के पते भिजवाएं। बालप्रहरी एवं ज्ञान विज्ञान बुलेटिन का शुल्क एक साथ भी भेजा जा सकता है। - संपादक

दादा जी

● प्रभुदयाल श्रीवास्तव

नाक पकड़कर बेमतलब,
सारी बात मत बोलो दादाजी।
नहीं जानते कुछ भी,
अपनी पोल न खोलो दादाजी।
कान पकड़कर ही तो,
सॉरी बोला जाता है हरदम।
किंतु ताज्जुब है दादाजी,
अकल आपमें इतनी कम।
अब तो कान पकड़कर,
सॉरी सबको बोलो दादाजी।
नहीं जानते कुछ भी,
अपनी पोल न खोलो दादाजी।
नहीं थेंक्यू बोला अब तक,
कितने काम किए मैंने।
दिनभर घर में घूमा करते,
एक फटी लुंगी पहने।
'थेंक्स थेंक्स' के मधुर शब्द,
कानों में घोलो दादाजी।
नहीं जानते कुछ भी,
अपनी पोल न खोलो दादाजी।
जब जाता है कहीं कोई तो,
बॉय-बॉय टाटा करते।
कभी अचानक मिले कोई तो,
उसको हाय हलो कहते।
नई सभ्यता सीखो,
अपना हृदय टटोलो दादाजी।

- 12, शिवम सुंदरम् नगर, छिंदवाड़ा,म.प्र.
मोबाइल- 7089380751

पेड़ की कथा

● इंद्रा तिवारी 'इंदु'

एक रात मैं सोई थी,
मीठे सपनों में खोई थी।
सपने में इक पेड़ दिखा,
अपनी कथा कहने लगा।
तुमने धरती पै मुझको रोप दिया,
फिर लावारिस क्यूं छोड़ दिया।
हम कैसे हो पाएंगे आबाद,
जो दोगे नहीं पानी और खाद।
मैं ऑक्सीजन तुमको देता हूं,
जीवन तुम्हारा संवारता हूं।
यूं हर दिन मुझको काटोगे,
तो छांव कहां से पाओगे।
जो तुम रखोगे हमारा ध्यान,
हम देंगे तुमको जीवन दान।
मैं बोली हमको क्षमा करो,
हम नादान हैं इतना समझो।
हम रखेंगे तुम्हारा ध्यान,
बन कर अपनी संतान।
झट से मेरी नींद खुली,
जीवन की इक सीख मिली।
जब करेंगे हम पेड़ों का पोषण,
तब धरती पै होगा अपना जीवन।

- लोहरिया साल मल्ला, कृष्णा कालोनी
नं.-4, ऊंचापुल, कठघरिया, हल्द्वानी
मोबा. - 9870757043

गांव

● अश्वनीकुमार पाठक

टोला-टोला, बजरा-बजरा,
बसा हमारा गांव।
जहां-तहां हैं पीपल, बरगद,
घनी नीम की छांव।
एक टांग से खड़े हुए हैं,
कटहल, जामुन, आम।
मैंने देखा नहीं, कभी वे,
करते हैं आराम।
झुंड-झुंड छप्पर-छानी पर,
पंछी गाते गान।
झूम-झूम कर उच्च स्वरों में,
आल्हा कहें किसान।
खेल रहे हैं बच्चे हिल-मिल,
भेद भाव सब भूल।
नहीं देखते, पानी-कीचड़,
नहीं देखते धूल।
गीले पंख सुखाते, देखो,
सुबह धूप में मोर।
के-की, के-की बोल-बोल कर,
मचा रहे हैं शोर।
अब भी है पहचान गांव की,
वह माटी की गंध।
भैया, चाचा के संबोधन,
प्रेम-भरे संबंध।

- ब्राहम्णपुरा, सिहोरा, जबलपुर (म.प्र.)
मोबा. - 9926374805

जानकारी:

आसमान नीला क्यों होता है ?

जब हम आकाश की ओर देखते हैं तो हमें पता लगता है कि हमारे घर की छत की तरह आसमान में भी एक छत है। जो हमें नीले रंग में दिखाई देती है। आइए जानते हैं कि आसमान का रंग नीला क्यों होता है? सूर्य से जो प्रकाश निकलता है उसका रंग सफेद होता है। सूरज का प्रकाश इंद्रधनुष के सात रंगों से बना होता है। हमें ये रंग दिखाई नहीं देते। जब ये सारे रंग मिलते हैं तब हमें ये सफेद दिखाई देते हैं। जब सूरज का प्रकाश हमारे वायु मंडल में दाखिल होता है तो ये अलग-अलग दिशाओं में बिखर जाता है। इसमें सबसे अधिक असर नीले रंग का होता है। इस कारण हमें आसमान नीला दिखाई देता है।

हमें अपनी पृथ्वी से आकाश नीला दिखाई देता है। लेकिन जब हम अंतरिक्ष से आसमान को देखते हैं वहां पर न तो वायुमंडल है और न ही बिखरा हुआ प्रकाश जो हमारी आंखों तक पहुंचे। जाहिर सी बात है कि हमें अंतरिक्ष से आसमान नीला नहीं दिखाई देगा। अगर हम अंतरिक्ष से आकाश को देखेंगे तो हमें आकाश काला दिखाई देगा।

● कृपालसिंह शीला, सरपट्टा, बासोट, अल्मोड़ा

उत्तराखण्ड विद्युत नियामक आयोग

'विद्युत नियामक भवन' निकट आई.एस.बी.टी., पो.ऑ. - माजरा, देहरादून-248171

सार्वजनिक सूचना

आयोग द्वारा जारी विनियमों के अधीन राज्य के विद्युत उपभोक्ताओं के लिए वितरण अनुज्ञापी (उत्तराखण्ड पावर कॉर्पोरेशन लि०) द्वारा राज्य के उपभोक्ताओं की विद्युत सम्बन्धी शिकायतों के निराकरण हेतु निम्नानुसार शिकायत निवारण संघ गठित किये गये हैं :-

क्र. सं.	उपभोक्ता शिकायत निवारण मंच	कार्यालय का पता	आच्छादित विद्युत वितरण सर्किल
1.	देहरादून	उपभोक्ता शिकायत निवारण मंच, उत्तराखण्ड पावर कॉर्पोरेशन लि०, विक्टोरिया क्रॉस विजेता गबर सिंह भवन, कांवली रोड, देहरादून, पिन-248001	देहरादून (ग्रामीण) देहरादून (शहरी)
2.	श्रीनगर गढ़वाल	उपभोक्ता शिकायत निवारण मंच, उत्तराखण्ड पावर कॉर्पोरेशन लि०, अधीक्षण अभियंता कार्यालय/परिसर, इंटर कॉलेज रोड, श्रीनगर, गढ़वाल, पिन-246174	श्रीनगर
3.	हल्द्वानी	उपभोक्ता शिकायत निवारण मंच, उत्तराखण्ड पावर कॉर्पोरेशन लि०, ओल्ड डीजल पॉवर हॉउस, सेन्ट पॉल स्कूल के सामने, नैनीताल रोड, काठगोदाम, हल्द्वानी, पिन-243126	काशीपुर हल्द्वानी
4.	रुद्रपुर	उपभोक्ता शिकायत निवारण मंच, उत्तराखण्ड पावर कॉर्पोरेशन लि०, 33 KV विद्युत उपकेन्द्र, सेक्टर-2, सिडकुल, पंत नगर, रुद्रपुर, पिन-263153	रुद्रपुर
5.	हरिद्वार	उपभोक्ता शिकायत निवारण मंच, उत्तराखण्ड पावर कॉर्पोरेशन लि०, औद्योगिक क्षेत्र, हिल बाई पास रोड, हरिद्वार, पिन-249401	हरिद्वार रूड़की
6.	उत्तरकाशी	उपभोक्ता शिकायत निवारण मंच, उत्तराखण्ड पावर कॉर्पोरेशन लि०, विद्युत वितरण खण्ड, लदाड़ी, उत्तरकाशी।	टिहरी
7.	कर्णप्रयाग	उपभोक्ता शिकायत निवारण मंच, उत्तराखण्ड पावर कॉर्पोरेशन लि०, विद्युत वितरण मण्डल, राष्ट्रीय राजमार्ग-58, बद्रीनाथ मार्ग, कमेड़ा (गौचर), कर्णप्रयाग, जनपद-चमोली, पिन-246429	कर्णप्रयाग
8.	अल्मोड़ा	उपभोक्ता शिकायत निवारण मंच, उत्तराखण्ड पावर कॉर्पोरेशन लि०, विद्युत वितरण खण्ड, 33/11 सब-स्टेशन कैम्पस, लक्ष्मेश्वर, अल्मोड़ा	रानीखेत
9.	पिथौरागढ़	उपभोक्ता शिकायत निवारण मंच, उत्तराखण्ड पावर कॉर्पोरेशन लि०, विद्युत वितरण मण्डल, बडेरवाला, पिथौरागढ़, पिन-262501	पिथौरागढ़

उपभोक्ता अपने क्षेत्र में मंच में नये विद्युत संयोजन, विद्युत भार में वृद्धि/कमी, बिल मीटर एवं विद्युत की गुणवत्ता इत्यादि से सम्बन्धित शिकायतें लिखित रूप से कर सकते हैं।

उपभोक्ता की शिकायतों का निवारण 60 दिनों के अन्दर मंच स्तर पर नहीं किये जाने या मंच द्वारा पारित आदेश अपने पक्ष में न आने पर उपभोक्ता, "विद्युत ऑम्बड्समैन" के पास निम्नलिखित पते पर अपनी अपील दायर कर सकते हैं।

विद्युत ऑम्बड्समैन
80-वसन्त विहार, फेज-1, देहरादून 248006

दि०सं० 14/2019-20

सचिव

आयोग द्वारा विद्युत उपभोक्ताओं के हित में जारी।

कहानी :

विदेशी टीफिन बॉक्स

● खुशाल सिंह खनी

अंजू और मंजू तीसरी कक्षा में पढ़ते थे। दोनों एक ही मुहल्ले के रहने वाले आपस में अच्छे दोस्त भी थे। स्कूल हो या घर एक साथ रहते, बतियाते और खेला करते थे। अंजू थोड़ी गुस्सेबाज और तुनकमिजाज थी। पर मंजू धैर्यवान, सहनशील व होशियार लड़की थी। अंजू का एक दो-ढाई वर्ष का गोलू नाम का प्यार भाई था। मंजू का बड़ा भाई रोहन सातवीं कक्षा में पढ़ता था। अंजू के पापा बैंक में कार्य करते थे। मंजू के पापा की दुकान थी। अंजू, मंजू और रोहन एक ही साथ स्कूल जाते और साथ-साथ ही घर वापस आते।

एक दिन की बात है। अंजू के पापा उसके लिए एक नए फैशन का टीफिन बॉक्स लाए थे। आज पापा के घर में न होने पर मां से जिद करके अंजू टीफिन बॉक्स में खाना पैककर स्कूल को ले गई। वह टीफिन बॉक्स को रोहन और मंजू को दिखाने के लिए काफी उत्सुक थी। रास्ते में एक जगह रूककर अंजू बोली, ''रोहन भैया! आज पापा मेरे लिए एक नया टीफिन बॉक्स फोरेन से लाए हैं। ऐसा कहकर उसने टीफिन बॉक्स निकाला और बोली, ''लो देखो। कितना सुंदर है ना मंजू।'' बाल सुलभ उत्सुकता से दोनों भाई बहन टीफिन बॉक्स देखने लगे। रोहन बोला, ''अरे वाह! कितना सुंदर है। पापा पिछले हफ्ते इसे नेपाल से लाए हैं।'' अंजू खुश होकर बोली। पर पापा ने इसे स्कूल ले जाने के लिए मना क्यों किया? देखो कितना सुंदर है ना रोहन भैया। चलो अंदर खोलकर तो देखो तो और भी अच्छा है।'' रोहन हाथ से बॉक्स को खोलने लगा। डिब्बा थोड़ा टाइट था। जैसे ही रोहन ने खोलने के लिए जोर लगाया। डिब्बा हाथ फिसलकर नीचे जमीन में जा गिरा। उसके टुकुड़े-टुकुड़े हो गए। खाना भी बिखर गया। देखकर तीनों बच्चे भौंच्चके रह गए। रोहन का चेहरा काला पड़ गया। मंजू रुआंसी हो गई। अंजू तो फूट-फूट कर रोने लगी। रोते-रोते कहने लगी, ''रोहन ने मेरा टीफिन तोड़ दिया है। उंऽऽ उंऽऽऽ रोहन ने मेरा टीफिन तोड़ दिया है। कल ही पापा इसे लाए थे।'' उसका रोना सुनकर बहुत से बच्चे वहां पर इकट्ठा हो गए। कुछ सयाने लोग भी वहां एकत्रित हो गए। उनमें एक बोला, ''रोहन ! तुम तो बड़े थे। तुमने ऐसा नहीं करना चाहिए था।'' दूसरे बोले,'' क्यों रे रोहन! तूमने अंजू का टीफिन तोड़ दिया? तुम्हारा अपना टीफिन होता तो उसको भी ऐसे ही तोड़ देते?'' रोहन बेचारा अपराधी की तरह खड़ा था। तब मंजू बोली, ''भैया ने कुछ नहीं किया।''

''हां-हां तुम तो अपने भैया की गलती मानोगी ही नहीं।'' अंजू रोते-रोते बोली। एक दूसरे सज्जन बोले,''पर रोहन ने ये जानबूझ कर नहीं तोड़ा होगा। ये तो बहुत गंभीर और समझदार लड़का है। मैं इसे पहले से ही जानता हूं। स्कूल को देर हो रही है, चलो सभी बच्चे।'' अचानक सभी बच्चों को होश जैसी आई। वे तेज-तेज कदमों से स्कूल को जाने लगे। पर अंजू घर की तरफ आने लगी। लोगों ने उसे बहुत समझाया पर अंजू रोती हुई घर को आती रही। मंजू ने भी कहा,''अंजू! चलो तुम मेरे टीफिन में से खा लेना। दोनों आधा-आधा खा लेंगे।'' पर अंजू वापस लौटते हुए कहने लगी, ''घर जाकर मैं मम्मी से तुम्हारी शिकायत करूंगी। जाओ बड़ी आई मुझे खाना देने वाली।'' ऐसा कहकर वह तेजी से घर को चल दी। जाते-जाते उसने कहा, ''मैं आज तुम दोनों भाई-बहन को मार खिलाऊंगी।'' सुनकर दोनों भाई-बहन डरे-सहमे से स्कूल को आते रहे।

कक्षा में भी आज रोहन का मन नहीं लग रहा था। सोच रहा था अंजू बिना गलती के मुझ पर आरोप लगा रही है। अब उसकी मम्मी मेरी मम्मी से झगड़ा करेगी। वे तो बड़ी गुस्सेबाज हैं। उसे बड़ी ग्लानि हो रही थी। ऐसा ही अपनी कक्षा में मंजू भी सोच रही थी। आज उसने रोनी सी सूरत बना रखी है। टीचर के बहुत जिद करने पर उसने सारी आप-बीती उन्हें सुना दी। टीचर रोहन को जानती थी। वह पहले इसी विद्यालय से पढ़ा है। वह विद्यालय के अच्छे बच्चों में से एक था। मैडम मंजू उसके सिर पर हाथ रखकर उसे समझाने लगी, ''तुम चिंता मत करो बेटा! अंजू की मम्मी को मैं समझाऊंगी।''

शाम को दोनों भाई बहन स्कूल से घर पहुंचे। उनका मायूस चेहरा देखकर मम्मी समझ गई कि बच्चों को

अपनी गलती महसूस हो रही है। उन्होंने कपड़े बदले, हाथ-पैर धोकर खाना परोसा। आज दोनों भाई बहन ने खाना कम खाया। मां ने कुछ आराम के बाद टीफिन के विषय में पूछा। दोनों ने शुरू से आंखिर तक की घटना मां को बता दी। मां को भी बच्चों पर विश्वास था। क्योंकि दोनों बच्चों को माता-पिता ने अच्छे संस्कार दिए थे। वे कभी झूठ नहीं बोलते थे। मम्मी ने उन्हें अंजू की मम्मी की झगड़ने की बात नहीं बताई।

अंजू ने सुबह आधे रास्ते से वापस आते ही रोते-रोते टीफिन के टूटने का किस्सा मम्मी को बता दिया। सुनते ही अंजू की मम्मी आग-बबूला हो गई। वे उसी समय एक हाथ से बेटी का हाथ पकड़कर, दूसरे हाथ को फनकाती हुई रोहन के घर पहुंच गई। गुस्से में बोली, ''तुम्हारे लाडलों ने मेरी बिटिया का टीफिन तोड़ दिया। तुम लोग दूसरों की अच्छी चीज देखकर जलने लग जाते हो। क्या बिगाड़ा था मेरी लड़की ने तुम्हारा? तुम्हारे घर से चुराकर तो नहीं लाए थे? रोहन की मम्मी सुनीता शांति से बोली, ''बहन ! इतना गुस्सा क्यों करती हो? बच्चे ही हुए टूट गया होगा। रोहन के पापा दूसरा टीफिन लाकर दे देंगे। आप नाराज न हों।'' उधर मंजू की मां दीपा हाथ फनकाते हुए बोली, ''अरे कहां से लाओगे ऐसा टीफिन बॉक्स? ये इंडिया का नहीं है, विदेशी है विदेशी। अंजू के पापा जब नेपाल टूर में गए थे तब वहां से खरीदकर लाए थे। तब कह रहे थे बहुत कीमती है संभाल के रखना। इसमें अंजू को नाश्ता मत रखना। पर हाय राम! मेरी तो किस्मत ही फूटी है। अब शाम को मैं पापा को क्या जबाब दूंगी? फॉरेन का था फॉरेन का। तुम क्या जानो फॉरेन के बारे में। बैठे-बैठे लोगों को ठगना सीख रखा है बस और कुछ नहीं।'' ऐसा झूठा आरोप लगाने पर सुनीता देवी को भी गुस्सा आ गया। कहने लगी, ''आप ऐसा मत कहो बहन! झूठा आरोप मत लगाओ। मैं इससे भी अच्छा टीफिन मंगवाकर आपको दे दूंगी।''

''हां-हां बड़ी आई, ऐसा ही टीफिन देने वाली? अगर नहीं दिया तो ठीक नहीं होगा।'' कहकर दीपा देवी फनककर वापस मुड़ गई।

ठीक उसी समय अंजू के पिताजी विनोद शर्मा पहुंच गए। उन्होंने एक पेड़ की आड़ से सब बातें सुन ली थी। उन्हें अपनी पत्नी दीपादेवी के स्वभाव का पता था। जो थोड़ी सी बात में नाराज हो जाती हैं। आते ही पत्नी से बोले, ''क्या बात है आपका चेहरा उतरा हुआ जैसा लग रहा है।'' सुनकर दीपादेवी गुस्से से बोली, '' हैं न तुम्हारे एक अच्छे पड़ोसी। जिनके लाड़लों ने नेपाल से लाया हुआ टीफिन बॉक्स आज तोड़ दिया है। अंजू का खाना भी बर्बाद कर दिया। वह रोते हुए आधे रास्ते से घर वापस आ गई।'' पत्नी की बातें सुन विनोद जी को भी गुस्सा आ गया। पत्नी से बोले, ''मैंने कहा था कि इस टीफिन को मत देना, पर तुम मानती कहां हो? चलो कोई बात नहीं। जिस टीफिन के लिए तुम इतना बखेड़ा कर रही हो। उसकी कीमत जानकर तुम्हें ताज्जुब होगा।''

उनकी बातें सुनकर बच्चों सहित सुनीता देवी भी ताज्जुब से उनकी ओर देखने लगी। सोचने लगी न जाने कितना महंगा होगा ये बॉक्स। सभी ऊंची कीमत सुनने को उत्सुक थे। उधर अंजू की मां बोली, ''मैंने कहा था न बॉक्स महंगा होगा।''

तब विनोद जी थोड़ा हंसकर बोले, ''कर दिया न सत्यानाश। सुन पाओगे कीमत? तो सुनो भाभी जी आप भी ध्यान से सुनना। ये टीफिन है पचपन रुपए का। मात्र पचपन रुपए का।''

'' क्या पचपन रुपए का?'' दोनों महिलाएं एक साथ बोल पड़ी। ''यश यश फीप्टी फाइव रूपीज ओनली। केवल शो पीस। तभी तो मैं मना कर रहा था बेगम साहिबा।'' दीपा देवी के मुंह की ओर देखकर वे बोले। दोस्तों की जिद पर मैं इसे उठा लाया। मेड इन चाइना है। वैसे भी मुझे चाइना की चीज पसंद नहीं हैं।'' फिर रोहन की मां की तरफ देखकर बोले, ''भाभी जी! आप बिल्कुल भी टेंशन न लो। छोटी बात पर इतना बड़ा बखेड़ा? वैसे भी हम पड़ोसी हैं। हमारे बच्चे लड़ेंगे, झगड़ेंगे और खेलेंगे भी। बच्चे तो बच्चे हैं। बेगम साहिबा ध्यान से सुनें मेरी बातें। आपकी जरा जरा सी बात पर गुस्सा हो जाना ये आदत ठीक नहीं है। गुस्सा थूकना सीखिए।''

सुनीता देवी के पास जाकर बोले, ''आइए भाभी जी आप दोनों उधर देखिए। सबने देखा चारों बच्चे खेलने में मशगूल हैं। नन्हें गोलू को तीनों बच्चे बारी-बारी से मैदान के इस किनारे से उस किनारे तक कंधे पर बैठाकर दौड़ रहे हैं। गोलू को कंधे में रखने के लिए झगड़ रहे हैं। गोलू अंजू, मंजू के पास न जाकर रोहन को दोनों हाथ दे रहा है। विनोद शर्मा जी दोनों से बोले, ''कौन कहता है कि सुबह इन बच्चों के बीच कुछ हुआ था। आखिर बच्चे तो बच्चे हैं। हम भी बचपन में ऐसे ही झगड़ते, हंसते, खेलते होंगे। पल में माशा, पल में तोला। अगर सोचो तो इंसान बच्चा ही है। कहते हैं बच्चों में ही भगवान निवास करता है। दीपा! घर चलो बढ़िया सी चाय के साथ पकौड़े तलो। चलिए भाभी जी।'' अब दीपा देवी का गुस्सा भी काफूर था। बच्चे भी आ गए थे। दीपादेवी बोली, ''माफ करना भाभी जी! मैं जल्दी गुस्सा हो जाती हूं। आइंदा ऐसा नहीं होगा।'' वह उनका हाथ पकड़कर अपने घर ले गई। फिर बच्चों सहित सभी ने ठाट से चाय पकौड़ी का आनंद लिया।

- ग्राम/पोस्ट नैनी, जनपद-अल्मोड़ा
मोबाइल - 89588881453

कहानी :

युक्ति

● ओम उपाध्याय

झापड़ी तीन चार सौ की बस्ती वाला छोटा सा गांव। गांव में खेतिहर किसानों के साथ बढ़ई, लुहार, सुनार, पंडित, पुजारी, कहार, नाई, धोबी, मोची आदि के इक्के-दुक्के, कच्चे, पक्के घर और मजदूरों की झोपड़ियां थी। गांव का मुख्य धंधा खेती किसानी व पशुपालन था। झापड़ी छोटा सा गांव एक दूसरे से परिचित एक दूसरे के सुख-दुख में काम आने वाले। चूंकि गांव में खेतिहर किसानों की आबादी अधिक होने तथा गांव का मुख्य धंधा खेती किसानी होने के कारण अन्य सब जैसे बढ़ई, लुहार खेती के कार्यो में उपयोग लाने वाले औजारों का निर्माण करते टूटे हुए उपकरणों की मरम्मत करते तथा शेष जैसे सुनार आभूषण बनाते, गहनों की मरम्मत करते, कुम्हार इंटें, मटके वगैरह बनाते। पंडित, पुजारी, कहार, मोची आदि सब अपने अपने धंधों से जीवन यापन करते थे। गांव में जो खेतिहर मजदूर थे। वे संपन्न किसानों के खेत-खलिहानों में रोजनदारी, माहवारी व वार्षिक मजदूरी पर काम करते। मजदूरों के बच्चे उन्ही संपन्न किसानों के पशु, गाय, बैल, भैंस, बकरियां चराते।

झापड़ी गांव का जीवन बड़ा ही सीधा सादा था। गांव में एक प्राथमिक स्कूल था। स्कूल में पांचवी कक्षा तक पढ़ाई होती थी। पांचवी कक्षा के पश्चात आगे की पढ़ाई के लिए गांव से दो किलोमीटर दूर धरगांव कस्बा था। जहां ग्यारहवी कक्षा तक पढ़ाई की सुविधा थी। पांचवी कक्षा के बाद की पढ़ाई गावं के संपन्न किसानों के इक्का-दुक्का पुत्र-पुत्रियां ही जारी रखते। शेष अपने पैतृक व्यवसायों में जुट जाते। झापड़ी गांव में वैसे तो सब कुछ था टी.वी., टेलीफोन, वाहन आदि आदि बस केवल सड़क नहीं थी। धरगांव तक के दो कि.मी. के रास्ते को पैदल, बैलगाड़ी या दुपहिए वाहन से तय करना पड़ता था।

धरगांव बड़ा कस्बा था। वहां हायर सेकेंडरी स्कूल, सरकारी अस्पताल ग्राम पंचायत वगैरह-वगैरह सब कुछ था। धरगांव में पक्की सड़क थी। जो दोनों ओर तहसील मुख्यालयों क्रमशः महेश्वर बड़वाह को जोड़ती थी। धरगांव में प्रति गुरूवार को एक बड़ा हाट बाजार लगता था। जहां झापड़ी के अलावा आस-पास के कई गांवों के किसान, ग्रामीण जन, छोटे व्यापारी व अन्य खरीदी बिक्री के लिए विभिन्न वस्तुएं लेकर आते तथा अपनी (साप्ताहिकी) आवश्यकताओं की चीजें खरीद कर ले जाते। धरगांव में हाट बाजार के दिन गुरूवार को बहुत चहल-पहल रहती और ढेरों सामग्री की खरीदी बिक्री होती।

झापड़ी गांव में कई संपन्न किसान थे। किंतु गांव के पटेल मोतीलाल सर्वाधिक संपन्न थे। उनके पास जोतने के लिए सर्वाधिक जमीन थी। जिसे वे सालाना मेहनताना पर स्थाई मजदूरों से खेती बाड़ी का कार्य संपन्न करवाते थे। पटेल मोतीलाल के खेतों में काम करने वाले अस्थायी मजदूरों में एक स्थायी मजदूर मांगीलाल भी था। मांगीलाल मेहनती ईमानदार व विश्वास पात्र मजदूर था। यही कारण था कि वर्षो से वह पटेल के यहां कार्य कर रहा था। पटेल मोतीलाल उसे बहुत मानते थे। मांगीलाल की झोपड़ी गांव के अंतिम छोर पर थी। उसके पड़ोस में नानुराम का छप्पर था। नानुराम चलने फिरने में असमर्थ था। मांगीलाल का एक पुत्र था कालुराम जिसे गांव वाले कल्लु कहकर बुलाते। नानुराम के दो बेटे व एक बेटी थी। नानुराम के बड़े बेटे का नाम लालुराम था जिसे सब लल्लु लल्लु कहकर पुकारते थे। कल्लू और लल्लू हम उम्र थे और दोनों में दांत काटी दोस्ती थी।

कल्लू, लल्लू ने केवल दूसरी कक्षा तक पढ़ाई की थी। वे दोनों गांव के सारे मवेशियों को झापड़ी गांव के पास कुछ दूरी पर स्थित चारागाह में चराने का काम करते थे। कल्लू व लल्लू गाय, बैल, भैंस, बकरियों को मैदान में चरने को छोड़ देते। दोनों दिन भर खेल में मस्त रहते। कभी-कभी उनका साथ देने गांव के अन्य बच्चे भी आ जाते। शाम को सूर्यास्त के समय दोनों सारे जानवरों को एकत्रित करते और हांकते हुए गांव ले आते। जानवर अपने-अपने घरों में चले जाते और कल्लु, लल्लु अपने घर।

जब से टी.वी.गांवों में पहुंचा है टी.वी.ने क्रिकेट को भी गांवों में पहुंचा दिया। अब गांवों में भी क्रिकेट के शौकीन हो गए। इधर झापड़ी गांव के पटेल मोतीलाल को भी टी.वी. पर क्रिकेट मैच देखने का शौक लग गया था। वे अक्सर टी.वी. पर मैच देखते कभी कभी कल्लु लल्लु भी गांव के अन्य लड़कों के साथ टीवी पर क्रिकेट मैच देख लेते। धीरे-धीरे गांव के कुछ लड़कों की भांति वे भी क्रिकेट खेलना चाहते थे। किंतु उनके पास गेंद व बल्ला नहीं था। जिससे वे मन मसोसकर रह जाते थे।

दिन बीतते रहे । एक दिन मवेशी चराते-चराते कल्लू ने लल्लु से कहा, '' यार! गांव के खेल तो हम रोज ही खेलते हैं। ये खेल खेल खेलकर बोर हो गए। कभी क्रिकेट भी तो खेलकर देखें। किंतु हमारे पास गेंद है न बल्ला। फिर कैसे क्रिकेट खेलें?'' कल्लु ने कहा, ''लल्लु! बल्ले की जुगत के लिए मुझे एक उपाय सूझा है।

''क्या?'' लल्लु ने पूछा।

''लल्लु! क्यों न हम किसी सूखे पेड़ की शाख काट लें और बढ़ई चाचा से बल्ला बनवा लें।'' कल्लु ने उपाय सुझाया।

''फिर गेंद का क्या करेंगे? गेंद कहां से लाएंगे।'' लल्लु ने पूछा।

''उसका फिर सोचेंगे? पहले बल्ला तो बनवाएं।'' कल्लू ने कहा।

लल्लु को कल्लु की तरकीब बहुत पसंद आई। उन्होंने चार छह दिनों की मेहनत से एक सूखे पेड़ की सूखी डाली तोड़ी। जिसे बढ़ई चाचा ने बल्ले का आकार दे दिया। कल्लु लल्लु के पास बल्ला तो हो गया। अब केवल गेंद का इंतजाम करना था। गेंद के लिए कल्लु लल्लु ने पहले तो फटे कपड़ों, बेकार सामान व अन्य चीजों का इस्तेमाल किया। गेंद बन भी गई। किंतु वह क्रिकेट के खेल के लिए उपयुक्त नहीं थी। अंत में दोनों ने तय किया कि इस बार धरगांव के साप्ताहिक हाट बाजार में चलेंगे तथा वहां मेहनत, मजदूरी, हम्माली या अन्य कोई काम करेंगे तथा उससे जो पैसे मिलेंगे उससे गेंद खरीद लेंगे। साप्ताहिक हाट गुरूवार के एक दिन पूर्व बुधवार को कल्लु-लल्लु ने मवेशियों को चराने का इंतजाम किया। उनके मालिकों को अपने हाट बाजार जाने का प्रयोजन बताया। घर वालों से अनुमति ली। इस तरह सब प्रबंध कर अगले दिन दोनों सुबह ही हाट बाजार के लिए धरगांव की ओर चल पड़े।

लगभग आधे घंटे के पश्चात कल्लु लल्लु धरगांव के हाट बाजार में थे। हाट बाजार में अभी दुकानें लगना ही शुरू हुई थी। कल्लु और लल्लु घूमते वहां पहुंचे, जहां झापड़ी गांव के ही मंगतु चाचा मोची की दुकान लगाते थे। कल्लु-लल्लु ने मंगतु चाचा से राम-राम की फिर अपने आने की वजह बताई। दोनों ने कहा,'' चाचा! हमें कोई भी काम दिलवा दो। मजदूरी, हम्माली, चौकीदारी कुछ भी हमें बस गेंद खरीदने के पैसे चाहिए।'' मंगतु चाचा ने पहले कुछ सोचा फिर उन्हें याद आया कि आज का हाट त्यौहारों के हाट के पूर्व का हाट है। इसलिए बाजार में खरीदी बिक्री करने वालों की भारी भीड़ रहेगी। खूब रौनक रहेगी और जूते, चप्पल, सुधारने के काम के अलावा जूते चप्पलों पर पालिश करने का काम भी निकलेगा। जिसे वह अकेला नहीं संभाल पाएगा। उसे एक दो सहायकों की आवश्यकता पड़ेगी। सो उसने कल्लु लल्लु से कहा, ''बेटे, कल्लु लल्लु! एक काम तो मैं ही तुम्हें दे सकता हूं यदि करना चाहो तो।''

नेकी और पूछ-पूछ, कल्लू-लल्लु बोले , ''चाचा आप तो काम बताओ।''

''देखो बेटे कल्लु-लल्लु ! यह जो आज का हाट बाजार है। यह त्यौहारों के पहले का हाट बाजार है। इसलिए आज हाट बाजार में भारी भीड़ रहेगी। आज बाजार में जूते चप्पलों की मरम्मत व अन्य कार्यो के अलावा जूते चप्पलों पर पॉलिश करने का काम भी बहुत निकलेगा। मेरे पास तो कोई और काम करने वाला है नहीं। फिर भी मैं अकेला कितना काम करूंगा। यदि तुम दोनों चाहो तो जूते चप्पलों पर पॉलिश करने का काम तुम्हें दे सकता हूं। यह काम भी हल्का-फुल्का है । जिसे तुम आसानी से कर सकोगे। रही बात ब्रुश और पालिश की तो वह मैं तुम्हें दे दूंगा। बस मुझे पॉलिश की डिब्बियों के पैसे दे देना। बोलो, मंजूर है?'' मंगतु चाचा बोले।

''हां चाचा! हमें मंजूर है।'' दोनों एक साथ बोले।

''तो फिर ये लो ब्रुश और पॉलिश की डिब्बियां और शुरू हो जाओ।'' मंगतु चाचा ने कहा, ''अभी बाजार में ग्राहकों की भीड़ बढ़ने वाली है और तुम्हें खाना खाने की फुरसत भी नहीं मिलेगी।''

सचमुच वही हुआ। जो मंगतु चाचा ने कहा। कल्लु लल्लु शाम तक जूते, चप्पलों पर पॉलिश का काम करते रहे। शाम को जब दोनों ने जूते चप्पलों पर की गई पॉलिश की आय को गिना तो दोनों की बाछें खिल गई। मंगतु चाचा को पॉलिश की डिब्बियों के रुपए देने के पश्चात उनके पास काफी पैसे बच गए। उन्होंने न सिर्फ गेंद खरीदी बल्कि मिठाई व नमकीन भी खाया। कुछ सामान, नमकीन, फल आदि भी घर वालों के लिए खरीदे। शाम को जब दोनों गांव लौट रहे थे तो बहुत प्रसन्न थे।

झोपड़ी लौटने के पश्चात दूसरे दिन जब कल्लु-लल्लु जानवरों को चराने अपने नियत मैदान पर गए तो साथ में बल्ला व गेंद भी ले गए। वहां मैदान में कल्लु -लल्लु ने जानवरों को तो घास चरने को छोड़ा ओर दोनों क्रिकेट खेलने में जुट गए। चूंकि क्रिकेट खेलने वाले वे दो ही थे। इसलिए बारी-बारी से बल्लेबाजी और गेंदबाजी करते रहे। कल्लु-लल्लु ने इसके पहले केवल दूरदर्शन पर क्रिकेट मैच देखे थे। कभी खेला नहीं था। उन्हें पहली बार क्रिकेट खेलने में बहुत मजा आया। आज उनकी क्रिकेट खेलने की चाह पूरी हो गई थी।

एक दो दिन पश्चात जब गांव के अन्य लड़कों को पता चला कि कल्लु लल्लु के पास क्रिकेट का सारा सामान है तो वे भी उनके साथ क्रिकेट खेलने आने लगे।

-फ्लैट नं.-107 बी ब्लाक, प्रथम तल
स्टलिंग स्काय लाइन, इंदौर-452016 (म.प्र.)
मोबा. - 9407515174

अलबम नया

● डॉ. जयजयराम आनंद

आओ देखो बहना भैया,
नाविक खेते अपनी नैया।
चंदा मामा तारे तरैयां,
कूद नहाते ताल-तलैयां।
मुझसे कहते फोटो खींचो,
अलबम नया सजाओ।
पूरब कोना लाल सलोना,
हंसता खिलता सूरज निकला।
ताल झंझारे सरसिज फूला,
सोन चिरैया झूला झूले।
मुझसे कहती फोटो खींचो,
अलबम नया सजाओ।
बच्चे जाते पढ़ने शाला,
पंडित मौला जपते माला।
दिनभर दिनकर काम संभाला,
थक कर घर में ताला डाला।
कह कर जाता फोटो खींचो,
अलबम नया सजाओ।

- 7/70 अशोका सोसाइटी,
अरेरा कॉलोनी,भोपाल, म.प्र.- 462016
मोबाइल -8517912504

जाड़ा,

● शिवचरण सेन 'शिवा'

पसरी सर्दी मोटी तगड़ी,
सबको खूब पछाड़े।
हर तिराहे पर जले अलाव,
जैसे सुलगी भाड़े।
किट-किट, करते जबड़े,
कांपे सबकी नाड़ें।
सांय-सांय जो करती हवा,
लगता शेर दहाड़े।
बाजारों में आए देखो,
सब्जी संग सिंघाड़े।
गिनती विनती छोड़ दांत भी,
रटने लगे पहाड़े।
निकल पड़ी है शाल रजाई,
आए यों दिन जाड़े।
ज्यों सूरज को निगलने हेतु,
मावठ मुखड़ा फाड़े।

- 68 तिलक नगर, झालावाड़ (राज.)
मो. - 9414595588

मिस्टर जाड़ा

● सूर्यकुमार पांडेय

घर में घुसकर किया कबाड़ा,
तुमने मिस्टर जाड़ा।
चार महीना रहे,
दिए जाओ मकान का भाड़ा।
घर में घुसते ही,
तुमने गरमी को बाहर फेंका।
धूप यहां से हुई उड़न छू,
ज्यूं ही तुमको देखा।
तुमको अपने मित्र मिल गए,
कंबल और रजाई।
सिट्टी-पिट्टी गुम पंखे की,
ऐसी डांट पिलाई।
ठंडी-ठंडी हवा मंगाई,
कैसा खेल दिखाया।
इस घर का हर व्यक्ति,
तुम्हारी करनी से घबराया।
तुम आए तो,
गरम चाय के दौर हो गए चालू।
गरमा गरम पकौड़ी छनती,
तलने लगे कचालू।
आते ही मुझको,
तुमने बाजार बीच दौड़ाया।
गरम-गरम चीजें मंगवाई,
स्वेटर-कोट मंगाया।
तुमने कैसा जादू फेरा,
ठंड बढ़ गई ज्यादा।
थर-थर-थर-थर लगे कांपने,
दीदी, दादी, दादा।
गुल्लक मेरी देखो,
पैसे खत्म हो गए सारे।
और किराया चार माह का,
अब भी पास तुम्हारे।
इसीलिए कहता हूं,
रूक जाओ ओ मिस्टर जाड़ा।
चार महीना रहे,
दिए जाओ मकान का भाड़ा।

-538क/514,त्रिवेणीनगर द्वितीय
लखनऊ,उ.प्र.-226020
मोबाइल-9335906711

मोबाइल

● डॉ. राकेश चक्र

बॉल छीनकर बचपन से,
खुश होता है मोबाइल।
बच्चे उससे चिपक गए हैं,
गलियां सूनी साहिल।
समय-बेसमय खाना रहता,
मां अक्सर चिल्लाती।
दूध गिलास लिए हाथ में,
मां है प्यार जताती।
ममता के भावों से रूठी,
आज घुंघरिया पायल।
बड़ी खुशामद,
नन्हें राजा रूठें आंख दिखाएं।
दाल-सब्जियां नहीं सुहाएं,
चाउमिन हंस-हंस खाएं।
खुशियों ने दीवारें तोड़ीं,
मन मां का अब घायल।
मान-मनोब्बल पढ़ने का अब,
मां करती है रोज।
पिता रोज डांटे-फटकारे,
कड़वा लगता भोज।
टीवी - कंप्यूटर का भाई,
हर कोई है कायल।

- शिवपुरी, मुरादाबाद, उ.प्र.
मो. 9456201857

मेरी लाडली

● डॉ. मंजू

बेटी है मेरे दिल का टुकड़ा,
यही मैं सबसे कहता हूं।
चोट न आए उसे कभी भी,
इर्द-गिर्द मैं उसके रहता हूं।
लोगों ने कहा कि पराई है बेटी,
मैं कहता हूं यह बात है खोटी।
यह है सोना चांदी मेरी,
हीरा गहना है मेरी मोती।
बीत गए हैं कई वर्ष यूं,
अभी भी मुझे लगती है छोटी।
छोड़ मुझे जाएगी ससुराल,
सोच कर मेरी आंख है रोती।

- 13-3-1048/78 इंद्रानगर, जियागुड़ा,
हैदराबाद, तेलंगाना
मो. 8688845259

बालप्रहरी समाचार

बालप्रहरी समाचार

अल्मोड़ा। 7 सितंबर। बालप्रहरी संपादक उदय किरौला ने विवेकानंद विद्या मंदिर इंटर कालेज अल्मोड़ा में बच्चों को सुनाई 'आदमी की कहानी'। इस अवसर पर आयोजित वाक् प्रतियोगिता में सभी 32 प्रतिभागियों को प्रधानाचार्या गोदावरी चतुर्वेदी ने पुरस्कार में बालसाहित्य दिया।

राजसमंद(राजस्थान) 14 सितंबर। अणुव्रत विश्व भारती राजसमंद द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में बालप्रहरी संपादक उदय किरौला ने 10 से 14 सितंबर तक राजसमंद के लगभग एक दर्जन विद्यालयों में बच्चों से संवाद किया। उन्होंने कहानी के माध्यम से बच्चों को वैज्ञानिक सोच आधारित कहानियां सुनाई।

पुरौला (उत्तरकाशी) 13 अक्टूबर। रा. जू. हाईस्कूल सुनाली में बालप्रहरी द्वारा आयोजित एक दिवसीय बाल मेले में बालप्रहरी संपादक उदय किरौला ने खेल-खेल में बच्चों को कई गतिविधियां कराई।

पुरौला (उत्तरकाशी) 14 अक्टूबर। तरूण पर्यावरण विज्ञान संस्था उत्तरकाशी द्वारा पुरोला में 13 व 14 अक्टूबर को आयोजित कार्यशाला में बालप्रहरी संपादक उदय किरौला ने बच्चों को कहानी, कविता आदि लेखन की जानकारी दी।

देहरादून। 16 अक्टूबर। बालप्रहरी संपादक उदय किरौला ने हैस्को संस्था द्वारा नागथात में 15 व 16 अक्टूबर को आयोजित लेखन कार्यशाला में बच्चों को खेल-खेल में कई गतिविधियां कराई। बच्चों ने अपनी हस्तलिखित पत्रिका भी तैयार की।

द्वाराहाट। 24 अक्टूबर। द्वाराहाट पब्लिक स्कूल द्वाराहाट में बालप्रहरी संपादक उदय किरौला ने बच्चों को सुनाई 'पीं पीं पीं पीं पीं की कहानी। वाक् प्रतियोगिता में स्कूल प्रबंधक संजय मठपाल ने बच्चों को पुरस्कार में दिया बालसाहित्य।

अल्मोड़ा। बालप्रहरी , बालसाहित्य संस्थान एवं भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस के अवसर पर मैसर्स गोपाल डेयरी अल्मोड़ा के सहयोग से आयोजित स्व. रतनसिह सांगा एवं पनुली देवी सांगा स्मृति 26 वीं जनपद स्तरीय निबंध प्रतियोगिता में अल्मोड़ा जनपद के 111 स्कूलों के 2220 बच्चों ने भागीदारी की। डॉ. विनोद राठौर, डॉ.डीगुप्ता,कमल जोशी,जगदीश पाठक, मोतीप्रसाद साहू, प्रमोद तिवारी, आनंदसिंह बिष्ट, ज्योति पांडेय, नीरज पंत ने निबंध मूल्यांकन में सहयोग किया। समापन समारोह को मुख्य अतिथि जिला शिक्षा अधिकारी हर्ष बहादुर चंद, नगरपालिका अल्मोड़ा के चेयरमैन प्रकाश जोशी, कुमाऊं वि.वि. परिसर अल्मोड़ा शिक्षा संकाय की प्रो. विजया ढौढियाल, गोविंद बल्लभ पंत पर्यावरण संस्थान के वैज्ञानिक डॉ. रंजन जोशी, अल्मोड़ा अर्बन बैंक के चेयरमैन आनंदसिंह बगडवाल आदि ने संबोधित किया। अध्यक्षता धौलादेवी के खंड शिक्षा अधिकारी चंदनसिंह बिष्ट ने की। इस अवसर पर भारत ज्ञान विज्ञान समिति स्याल्दे की विकास खंड समन्वयक डॉ.प्रतिभा चौहान द्वारा संपादित पत्रिका 'बेटी अभिव्यक्ति के शब्द' का लोकार्पण भी किया गया।

महॉत्मा गांधी की 150 वीं वर्षगांठ पर बच्चों की कार्यशाला

कौसानी। महॉत्मा गांधी की 150 वीं पुण्य तिथि के अवसर पर बालप्रहरी तथा भारत ज्ञान विज्ञान समिति अल्मोड़ा द्वारा अनासक्ति आश्रम कौसानी में 19 से 23 सितंबर तक बच्चों की लेखन कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के समापन समारोह को संबोधित करते हुए होटल एशोसिएशन कौसानी के पूर्व अध्यक्ष एवं सामाजिक कार्यकर्ता भैरवदत्त जोशी ने कहा कि पूज्य बापू जी के कौसानी प्रवास से इस क्षेत्र को नई पहचान मिली। उन्होंने कहा कि कौसानी में स्थित अनासक्ति आश्रम आज पूरे देश में अपनी पहचान बनाए हुए है। उन्होंने बच्चों से कहा कि हमें गांधी जी के सत्य व अंहिसा के सिद्धांत को समझना चाहिए। उन्होंने कार्यशाला के बच्चों की रचनाओं को जोड़ते हुए हरेंद्र रावत द्वारा संपादित हस्तलिखित पत्रिका 'कौसानी दर्पण' का लोकार्पण भी किया। कार्यशाला में बच्चों ने अपनी-अपनी हस्तलिखित पुस्तक तैयार की। इन पुस्तकों की प्रदर्शनी समापन समारोह में लगाई गई। समापन समारोह के अवसर पर आयोजित बाल कवि सम्मेलन में 20 बच्चों ने स्वरचित कविताएं प्रस्तुत की। कार्यशाला में राजकीय इंटर कालेज कौसानी, रा.उ.मा.वि.पच्चीसी,रा.उ.मा. वि.डौनी, कन्या जूनियर हाईस्कूल कौसानी, सरस्वती शिशु विद्या मंदिर कौसानी के 63 बच्चों ने भागीदारी की। भारत ज्ञान विज्ञान समिति के प्रांतीय कोषाध्यक्ष प्रमोद तिवारी, बालप्रहरी संपादक उदय किरौला, शंकरसिंह बिष्ट, डॉ. उर्वशी,कविता तड़ागी आदि ने बच्चों को कई गतिविधियों कराई। कार्यशाला के संयोजक हरेंद्र रावत ने अनासक्ति आश्रम कौसानी के एडवोकेट कृष्णसिंह बिष्ट,समस्त स्कूलों, अभिभावकों का सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया।

बालवाटिका द्वारा बालसाहित्य संगोष्ठी का आयोजन

भीलवाड़ा(राजस्थान)। बालवाटिका तथा विनायक विद्यापीठ भूणास के संयुक्त तत्वावधान में 2, 3 तथा 4 अक्टूबर को संपन्न 23 वीं राष्ट्रीय बालसाहित्य संगोष्ठी एवं सम्मान समारोह में बालसाहित्य के विभिन्न पक्षों पर चर्चा हुई। प्रारंभ में बालवाटिका के संपादक डॉ. भैरूंलाल गर्ग ने सभी का स्वागत करते हुए बालसाहित्य की दिशा व दशा पर अपनी बात रखी। राष्ट्र किंकर के संपादक डॉ. विनोद बब्बर,नागरी लिपि परिषद दिल्ली के महासचिव डॉ. हरिसिंह पाल, साहित्य मंडल नाथद्वारा के प्रधानमंत्री श्याम देवपुरा, सलिला संस्था की अध्यक्ष डॉ. विमला भंडारी, मधु आचार्य, किशोर श्रीवास्तव, रूप्रद्रकाश गुप्त 'सरस',डॉ. राजकिशोर सक्सेना 'राज', जयसिंह आशावत, मनोज फगवाड़ी, कमलेश चौधरी, गाफिल स्वामी, शिवचरण सेन, नंद किशोर निर्झर, डॉ. हीरालाल लोहार, बुलाकी शर्मा,दिनेश प्रतापसिंह 'चित्रेश', वीरेंद्र कुमार लोढा, गोविंद शर्मा, डॉ. कैलाश पारीक, रमा शंकर, पवन चौहान, रेखा लोढा, ओम उज्ज्वल, गोविंद पाल आदि ने अपने विचार रखे। इस अवसर पर कई साहित्यकारों को सम्मानित किया गया। कई पुस्तकों का लोकार्पण हुआ। डॉ. कुमावत ने सभी अतिथियों व साहित्यकारों का आभार व्यक्त किया।

कुमाउनी भाषण प्रतियोगिता का आयोजन

अल्मोड़ा। नंदादेवी मेला समिति अल्मोड़ा के सौजन्य से नंदादेवी मेले के अवसर पर बालप्रहरी, बालसाहित्य संस्थान एवं भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा 1 सितंबर को राजकीय कन्या इंटर कालेज अल्मोड़ा में आयोजित कुमाउनी भाषण प्रतियोगिता में अल्मोड़ा के 11 विद्यालयों के 99 बच्चों ने प्रतिभाग किया। तीन वर्गों में आयोजित निबंध प्रतियोगिता के मूल्यांकन में डॉ. ललित जोशी, पुष्पा कैड़ा, खुशालसिंह खनी, लीला खोलिया,गणेश भट्ट, मीनू जोशी, भीमसिंह बगड्वाल, डॉ. सतीश भट्ट, डॉ. महेंद्रसिंह मिराल, प्रेमा गड़कोटी, भगवतसिंह बगड्वाल,डॉ. धाराबल्लभ पांडेय ने निर्णायक की भूमिका निभाई। नीरज पंत, प्रमोद तिवारी, जगदीशचंद्र पाठक, मोतीप्रसाद साहू व उदय किरौला ने संचालन किया। इस अवसर पर मेला समिति के मनोज सनवाल, शांति साह, रीता दुर्गापाल, पुष्पा सती, पूर्व स्वास्थ्य निदेशक डॉ. जे. सी. दुर्गापाल,साहित्यकार श्यामसिंह कुटौला, विपिन जोशी 'कोमल', डॉ.डी.एस. बोरा, ममता बिनौली, रंजना भंडारी, कुमकुम जोशी, हेमलता वर्मा, रेशमा परवीन, रूपा भंडारी, दिनेश पांडेय आदि उपस्थित थे। प्राथमिक, जूनियर व सीनियर वर्ग के प्रथम पांच प्रतिभागियों को पुरस्कार व प्रमाण पत्र नंदादेवी मेला समिति के सहयोग से दिए गए। सभी प्रतिभागी बच्चों को प्रशस्ति पत्र व बालसाहित्य दिया गया।

सुरेंद्र पुंडीर नहीं रहे

मसूरी(देहरादून)। प्रसिद्ध साहित्यकार एवं राजकीय इंटर कालेज घोड़ाखोरी, टिहरी के सेवानिवृत्त प्रवक्ता सुरेंद्र पुंडीर जी हमारे बीच नहीं रहे। बालप्रहरी द्वारा मसूरी में आयोजित राष्ट्रीय बालसाहित्य संगोष्ठी के स्थानीय संयोजक बतौर उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। उत्तरकाशी के शिक्षक एवं बालसाहित्यकार स्व. हेमराज भट्ट की स्मृति में प्रकाशित बालप्रहरी के हेमराज भट्ट विशेषांक के अतिथि संपादक के रूप में भी बालप्रहरी को उनका सहयोग मिला। बालसाहित्य संस्थान एवं बालप्रहरी परिवार की ओर से उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि।

बाल विज्ञान मेला

अल्मोड़ा। बालप्रहरी एवं भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा 21 से 26 जून, 2019 तक राजकीय बालिका इंटर कालेज अल्मोड़ा में बाल विज्ञान मेले का आयोजन किया गया। विवेकानंद पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान अल्मोड़ा के पूर्व निदेशक डॉ. जे.सी. भट्ट ने बच्चों को विज्ञान व वैज्ञानिक दृष्टिकोण की जानकारी दी। कुमाऊं विश्व- विद्यालय हिंदी विभाग की सेवानिवृत्त प्रोफेसर डॉ. दिवा भट्ट ने बच्चों को कहानी विधा की जानकारी देते हुए कहानी वाचन किया। कार्यशाला में बच्चों को विज्ञान के खेल, कविता, कहानी व नुक्कड़ नाटक आदि गतिविधियां कराई गई। कार्यशाला में नागेंद्र गंगोला ने बच्चों को इंग्लिश स्पीकिंग का अभ्यास कराया। प्रमोद तिवारी, उदय किरौला, डॉ.धाराबल्लभ पांडेय, उमा तिवारी, अनिल पुनेठा, किशनराम, ललित मोहन कपिल, भास्कर जोशी, के.पी.एस. अधिकारी, चंद्रमणी भट्ट, भावना तिवारी, मंजू पुनेठा, डॉ. हयातसिंह रावत,भूपेंद्र बल्दिया, रेश्मा परवीन आदि ने बच्चों को गतिविधियां कराई। सेवानिवृत्त शिक्षा अधिकारी नवीन पाठक की अध्यक्षता में संपन्न समापन समारोह में बच्चों ने नुक्कड़ नाटक व समूह गीत प्रस्तुत किए।

सम्मान

रांची (झारखंड)। बालसाहित्य के सुप्रसिद्ध लेखक एवं बाल प्रभा के संपादक डॉ. नागेश पांडेय 'संजय' को उनके चर्चित बाल उपन्यास के लिए रांची में आयोजित एक समारोह में स्पेनिन साहित्य गौरव सम्मान से सम्मानित किया गया।

मथुरा (उ.प्र.)। संदर्भ समीक्षा समिति भीलवाड़ा की संस्थापक अध्यक्ष रेखा लोढ़ा स्मित को आर सी ए गर्ल्स डिग्री कालेज मथुरा में आयोजित सजल सर्जना समिति के तृतीय वार्षिक अधिवेशन में स्व. रामदेवी गहलोत स्मृति सजल सुरभि पुरस्कार 2019 से सम्मानित किया गया ।

भोपाल (म.प्र.)। दुष्यंत कुमार स्मारक पांडुलिपि संग्रहालय भोपाल द्वारा भीलवाड़ा से प्रकाशित बालवाटिका के संपादक डॉ. भैरूंलाल गर्ग को विजय श्रिढोणकर स्मृति सम्मान से सम्मानित किया गया।

भीलवाड़ा (राजस्थान)। प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. बलराम अग्रवाल को भीलवाड़ा में आयोजित एक समारोह में यशवंतसिंह सिसोदिया स्मृति कथा शिरोमणी सम्मान 2019 से सम्मानित किया गया। इस समारोह में संदर्भ समीक्षा समिति की अध्यक्ष रेखा लोढ़ा स्मित की पुस्तक 'रोशनी है दांव पर', तथा 'मुट्ठी भर आकाश' का लोकार्पण किया गया। इस समारोह में साहित्यकार एवं शिक्षाविद् प्रहलाद पारीक की पुस्तक 'जीवन की हलचल कह दूं' का लोकार्पण भी किया गया।

सलूंबर में राष्ट्रीय बालसाहित्यकार सम्मेलन संपन्न

सलूंबर (राजस्थान)। सलिला संस्था सलूंबर द्वारा 21, 22 व 23 सितंबर को जिला पुस्तकालय सभा भवन सलूंबर में आयोजित 10 वें राष्ट्रीय बालसाहित्यकार सम्मेलन में 7 राज्यों के 80 बालसाहित्यकारों ने प्रतिभाग किया। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास नई दिल्ली के पाठक मंच पत्रिका के संपादक मानस रंजन महापात्र, बालवाटिका के संपादक डॉ. भैंरूंलाल गर्ग, युगधारा उदयपुर के संस्थापक डॉ. जयप्रकाश पंडया 'ज्योतिपुंज', देवपुत्र पत्रिका के संपादक डॉ. विकास दवे, संजीव जायसवाल 'संजय', गोविंद शर्मा, टीकमचंद्र बोहरा 'अनजाना', कुसुम अग्रवाल, राजकुमार जैन 'राजन', भगवतीप्रसाद गौतम आदि ने सम्मेलन में अपने विचार रखे। इस अवसर पर प्रकाश तातेड़ द्वारा संपादित साहित्यकार संगीता सेठी पर केंद्रित स्मारिका सलिला प्रवाह, प्रतियोगिता के पत्र पर संकलित पुस्तक 'पत्र तुम्हारे लिए', 'सफल जीवन के सूत्र' सहित कई पुस्तकों का लोकार्पण किया गया। समारोह में प्रधानाचार्य अंबालाल शर्मा, विकास दवे, शीला पांडे, प्रकाश तातेड़, टीकमचंद्र बोहरा 'अनजाना', मानस रंजन महापात्रा, डॉ. जयश्री शर्मा,डॉ.शारदा कृष्ण, उपेंद्र अणु, कुसुम अग्रवाल,जगदीश तिवारी सहित कई साहित्यकारों के अलावा सलूंबर के कई बच्चों को भी सम्मानित किया गया। सभी अतिथि साहित्यकारों को सलिला संस्था की ओर से प्रतीक चिह्न भेंट किए गए। मशहूर चित्रकार चांद मोहम्मद घोसी के चित्रों की प्रदर्शनी विशेष आकर्षक रही। उद्घाटन सत्र में रा.उ.मा.वि. सवीना, भींडर के बच्चों ने 'भोपा जी' नाटक प्रस्तुत किया। विभिन्न सत्रों का संचालन शिवनारायण आगाल, चंद्रप्रकाश मंत्री,ज्योत्सना सक्सेना, नरेंद्र मीणा आदि ने किया। रात्रि सत्र में आयोजित कवि सम्मेलन का संचालन शकुंतला सरूपरिया ने किया। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास नई दिल्ली द्वारा बालसाहित्य पर आयोजित सत्र में डॉ. भैरूंलाल गर्ग, विकास दवे, कुसुम अग्रवाल, डॉ. विमला भंडारी व शैलबाला ने अपने विचार रखे। इस सत्र का संचालन मानस रंजन महापात्रा ने किया।

लोक विज्ञान व विज्ञान विषय पर कार्यशाला

चंपावत। बालसाहित्य संस्थान अल्मोड़ा द्वारा उत्तराखंड राज्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद (यू कास्ट) के सहयोग से 18 से 22 अक्टूबर तक आयोजित बच्चों की 5 दिवसीय लेखन कार्यशाला में राजकीय इटर कालेज, राजकीय बालिका इंटर कालेज, यूनिवर्सल कांवेंट स्कूल, एबीसी अल्मा मैटर स्कूल, उदयन इंटरनेशनल स्कूल, माउंट कार्मल स्कूल के 46 बच्चों ने प्रतिभाग किया।

'लोक विज्ञान एवं विज्ञान की अवधारण' विषय पर आयोजित कार्यशाला में बच्चों ने अपने अभिभावकों के सहयोग से सब्जियों के संरक्षण, मक्खन बनाने, जैविक खाद आदि विषयों पर अपनी पुस्तक तैयार की। बच्चों ने अपने अभिभावकों से पूछकर लोककथाएं भी तैयार की। कार्यशाला में प्रत्येक बच्चे ने अपनी हस्तलिखित पुस्तक तैयार की। समापन समारोह के अवसर पर आयोजित बाल कवि सम्मेलन में बच्चों ने विज्ञान पर आधारित स्वरचित कविताएं पढ़ी। समापन समारोह के अवसर पर मुख्य शिक्षा अधिकारी रमेशचंद्र पुरोहित, नगरपालिका चंपावत के चेयरमैन विजय वर्मा, जिला शिक्षा अधिकारी(बेसिक) सत्यनारायण, प्रधानाचार्य डॉ. मनोज जोशी आदि ने बच्चों को संबोधित किया। सर्वश्रेष्ठ प्रतिभागी बतौर रक्षित पांडेय तथा मानस पांडेय का चयन बच्चों ने खुले सत्र में किया। कार्यशाला के स्थानीय संयोजक इंद्रेश लोहनी ने कार्यशाला में सहयोग के लिए सभी का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर बच्चों द्वारा तैयार दीवार का लोकार्पण अतिथियों द्वारा किया गया। राजकीय महाविद्यालय अमोड़ी के हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. सिद्धेश्वरसिंह, बालसाहित्यकार डॉ.बिष्णु शास्त्री 'सरल', सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य डॉ.बी.सी.जोशी, साहित्यकार डॉ. कीर्ति बल्लभ शक्टा, हिमांशु जोशी, डॉ. एम. पी. जोशी, मदन महर आदि ने बच्चों को कई गतिविधियां कराई। समापन समारोह का संचालन राजकीय बालिका इंटर कालेज की कक्षा 8 की छात्रा गरिमा जोशी ने किया। जबकि काव्य गोष्ठी का संचालन ए बी सी अल्मा मैटर की कक्षा 8 की छात्रा रक्षिता पांडेय ने की। काव्य गोष्ठी की अध्यक्षता माउंट कार्मल स्कूल की कक्षा 3 की छात्रा चित्रांशी लोहनी ने किया।

बच्चों से संवाद

पटियाला(पंजाब)। पंजाबी विश्व विद्यालय पटियाला में श्री गुरूनानक देव जी के 550 वे प्रकाश पूर्व को समर्पित पुस्तक मेले में साहित्य अकादमी बालसाहित्य पुरस्कार विजेता डॉ. दर्शनसिंह आशट ने पटियाला के विभिन्न स्कूलों के बच्चों से संवाद करते हुए पठन-पाठन की संस्कृति को बढ़ावा देने की बात कहीं।

लोकार्पण

भीलवाड़ा (राजस्थान)। बालसाहित्यकार एवं पूर्व प्रोफेसर डॉ. भैरूंलाल गर्ग के बचपन के संस्मरणों का संग्रह 'मेरी माटी मेरा देश' का लोकार्पण उनके पैतृक गांव जहां उनका जन्म हुआ था, उस गांव में स्थित रा.उ.मा.सोडार में आयोजित समारोह में हुआ।

जबलपुर (म.प्र)। बालसाहित्यकार श्री राजा चौरसिया के बाल एकांकी 'बात पते की' का लोकापर्ण प्रसिद्ध बालसाहित्यकार व चौरसिया जी के गुरू अश्विनी पाठक जी ने गुरूधाम सिहोरा में आयोजित समारोह में किया।

कहानी:

टिन्नी मछली

● आशा पांडेय

गांव के किनारे एक तालाब था। उस तालाब में बहुत सी मछलियां रहती थी। वे आपस में झुंड बनाकर पानी में इधर-उधर तैरती रहती थी। एक छोटी मछली थी। जिसका नाम टिन्नी था। एक दिन वह अकेली तालाब के किनारे-किनारे पानी में तैर रही थी। तालाब के किनारे एक बहुत बड़ा पेड़ था। जिसकी जड़ें पानी के भीतर तक थीं। पेड़ की जड़ पर बैठे बगुला भगत जी बहुत देर से टिन्नी मछली को पानी में तैरते हुए देख रहे थे। उसे देखकर उनकी लार टपक रही थी।

जब टिन्नी मछली तैरते-तैरते उसके करीब तक आ जाती । तब वह उसे पकड़ने के लिए अपनी गर्दन बढ़ाता। परंतु टिन्नी मछली बड़ी फुर्ती से खुद को बचाती हुई पानी के और भीतर चली जाती। बगुला भगत बस देखते रह जाता।

बहुत देर तक कोशिश करने के बाद भी जब वह टिन्नी को पकड़ नहीं पाया। तब उसने सोचा ऐसे बात नहीं बनेगी। पहले मुझे इस मछली के मन से डर निकालना पड़ेगा। उसे विश्वास दिलाना पड़ेगा कि वह बिना डरे किनारे आकर पानी के ऊपरी सतह पर तैरे।

मछली के डर को निकालने के लिए बगुला भगत ने अपनी आवाज में मिठास भरकर कहा, "टिन्नी बहन! तुम मुझसे दूर-दूर क्यों भाग रही हो? डरो मत। अपना पेट भरने के लिए किसी जीव को मारकर खाना अच्छी बात नहीं है। इसलिए मैंने अब शिकार करना छोड़ दिया है। तुम बिना डरे कुछ ऊपर आ जाओ, जी भरकर तैरो। मेरे नजदीक आओ, हम लोग प्रेम से बोलें-बतियाएं। आज से मैं तुम्हें अपनी बहन मान रहा हूं। तुम भी मुझे अपना भाई मान लो।''

बगुला भगत की बात सुनकर टिन्नी मछली पहले तो धीरे से मुस्कुराई फिर बोली, "ये तो तुम ठीक कह रहे हो भइया! सभी लोग यही कहते हैं कि मिल-जुल कर प्रेम से रहना चाहिए। मेरी मां कहती है कि प्रेम दूर से ही अच्छा होता है क्योंकि प्रेम का धागा बड़ा कच्चा होता है। अधिक नजदीक आने पर वह टूट जाता है। इसलिए तुम पानी के ऊपर रहो और मैं पानी के भीतर। इतना कहकर टिन्नी मछली तैरती और मुस्कुराती हुई पानी के बहुत नीचे तक चली गई। बगुला भगत अपना सा मुंह लेकर तालाब के किनारे बैठे ही रह गया।

- 5 योगीराज शिल्प,
आई जी. बंगला के सामने, कैंप अमरावती, महाराष्ट्र
मोबाइल -9112813033

पुस्तक प्राप्ति

पुस्तक : दीवाली के नन्हे मेहमान
रचनाकार: प्रकाश मनु
संपर्क : 545, सैक्टर 29, फरीदाबाद, हरियाणा - 121008

पुस्तक : बेहद फुलेका
रचनाकार : दलमान डी गुरूंग
संपर्क : जोरथांग रोड, नाम्ची, दक्षिण सिक्किम

पुस्तक : आचरण के बालगीत
रचनाकार : चंद्रभान 'चंद्र'
संपर्क : 504, कल्याणी देवी, खजुरियाबाग, उन्नाव, उ.प्र.- 209801

पुस्तक : देवभूमि उत्तराखंड
रचनाकार : मनोज कामदेव
संपर्क : फ्लैट संख्या 008 गौड़ रैजीडेंसी, चंदरनगर, गाजियाबाद, उ.प्र.

पुस्तक : प्यारी धरती
रचनाकार : राजेंद्र निशेश
संपर्क : 2698, सैक्टर 40 सी, चंडीगढ़- 160036

पत्रिका : बेटी अभिव्यक्ति के शब्द..... (2019)
संपादक : डा. प्रतिभा चौहान
संपर्क : बेटी शैक्षिक उन्नयन समिति स्याल्दे, अल्मोड़ा 263661

पुस्तक : हम बालक लड्डू गोपाल
रचनाकार : नगेंद्र कुमार मेहता 'भव्य'
संपर्क : ए-7 हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, तेलियोंकातालाब, नाथद्वारा,राजसमंद, राजस्थान

पुस्तक : पहाड़ दर्द और सौंदर्य
संपादक : ललित शौर्य
संपर्क : ग्राम/पोस्ट- मुवानी, पिथौरागढ़, उत्तराखंड - 262572

पत्रिका : सुवर्णा 2019
संपादक : डॉ. सुषमा सिंह
संपर्क : 8/153/2-डी, न्यू लॉयर्स कालोनी, आगरा, उ.प्र. 282005

पुस्तक : पारसमणी रत्नावली
रचनाकार: रजनी सिंह
संपर्क : रजनी प्रकाशन, रजनी विला, डिबाई, उ.प्र. 203393

पुस्तक : ठुमकते गीत
रचनाकार: ज्योत्सना सक्सेना
प्रकाशक : 10/697 कोवरी पथ, मानसरोवर, जयपुर, राजस्थान 302020

पुस्तक : शिव पार्वती विवाह
रचनाकार: कुबेरसिंह कड़ाकोटी
संपर्क : पारस पुस्तकालय भिकियासैण, अल्मोड़ा

पत्रिका : टू मीडिया
संपादक : ओम प्रकाश
संपर्क : ई-4/323 नंदनगरी, दिल्ली 110093

पुस्तक : बता मेरा मौतनामा
रचनाकार : प्रबोधकुमार गोविल
संपर्क : 53/17, प्रतापनगर,सांगानेर, जयपुर, राजस्थान- 302033

पुस्तक : बबीता का पपीता
रचनाकार: प्रीतवंती मेहरोत्रा
संपर्क : 3/189 प्रेमनगर,दयालबाग, आगरा, उ.प्र. 282005

पुस्तक : आओ कहानी गाएं
रचनाकार : रूद्रप्रकाश 'सरस'
संपर्क : औद्योगिक क्षेत्र, संडीला, हरदोई, उ.प्र. 241127

पुस्तक : बाल कलरव
रचनाकार: डॉ. मधु चतुर्वेदी
संपर्क : 1/173 विजय खंड, गोमतीनगर, लखनऊ (उ.प्र)

पुस्तक : पिंटू बोला मम्मी से
रचनाकार: डॉ.सत्यानंद बडोनी
संपर्क : बी ब्लाक, पी-3-07 कोतवाली , पल्टन बाजार, देहरादून